जून-जुलाई, 2007, मूल्य : 10 रुपए

कलरव
KALRAV

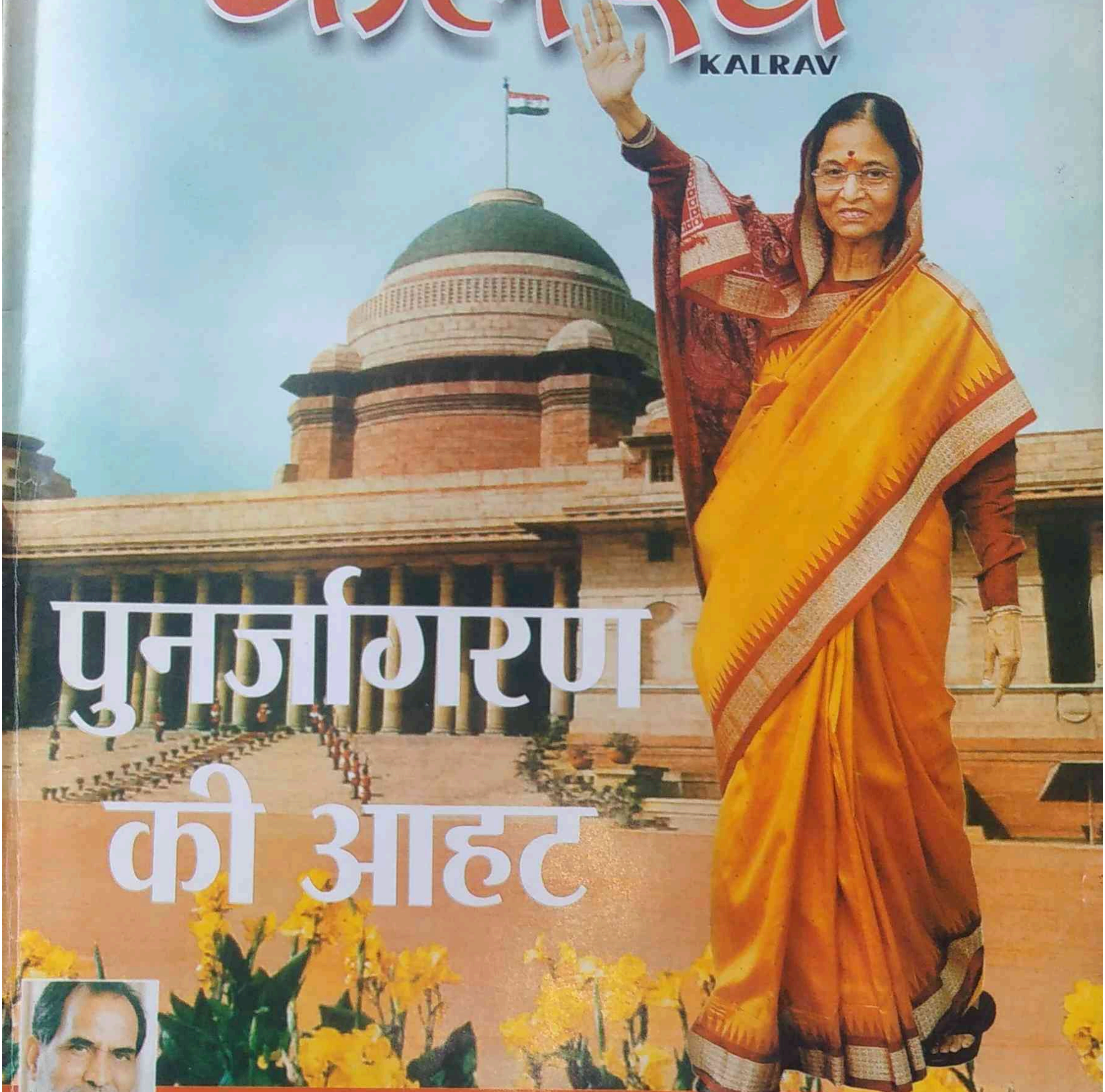

पुनर्जागरण की आहट

राजनीति में सिद्धांत और जीवन में दोस्ती का प्रतिमान

श्रद्धांजलि : चंद्रशेखर, पूर्व प्रधानमंत्री

गोरख पांडेय के गीत

मैना

एक दिन राजा मर लें आसमान में ऊड़त मैना
बान्हि के घर लइले मैना ना।
एक रे पिछले जनम के करम
कइली हम सिकार के धरम
राजा कहैं कुंअर से अब तू लेके खेल मैना
देख कितना सुंदर मैना ना।
खेलै लगलें राजकुमार
उनके मन में बसल सिकार
पहिले पांखि कतरि के कहलें अब तू उड़िजामैना
मेहनत कै के उड़िजा माना ना।
पांखि बिना के ऊड़े पाय
कुंअर के मन में गुस्सा आय
तब फिर टांग तोड़ि के कहलें अब तू नाच मैना
दुमकि-दुमकि के नाच मैना ना।
पांव बिना के नाचे पाय
कुंअर गइलें अब बउराय
तब फिर गला दबा के कहलें अब तू गाव मैना
प्रेम से मीठा गाव मैना ना।
मरिके कइसे गावे पाय
कुंअर राजा के बुलवाय-
कहले बड़ा दुष्ट बा एको बाति न माने मैना
सारा खेल बिगाड़ मैना ना।
जबले खून पियल न जाय
तबले कवनो काम न आय
राजा कहें कि सीख कइसे चूसल जाई मैना
कइसे स्वाद बढ़ाई मैना ना।
सूतल रहलीं सपन एक देखलीं
सपन मनभावन हो सखिया,

समझदारों का गीत

हवा का रुख कैसा है हम समझते हैं
हम उसे पीठ क्यों देते हैं, हम समझते हैं
हम समझते हैं खून का मतलब
पैसे की कीमत हम समझते हैं
क्या है पक्ष में विपक्ष में क्या है, हम समझते हैं
हम इतना समझते हैं
कि समझने से डरते हैं और चुप रहते हैं
चुप्पी की मतलब भी हम समझते हैं
बोलते हैं तो सोच-समझकर बोलते हैं हम
हम बोलने की आजादी का
मतलब समझते हैं
टुटपुंजिया नौकरियों के लिए
आजादी बेचने का मतलब हम समझते हैं
मगर हम क्या कर सकते हैं
अगर बेरोजगारी अन्याय से
तेज दर से बढ़ रही हो
हम आजादी और बेरोजगारी दोनों के
खतरे समझते हैं
हम खतरों से बाल-बाल बच जाते हैं
हम समझते हैं
हम क्यों बच जाते हैं, यह भी हम समझते हैं
हम ईश्वर से दुखी रहते हैं अगर वह
सिर्फ कल्पना नहीं है
हम सरकार से दुखी रहते हैं
कि समझते क्यों नहीं
हम जनता से दुखी रहते हैं
कि भेड़ियाधसान होती है
हम सारी दुनिया के दुख से दुखी रहते हैं
हम समझते हैं
मगर हम कितना दुखी रहते हैं यह भी
हम समझते हैं
यहां विरोध ही वाजिब कदम है
हम समझते हैं
हम कदम-कदम पर समझौता करते हैं
हम समझते हैं
हम समझौते के लिए तर्क गढ़ते हैं
हम तर्क को गोलमटोल भाषा में
पेश करते हैं, समझते हैं
हम इस गोलमटोल भाषा का तर्क भी
समझते हैं
वैसे हम अपने को किसी से कम
नहीं समझते हैं
हम स्याह को सफेद और
सफेद को स्याह कर सकते हैं
हम चाय की प्यालियों में
तूफान खड़ा कर सकते हैं
करने को तो हम क्रांति भी कर सकते हैं
अगर सरकार कमजोर हो
और जनता समझदार
लेकिन हम समझते हैं
कि हम कुछ नहीं कर सकते हैं
हम क्यों नहीं कुछ कर सकते हैं
यह भी हम समझते हैं।

सपना

फूटलि किरनिया पुरुब असमनवा
उजर घर आंगन हो सखिया,
अंखिया के नीरवा भइल खेत सोनवा
त खेत भइलें आपन हो सखिया,
गोसयां के लठिया मुरइया अस तुरली
भगवलीं महाजन हो सखिया,
केहू नाही ऊंच-नीच केहू के ना भय
नाही केहू बा भयान हो सखिया,
मेहनति माटी चारों ओर चमकवली
ढहल इनरासन हो सखिया,
बइरी पइसवा के रजवा मेटवलीं
मिलल मोर साजन हो सखिया।

बात बने

बात बेबात बनाओ तो कोई बात बने।
सीधी बातों में न आओ तो कोई बात बने॥
ये फलसफा ये निगाहें डुबकियां गहरी।
जमीं पर लौट न पाओ तो कोई बात बने॥
देता है फाड़कर छप्पर तो अगर देता है।
पहले एक छप्पर उठाओ तो कोई बात बने॥
नौकरी में ही दी जा सकती है लड़की लेकिन।
थोड़ा ऊपर से कमाओ तो कोई बात बने॥
दूध में पानी मिलाते हो कोई बात नहीं।
पानी में दूध मिलाओ तो कोई बात बने॥
हां कभी कुछ नहीं बदला है नहीं बदलेगा।
रंग गिरगिट का छुपाओ तो कोई बात बने॥
ये तो गद्दार हैं मजलूमों को भड़काते हैं।
फिर इमरजेंसी लगाओ तो कोई बात बने॥
तुम मुहब्बत की लाटरी हो मेरी सरकार।
खुल मेरे नाम पर जाओ तो कोई बात बने॥
(स्वर्ग से विदाई से
साभार)

RNI-UPHIN/2006/18176

कलरव

जून-जुलाई, 2007, वर्ष : 1, अंक : 10

संपादक
तड़ित कुमार

प्रबंध संपादक
उदय नारायण राय

उप संपादक
रुचिर कुमार, संध्या शुक्ला

साज-सज्जा
राधेश्याम 'राज'

संपादकीय सलाहकार मंडल
डा. दिनेश प्रसाद मिश्र
गिरिजा शुक्ला
अनिल तिवारी
प्रीति उपाध्याय
त्रिलोकी राय
अनुराधा गुप्ता

कानूनी सलाहकार
इंदु प्रकाश सिंह, इलाहाबाद उच्च न्यायालय/त्रिपुरारी राय, अधिवक्ता, उच्चतम न्यायालय (उपरोक्त सभी पद अवैतनिक हैं)

प्रसार व्यवस्थापक
शिवेंद्र

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक श्रीमती शोभा तिवारी द्वारा अक्षर भारत लिमिटेड सी-9, सेक्टर-3, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर (उ.प्र.) से मुद्रित तथा 93 ए, अरावली अपार्टमेंट, सेक्टर-52, नोएडा, गौतमबुद्धनगर (उ.प्र.) से प्रकाशित।

फोन
0120-2585546, 9810645159
Email : kalarvms@rediffmail.com

पत्रिका में प्रकाशित लेख से संपादक/कलरव की सहमति आवश्यक नहीं है।
पत्रिका में छपी सामग्री को लेकर किसी तरह के विवाद का निपटारा माननीय उच्च न्यायालय इलाहाबाद में ही किया जा सकेगा।

सदस्यता शुल्क

एक प्रति	10.00 रु.
वार्षिक	100.00 रु.
पांच साल	500.00 रु.
आजीवन	5000.00 रु.

विदेश में

वार्षिक	100 डालर
आजीवन	5000 डालर

इस अंक में — **पृष्ठ**

गोरख पांडे के गीत 2
मैना ◆ समझदारों का गीत ◆ सपना ◆ बात बने
पाठकों के पत्र 4
संपादकीय 5
पार्टियों के लिए सबक
कवर स्टोरी 6
प्रतिभा पहली महिला राष्ट्रपति
आजादी के साठ वर्ष : 12वां राष्ट्रपति चुनाव 9
इतना उछालो कि कीचड़ कुछ लगा रह जाए 10
श्रद्धांजलि : चंद्रशेखर (पूर्व राष्ट्रपति) 12
चंद्रशेखर का निधन 13
मेरी जेल डायरी 14
चंदशेखर पर फीचर 17-18
मुख्य लेख 19
अंतरिक्ष में बड़ी सफलता
पहल 23
पहला शिकार होंगे पेंग्विन
मुख्य लेख 26
भारतीय राजनीति को दिशा देता दलित चेतना का नया स्वर
हाशिये का हस्तक्षेप 27
मायावती के जीत के अन्य अर्थ 28
विशेष लेख 30
बागी सिपाही या महान स्वतंत्रता सेनानी
कहानी 33
अतीत बाधा

आपकी बात

हमारे आस-पास बहुत सारी ऐसी बातें होती रहती हैं जिनका न सिर्फ सामाजिक बल्कि राष्ट्रीय महत्व भी होता है। कई लोग ऐसे कार्यों में लगे रहते हैं जो किसी अन्य के लिए प्रेरणा के स्रोत हो सकते हैं। किसी खास घटना पर कुछ लोगों के विचार बहुत सार्थक होते हैं जिनके माध्यम से किसी खास और बड़ी समस्या को हल करने की दिशा में बढ़ा जा सकता है। हम चाहते हैं कि अब आप अपने संकोच त्यागें, जो कुछ भी आपको अच्छा लगता हो, हमें बताएं। यह न सोचें कि वह कितना अच्छा बन पड़ेगा। इसे औरों को तय करने के लिए छोड़ दें। हमें उम्मीद है कि यह जिम्मेदारी आप सभी अवश्य वहन करेंगे। हम आपके विचारों को प्रकाशित करेंगे।

अच्छी शुरुआत, इसे जारी रखें

मैं कलरव का नियमित पाठक हूं। मैं पत्रिका के संपादक को धन्यवाद देना चाहूंगा कि उन्होंने ग्लोबल वार्मिंग के बढ़ रहे खतरे को जानकर इस पर अपना ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने इसे अपनी पत्रिका में मुख्य रूप से स्थान दिया। यह काबिलेतारीफ है कि आपने ग्लोबल वार्मिंग के खतरे को समझते हुए इसके बारे में अन्य लोगों को भी समझाने का प्रयास कर रहे हैं। यह बहुत आवश्यक है क्योंकि लोग इस विषय को जानते तो हैं कि यह हमारे लिए और हमारे पर्यावरण के लिए खतरनाक तो है पर इसके रोकथाम के विषय में नहीं सोचते हैं। अब आप द्वारा की गयी शुरुआत हो सकता है कि लोगों पर असर दिखाए। लेकिन आप अपने इस कदम को कायम रखना क्योंकि आप द्वारा बताए गए तरीके ही हमें यह बताएंगे कि हम प्रकृति की रक्षा में क्या सहयोग कर सकते हैं। साथ ही साथ आपका यह कदम उन पर भी असर पहुंचाने में सफल होगा जो शायद ही कभी इस धरती के बारे में सोचते होंगे। बस आपसे अनुरोध है कि आप इस कदम पर कायम रहना।

-धनुर्धर, इलाहाबाद

मुठभेड़ के पीछे का सच

गुजरात में हाल ही में सोहराबुद्दीन और उसकी पत्नी कौसर बी की फर्जी मुठभेड़ में हत्या कर दी गयी। इस कार्य में भारतीय पुलिस सेवा के तीन वरिष्ठ अधिकारियों का हाथ था। सोहराबुद्दीन को इसलिए मारा गया कि उस पर यह इल्जाम था कि वह गुजरात के मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी को मारने की साजिश रच रहा था। लेकिन यह तो लगभग सभी को पता लग गया है कि आखिर कौन किसके खिलाफ साजिश रच रहा था। यह भारतीय नागरिकों के मानव अधिकारों की हत्या का एक महत्वपूर्ण मामला था। आखिर इस बात का ध्यान कौन रखेगा। साथ ही इस घटना को उजागर करने में मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण रही। उसके ही प्रयासों के कारण आज असल असली अपराधी जेल में गया। साथ ही अब इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि आखिर इस घटना में और कौन-कौन लोग शामिल हैं इसका पता भी चल जाएगा। साथ ही इस घटना से हो सकता है कि कई और घटनाएं भी सामने आ जाएं जो अब तक शायद लोगों पता भी नहीं होगी। अब मीडिया ने तो अपना काम कर दिया बस अब न्यायालय को अपना काम करना है।

-लक्ष्मण सिंह, बरेली, उप्र

एक्जिट पोल की सच्चाइयां

हाल ही में उत्तर प्रदेश चुनाव संपन्न हुए। जिस पर लगभग सभी लोगों की नजर थी। इस चुनाव के लिए भी चैनलों अपनी तरफ से तैयारी की थी। इसके लिए कई चैनल एक्जिट पोल भी करवाया था। लेकिन लगभग सभी चैनलों के पोल के रिजल्ट यही बता रहे थे कि मायावती की पार्टी उत्तर प्रदेश की बड़ी पार्टी बनेगी लेकिन किसी भी पार्टी को स्पष्ट बहुमत के आसार नहीं हैं। सभी चैनलों के एक्जिट पोल यही बता रहे थे। लेकिन जब चुनाव परिणाम सामने आया तो सभी ने दांतों तले उंगली दबा ली अंत में पता चला कि मायावती की बहुजन समाज पार्टी को स्पष्ट बहुमत मिला है और वो उत्तर प्रदेश में अपने दम पर सरकार बनाने जा रही हैं। इस प्रकार चुनाव परिणाम आने के बाद सभी चैनलों के दावे फीके साबित हुए। अंततः जीत उसी की हुई जो इसका असली हकदार था। लेकिन चैनलों द्वारा कराए जाने वाले यह पोल किस आधार पर कराए जाते हैं यह सोचने का प्रश्न है। आखिर यह मात्र एक तुक्का होता है या इसके पीछे भी कोई तर्क होता है, यह पता करना आवश्यक है।

-राकेश कुमार तिवारी, मुंबई, महाराष्ट्र

विवादों से बचना होगा

अतीत में व्यवस्था बनाने वालों ने मंदिरों में कुछ लोगों का प्रवेश वर्जित कर रखा था। यह व्यवस्था बहुत पहले बनाई गई थी। तब से लेकर अब तक काफी समय बीत चुका है। हालात भी काफी बदल गए हैं लेकिन पुरानी व्यवस्था अभी भी बदस्तूर जारी है। यह व्यवस्था नए-नए विवादों का कारण बनती रहती है। समाचार पत्रों के माध्यम से अभी यह पता चला कि केरल स्थित एक मंदिर में एक मंत्री के पुत्र के मंदिर में प्रवेश को लेकर बखेड़ा खड़ा हो गया है। कुछ लोगों ने मंदिर का शुद्धिकरण किया है। कई लोग ऐसे हैं जो मंदिर में अनधिकृत प्रवेश और फिर शुद्धिकरण दोनों को ही गलत बता रहे हैं। यह ऐसे मसले हैं जो कई बार बड़ी समस्याओं को जन्म दे देते हैं। इसके बावजूद ऐसा नहीं लगता कि इनके स्थायी हल के बारे में कोई काम किया जा रहा हो। यह भी नहीं कहा जा सकता कि इसके बाद इस तरह का विवाद फिर नहीं आएगा। इसके पहले भी इस तरह की समस्याएं उत्पन्न होती रही हैं। हमारा देश इक्कीसवीं सदी में जा रहा है। लोग अंतरिक्ष पर रहने की कोशिश कर रहे हैं। ऐसे में व्यक्तियों और संस्थाओं को बड़े हृदय वाला होना चाहिए और छोटे-छोटे विवादों में उलझे बिना व्यापक विकास की ओर ध्यान देना चाहिए। जब हम लोग छोटे-छोटे मसलों में ही उलझे रहेंगे तो बड़े कामों के बारे में कब सोचेंगे और करेंगे। अब समय आ गया है कि इस तरह के विवादों से बचा जाए।

-राम निवास गौतम, वाराणसी, उप्र

इच्छा शक्ति की जरूरत

अगर आपके अंदर इच्छा शक्ति हो तो किसी भी समस्या को आसानी से सुलझाया जा सकता है। इसके विपरीत अगर मंशा यह हो कि इस काम को नहीं होने देना है तो वह उलझ ही जाएगा। इसे दिल्ली और उत्तर प्रदेश के बीच बसों के संचालन को लेकर उठे विवाद के माध्यम से समझा जा सकता है। कुछ माह पहले उत्तर प्रदेश सरकार के अड़ियल रवैये की वजह से दोनों राज्यों की बसों का एक दूसरे प्रदेश में आना-जाना रुक गया था। इससे यात्रियों को काफी असुविधा हो रही थी। अब उत्तर प्रदेश में नई सरकार बनते ही यह विवाद तत्काल हल हो गया और यात्रियों को काफी सहूलियत हो गई। जितनी जल्दी यह समस्या हल हो गई उससे यही लगता है कि इसमें कोई बड़ा पेंच नहीं था। सिर्फ मानसिकता का सवाल था। उत्तर प्रदेश में सरकार बनते ही यह समस्या चुटकियों में हल हो गई। अभी यह भी कहा जा रहा है कि इस तरह की अन्य समस्याओं को भी जल्द से जल्द सुलझा लिया जाएगा। दरअसल जब आम लोगों का हित ध्यान में होगा तो ऐसे विवाद नहीं होंगे और अगर सामने आएंगे तो उन्हें तत्काल हल कर लिया जाएगा। इसके विपरीत जब बिना वजह अपनी चौधराहट दिखाने की कोशिश होगी तो इस तरह की समस्याएं उत्पन्न होती रहेंगी। ताजा विवाद हल कर लेने के लिए दिल्ली और उत्तर प्रदेश दोनों ही सरकारों को साधुवाद दिया जाना चाहिए।

-अलबेल यादव, दिल्ली

पार्टियों के लिए सबक

महिलाओं को आरक्षण भले ही न मिल पा रहा हो पर जिस तरह देश के सबसे बड़े व सम्मानित पद पर प्रतिभा पाटील का चुनाव हुआ है उसे लोकतंत्र के लिहाज से एक बड़ी उपलब्धि के रूप में देखा जाना चाहिए। प्रतिभा भले ही इस पद के लिए पहली पसंद न रही हों, उनके खिलाफ चाहे जितना विष वमन किया गया हो लेकिन सच्चाई यही है आजादी के इतने वर्षों बाद जाकर पहली बार कोई महिला राष्ट्रपति बन पाई है। यह ध्यान देने की बात है कि उन्हें इस पद के लिए शपथ दिलाने वाले मुख्य न्यायाधीश एक दलित हैं। यह भी अपने आप में एक बड़ी बात है। क्या इस तरह के संकेतों को पुनर्जागरण की आहट के रूप में देखा जा सकता है। उत्तर प्रदेश के चुनाव परिणाम उन राजनीतिक दलों के लिए सबक हो सकते हैं जो लोगों की भावनाओं के साथ खिलवाड़ करते रहते हैं और यह समझते रहते हैं कि वह जो कुछ भी कर रहे हैं वही सही है। उनके लिए भी जो हमेशा तिकड़कबाजी करते रहते हैं और जिनका आम जनता के सुख-दुख से कोई लेना-देना नहीं होता। इसके अलावा अब उन्हें तो कम से कम अपना भ्रम दूर कर लेना चाहिए जिन्हें यह मुगालता रहता है वह जो बताएंगे उसे ही लोग सही मानेंगे। उन्हीं के लिए यह भी सबक है कि अब भी अगर वे यह मानकर चलते हैं कि उनमें सरकारें बनाने और बिगाड़ने की ताकत है तो वे भ्रम में जी रहे हैं। सच्चाई को झुठलाया नहीं जा सकता और उसे स्वीकार करना किसी के लिए भी मजबूरी है। इस चुनाव के बाद यह बात साफ तौर पर उभर कर सामने आई है। यह अपने आप में कितना बड़ा सवाल है कि इस चुनाव में बहुत सारे लोग यह कह रहे थे कि मायावती की बसपा आगे चल रही है, वे यह भी जानते थे कि यह संख्या बहुत अधिक हो सकती है लेकिन पूर्वाग्रह ऐसा कि इसे कहना नहीं चाहते थे। उन्हें यह डर भी सता रहा था कि कहीं उनके ऐसा कह देने अथवा स्वीकार कर लेने से वाकई बसपा को ज्यादा सीटें न मिल जाएं। वे यह भूल रहे थे कि उनके चाहने न चाहने से जनता अपना फैसला नहीं करती। जनता अपना दिमाग पहले से ही बना चुकी होती है। उसमें से कुछ लोगों को तो तोड़ा-फोड़ा जा सकता है पर उन बहुतायत लोगों को नहीं मोड़ा जा सकता जिन्होंने मन बना लिया हो कि उन्हें क्या करना है।

उत्तर प्रदेश के मतदाता बहुत पहले से यह तय कर चुके थे कि उन्हें क्या करना है और किसे जिताना है। ऐसा इसलिए कि जिस तरह का शासन राज्य में चल रहा था उससे हर कोई आजिज आ चुका था। उसे बदलना ही था और यह काम बहुत अच्छी तरह से उत्तर प्रदेश की जनता ने किया। ऐसा कर कई सवालों का जवाब भी मतदाता ने दिया है। दरअसल अगर देखा जाए तो यह पता चलता है कि जनता को हमेशा से ऐसे नायकों की जरूरत पड़ती थी जो उनके दुखों का अंत कर सके। ऐसा नहीं भी हो तो कम से कम यह लगना ही चाहिए वह यह काम कर सकता है। अगर उत्तर प्रदेश के हालात को देखा जाए तो यह पूरी तरह तय हो गया था कि वहां कुशासन है और किसी के जानमाल की सुरक्षा की कोई गारंटी नहीं है। इसके खिलाफ अपने को बड़ी और राष्ट्रीय पार्टियां होने का दावा करने वाले दल व उनके नेता चुप्पी साधे हुए थे। बहुत सारे तो अलग-अलग कारणों से उस सरकार के समर्थक ही थे और एक मात्र बची विपक्षी पार्टी के बारे में यह बात साफ तौर पर सामने थी कि वह भी सत्ताधारी पार्टी की पिछलग्गू बनी हुई है। ऐसे में जो पार्टी आम लोगों के हितों को चैंपियन करने का जज्बा दिखा रही थी वह बसपा ही थी। अपराधियों के खिलाफ उसकी सरकार की ओर से पूर्व में छेड़ा गया अभियान भी लोगों के सामने था। रही बात रणनीति की तो उसने भी काम किया पर उसका तब कोई मतलब नहीं रह जाता अगर परिस्थितियां पहले जैसी होतीं। रणनीति भी तभी काम करती है जब उसके पूरक के रूप में अन्य कारक महत्वपूर्ण हों। बसपा के पास अपना एक वोट बैंक पहले से मौजूद है जिसके किसी प्रकार की टूटन नहीं है। इसके अलावा खुद मायावती की अपनी राजनीति के तरीके भी भिन्न हैं। वह अन्य पार्टियों व नेताओं की तरह घिसे-पिटे नारों के बल पर राजनीति नहीं करतीं। वे ऐसी कोई घोषणा भी नहीं करतीं जिनको पूरा कर पाना असंभव हो। शायद यही कारण है कि जब अन्य पार्टियां चुनावों में घोषणा पत्र जारी कर बड़े-बड़े वायदे करती हैं, बसपा नेता न घोषणा पत्र जारी करती हैं न लोकलुभावन बातें करती हैं। वे उन लोगों को इज्जत और अधिकार दिलाने का सपना जरूर दिखाती हैं जो अभी तक इससे वंचित रह गए हैं। यह उनकी बड़ी पूंजी थी जिसमें दलितों के साथ ब्राह्मणों को साथ लेकर चलने की ताजा रणनीति ने अहम भूमिका अदा किया।

अगर हम भूले नहीं हैं तो हमें यह याद रखना चाहिए कि बहुत पहले कांग्रेस के साथ भी यही स्थिति थी जब दलित और ब्राह्मण साथ मिल कर उसे वोट दिया करते थे और वह सत्ता तक पहुंच जाया करती थी। फिलहाल यह दोनों ही उसके पास नहीं हैं और उसकी हालत बदतर हो गई है। कुछ साल पहले जब भारतीय जनता पार्टी उत्तर प्रदेश में और बाद में केंद्र में सत्ता तक पहुंची थी तब उसे भी आम मतदाता के बहुतायत हिस्से ने स्वीकार किया था। उसमें मंदिर और हिंदुत्व के मुद्दे ने भी रणनीतिक तौर पर काम किया था। जब वह इससे दूर होती गई तो लोग भी उससे छिटकते गए और वह सत्ता से दूर होती गई। यहां यह बात भी देखने की है कि सिर्फ जनता से जुड़े मुद्दे उठाना ही पर्याप्त नहीं होता। अगर ऐसा होता तो मंडल मसीहा के रूप में जाने जाने वाले वीपी सिंह के नेतृत्व में मुलायम से अलग हुए राजबब्बर द्वारा गरीब किसानों की जमीन जबरन हथियाने का मुद्दा भी क्लिक कर सकता। पर अगर ऐसा नहीं हुआ तो इसके पीछे उन लोगों की अपनी राजनीति भी एक कारण थी। यह भी ध्यान देने की बात है कि तमाम विरोध के बावजूद संभवतः वह मुद्दा बन नहीं सका और बहुत सारे लोग यही मानकर चल रहे थे कि यह केवल दादरी तक सीमित है। इसके अलावा वीपी सिंह द्वारा किया जा रहा मुलायम विरोध की तुलना में सुश्री मायावती द्वारा किए जा रहे विरोध में लोग ज्यादा दम देख रहे थे। वैसे भी जो ताकत बसपा में थी वह वीपी के जनमोर्चा में तो नहीं ही थी। इसीलिए लोगों को बसपा और मायावती में आशा नजर आई और मतदाताओं ने उन्हें सत्ता सौंप दी। यहां यह जरूर याद रखना होगा कि मतदाता हर किसी के साथ वैसा करता है जैसा मुलायम सिंह के साथ किया है। इसलिए अगर सत्ता में बने रहना है तो उसके हितों को कभी भुलाना नहीं चाहिए।

■ आशीष कुमार

प्रतिभा पहली महिला राष्ट्रपति

इस चुनाव को जिन लोगों ने मजाक बनाने का अथक प्रयास किया वे शायद इसे बहुत हल्के में ले रहे थे। इसीलिए अगर कुछ लोग यह कह रहे थे कि एक महिला का राष्ट्रपति बनना जिन लोगों को नहीं सुहा रहा है वे महिला विरोधी हैं। इसके विपरीत कई लोग ऐसे भी थे जो इसे पुनर्जागरण के रूप में देख रहे थे। तमाम किंतु परंतु के बावजूद यह स्वीकार किया ही जाना चाहिए यह किसी पुनर्जागरण से कम नहीं है कि एक महिला देश के सर्वोच्च पद पर आसीन हो सकी है। ऐसा नहीं है कि इससे पहले इस तरह की कोशिशें नहीं हुईं। पहले भी चुनाव में महिला को उम्मीदवार बनाया गया पर तब शायद देश यह स्वीकार करने की स्थिति में नहीं था। अब जाकर यह अवसर आया है तो इसका स्वागत किया जाना चाहिए। आखिर वही हुआ जिसका अनुमान लगाया जा रहा था। आरोपों-प्रत्यारोपों के बीच कटुतापूर्ण माहौल में हुए राष्ट्रपति पद के चुनाव में यूपीए-वाम दलों की उम्मीदवार प्रतिभा पाटिल ने राजग समर्थित निर्दलीय उम्मीदवार भैरोसिंह शेखावत को तीन लाख से भी ज्यादा वोटों से हराकर पहली महिला राष्ट्रपति बन गईं। उपराष्ट्रपति शेखावत ने अपनी हार स्वीकार करते हुए अपने पद से इस्तीफा दे दिया है।

छह घंटे तक चली मतगणना के बाद लोकसभा के महासचिव और राष्ट्रपति चुनाव के चुनाव अधिकारी पीडीटी अचारी ने बताया कि इस चुनाव के कुल 9 लाख 69 हजार 422 वैध वोटों में से प्रतिभा पाटील को छह लाख 38 हजार 116 वोट मिले जबकि शेखावत को तीन लाख 31 हजार 306 वोट आए। संसद में प्रतिभा को 442 और शेखावत को 232 वोट मिले। राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में प्रतिभा पाटील को 2489 और शेखावत को 1217 वोट मिले।

शेखावत के पक्ष में राजग ने अंतरात्मा की आवाज के आधार पर वोट देने की अपील की थी मगर इसका उसे कोई लाभ होना तो दूर रहा नुकसान ही हुआ। यूपीए उम्मीदवार प्रतिभा पाटिल ने भाजपा शासित गुजरात और छत्तीसगढ़ में क्रास वोटिंग के जरिए दस हजार से ज्यादा मूल्य के वोट हासिल किए। यही नहीं, भाजपा शासित बिहार, उड़ीसा नागालैंड और तमिलनाडु में शेखावत को अनुमान से कम वोट मिले। पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा, केरल और मिजोरम में वे अपना खाता भी नहीं खोल पाए।

नतीजों से खुश पाटील ने कहा यह जीत भारत के लोगों के सिद्धांतों की जीत है। यूपीए अध्यक्ष सोनिया गांधी ने कहा कि यह बहुत खुशी की बात है कि आजादी के बाद पहली बार कोई महिला राष्ट्रपति बनी हैं। मैं उनको समर्थन देने के लिए वामपंथी दलों और गठबंधन के अन्य नेताओं का धन्यवाद करती हूं। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने जीत पर टिप्पणी करते हुए कहा कि यह विभाजन की राजनीति के खिलाफ एकता और धर्मनिरपेक्षता की बुनियादें मजबूत करने के पक्ष में जन प्रतिनिधियों का मत है।

नतीजे घोषित होने के तुरंत बाद प्रधानमंत्री और यूपीए अध्यक्ष दोनों ने पाटील के साउथ एवेन्यू स्थित उनके निवास पर जाकर उन्हें बधाई दी। अपने उम्मीदवार की जीत से उत्साहित कांग्रेस ने कहा कि यह खुशी की बात है कि पिछले कुछ दिनों से चलाए जा रहे दुर्भाग्यपूर्ण प्रचार का निर्वाचक मंडल ने करारा जवाब दिया। कांग्रेस प्रवक्ता अभिषेक सिंघवी ने राजग के अंतरात्मा की आवाज पर शेखावत के पक्ष में वोट देने की अपील पर व्यंग्य करते हुए कहा कि हमें इस बात की भी खुशी है कि मतदाताओं ने अपनी अंतरात्मा को टटोला है और जिसका परिणाम पाटील की जीत के रूप सामने आया है। लोकसभा अध्यक्ष सोमनाथ चटर्जी ने प्रतिभा पाटील को उनकी शानदार जीत के लिए बधाई दी और कहा कि राष्ट्रपति के तौर पर उनके गौरवपूर्ण कार्यकाल के लिए शुभकामनाएं। पाटील की जीत की खबर आते ही भारी संख्या में लोग सोनिया गांधी के निवास 10 जनपथ पर उमड़ पड़े। लोग बैंड बाजे के साथ दोपहर के बाद जमा होने शुरू हुए और रात तक वहां जश्न का माहौल बना रहा। सोनिया के निवास पर एकत्र लोगों में महिलाएं भी शामिल थी जो पहली बार किसी महिला के राष्ट्रपति बनने पर नाच-गा कर अपनी खुशी का इजहार कर रही थीं। इस अवसर पर लोगों ने खूब पटाखे चलाए और आतिशबाजी छोड़ी। हल्की बूंदाबांदी के बावजूद लोग कतार बनाकर सोनिया से मिलने का इंतजार में वहां देर तक खड़े रहे।

कई राज्यों में राजग के वोटों में सेंध लगाने वाली यूपीए उम्मीदवार ने हरियाणा और जम्मू कश्मीर में शायद कुछ वोट गंवाए भी। अपने राज्य महाराष्ट्र में उनका प्रदर्शन काफी प्रभावशाली रहा। वहां 281 में से 223 वोट मिले। राजग के एक प्रमुख घटक शिवसेना ने भी उनके पक्ष में वोट नहीं डाले। शेखावत को केवल 58 वोटों पर संतोष करना पड़ा। गुजरात, मध्यप्रदेश और असम में प्रतिभा पाटील को भाजपा और कुछ और दलों के असंतुष्टों के अप्रत्याशित वोट मिले। मध्यप्रदेश में ग्यारह विधायकों ने शेखावत को वोट तो दिया मगर उन्हें अवैध कराने के लिए मतपत्र पर जय श्रीराम और हरिओम आदि लिख दिए जिसका सीधा लाभ प्रतिभा पाटील को हुआ। यह भी अनुमान लगाया जा रहा है कि गुजरात में मोदी विरोधी भाजपा विधायकों ने और असम में असम गण परिषद के 15 असंतुष्ट विधायकों ने प्रतिभा के पक्ष में मतदान किया।

मायके से ससुराल तक जश्न

21 जुलाई, उत्तरी महाराष्ट्र के जलगांव जिले के छोटे से गांव नादगांव में दीपावली ने मानो चार महीने पहले ही दस्तक दे दी। प्रतिभा पाटील के राष्ट्रपति पद का चुनाव जीतने की खबर जैसे ही यहां उनके पैतृक गांव पहुंची, पटाखों, ढोल, नगाड़ों और नारेबाजी के शोर के बीच सब कुछ

मानो ठहर सा गया। लोग सड़कों पर आकर जश्न मना रहे थे। उधर, इस जीत की खबर मिलने से पाटील के ससुराल छोटी लोसल के बाशिंदे भी झूम उठे। जलगांव की सभी सड़कों, चौराहों पर उत्सव जैसे माहौल दिख रहा था। लोग ढोल, नगाड़ों की धुनों पर नाचते हुए एक-दूसरे को बधाई दे रहे थे और मिठाइयां बांट रहे थे। प्रतिभा यहां की जिस बालिका माध्यमिक विद्यालय से पढ़ी थीं वहां छात्राओं ने एक रंगोली बनाई और पारंपरिक लेजिम पर नृत्य किया। प्रतिभा की जीत का जश्न मनाने बड़ी संख्या में लोग, मित्र और रिश्तेदार उनके घर के बाहर जमा हुए। इससे पहले मुक्ताई नगर से एक जुलूस भी निकाला गया था। समाचार चैनलों पर प्रतिभा की जीत की खबर दिखाए जाने के साथ ही नासिक शहर में लोगों और नेताओं ने जश्न में भाग लिया। नासिक में रह रहे जलगांव के लोगों ने भी पटाखे छोड़े और एक-दूसरे पर रंग लगाकर प्रतिभा की जीत का जश्न मनाया।

इस जश्न में कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं के साथ प्रतिभा का समर्थन करने वाले राकांपा, शिवसेना और माकपा व कई दूसरी पार्टियां भी शामिल हुईं। धूले और नंबूरदार से मिली खबरों के मुताबिक, लोगों ने पटाखे छुड़ाकर और मिठाइयां बांटकर प्रतिभा की जीत का जश्न मनाया। बांधवाड़ तहसील के नादगांव में जैसे ही राष्ट्रपति भवन जा रही हैं तो लोगों ने जमकर पटाखे फोड़े और मिठाइयां बांटी। प्रतिभा की जीत का जश्न मनाने के लिए गांववाले पारंपरिक वेशभूषा धारण किए हुए थे। एक ग्रामीण ने बताया, जश्न रात को भी जारी रहेगा। यह मौका न सिर्फ हमारे लिए बल्कि पूरे राज्य के लिए गर्व का है। उधर, छोटी लोसल में भी जश्न का माहौल था। छोटी लोसल की सरपंच प्रेम कंवर ने फोन पर कहा, भगवान ने हमारी दुआ-अर्ज सुन ली है। हमारी बहूजी ने शेखावत जी को पछाड़ दिया है। छोटी लोसल के बाशिंदे गांव की चौपाल पर चंग की धुन पर बधाई गान गा रहे हैं। राष्ट्रपति पद के लिए यूपीए की उम्मीदवार राजस्थान की राज्यपाल प्रतिभा पाटील का विवाह सीकर जिले के छोटी लोसल गांव के देवी सिंह शेखावत से सात जुलाई 1965 को हुआ था। छोटी लोसल की बारहवीं कक्षा में पढ़ने वाली 17 साल की मरूधर कंवर शेखावत ने फोन पर बातचीत करते हुए कहा, प्रतिभा जी का चुनाव जीतना तय था, उन्हें जीतने से कोई रोक नहीं सकता। मैं अपनी तीनों बहनों और मां के साथ प्रतिभा जी के जीतने की खुशी में सुबह से ही नाच रही हूं। हम सभी खुशियां मना रहे हैं। जब उनसे पूछा कि प्रतिभा जी के राष्ट्रपति बनने से आपको क्या फायदा होगा, उन्होंने कहा कि पूरे देश के साथ-साथ छोटी लोसल का विकास भी तेजी होगा क्योंकि एक महिला देश के सर्वोच्च पद पर पहली बार पहुंचेगी। छोटी लोसल का आधारभूत विकास होगा। सभी सुविधाएं मिलेंगी, सड़क, पानी, बिजली, चिकित्सा की सुविधाएं बढ़ेंगी। आज हम सभी गांव वाले खुश हैं।

राजनीतिक सफर

देश की प्रथम नागरिक, तीनों सेनाओं की प्रमुख और भारत की पहली महिला राष्ट्रपति प्रतिभा देवीसिंह पाटील। आजादी की साठवीं सालगिरह पर निर्वाचक मंडल ने आम भारतीय महिला की छवि की संवाहक, शिक्षित, शालीन और राजकाज की अनुभवी प्रतिभा पाटील को राष्ट्रपति चुनकर देश की आधी आबादी का सम्मान बढ़ाया है।

भारतीय महिलाएं जिस तरह से परंपराओं की बेड़ियां तोड़ते हुए नित नए आकाश छू रही है उसी तरह से प्रतिभा पाटील अपने दल के दिग्गजों को दरकिनार और विपक्ष के आरोपों और अटकलों को नजरअंदाज कर भारतीय गणतंत्र के सर्वोच्च शिखर पर पहुंची हैं।

तकरीबन आठ बरस के वनवास के बाद 2004 में राजस्थान की राज्यपाल बनकर राजनीति के गलियारों में लौटी महाराष्ट्र के छोटे से शहर की वकील प्रतिभा पाटील देश की राजनीति के इतिहास का महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। एक सामाजिक कार्यकर्त्ता और एक अधिवक्ता के रूप में अपने सार्वजनिक जीवन की शुरूआत करने वाली प्रतिभा पाटील 1962 में पहली बार महाराष्ट्र विधानसभा के लिए चुनी गईं। उसके बाद से लेकर 1985 तक लगातार विधायक चुनी जाती रहीं। इस दौरान राज्य में उपमंत्री, केबीनेटमंत्री और विपक्ष के नेता की भूमिका को बखूबी अंजाम देती रही। राष्ट्रपति पद के संभावित उम्मीदवारों की तलाश के शुरू में प्रतिभा पाटील के नाम का जिक्र तक नहीं था। इस दौड़ में वरिष्ठ नेता और केंद्रीय गृह मंत्री शिवराज पाटिल का नाम सबसे ऊपर था। पर नेहरू-गांधी परिवार में अटूट निष्ठा रखने वाली प्रतिभा पाटील के सितारे कुछ और ही कह रहे थे। उन्होंने न सिर्फ पाटील बल्कि सुशील कुमार शिंदे, कर्ण सिंह, अर्जुन सिंह और मोतीलाल वोरा जैसे कांग्रेस के कई दिग्गजों को दरकिनार कर रायसीना हिल्स की तरफ मजबूत ढंग से पेशकदमी शुरू कर दी।

महाराष्ट्र के जलगांव में 19 दिसंबर 1934 को जन्मीं प्रतिभा ने जलगांव के एम जे कालेज से एमए किया। बाद में मुंबई के ला कालेज से विधि स्नातक की डिग्री हासिल की। डाक्टर देवीसिंह शेखावत के साथ सात जुलाई 1965 को उनका विवाह हुआ। उनका एक पुत्र राजेंद्र सिंह व पुत्री ज्योति राठौर हैं। उनकी खेलों में भी खासी रुचि है। वे अपने कालेज जीवन में टेबिल टेनिस चैंपियन रहीं और इंटर कालेज प्रतियोगिताओं में उन्होंने कई पुरस्कार हासिल किए। 1967 से 1976 तक के बीच वे महाराष्ट्र सरकार में स्वास्थ्य एवं समाज कल्याण उपमंत्र, स्वास्थ्य मंत्री और पुनर्वास मंत्री रहीं। जुलाई 1979 से फरवरी 1980 तक महाराष्ट्र विधानसभा में वे विपक्ष की नेता रहीं और उसके बाद 1985 से 1990 के बीच राज्यसभा की सदस्य रही। 1991 में वे अमरावती से लोकसभा के लिए चुनी गईं और अगले पांच बरस तक दोनों सदनों में विभिन्न कमेटियों के अध्यक्ष और सदस्य के तौर पर महत्वपूर्ण दायित्वों का निर्वाह करती रहीं।

वर्ष 1996 के बाद प्रतिभा पाटील देश के राजनीतिक गलियारों से गायब सी हो गईं। उस समय कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था कि माथे पर बिंदिया और सिर पर हमेशा साड़ी का पल्लू रखने वाली यह महिला एक दिन देश के संवैधानिक इतिहास में एक नया पन्ना जोड़ेगी। प्रतिभा पाटील 2004 में राजस्थान की राज्यपाल बनकर सियासत के गलियारों में वापस लौटी और तीन ही बरस के भीतर उन्होंने देश के संवैधानिक इतिहास में एक नई तारीख लिख डाली।

राजनीति के क्षेत्र में विभिन्न दायित्वों का निर्वाह करने वाली प्रतिभा पाटील महाराष्ट्र में समाज सुधार, महिला सशक्तीकरण, गरीबों के लिए आवास गृह की स्थापना और गरीब बच्चों के लिए स्कूल खुलवाने जैसे कार्यों में बेहद सरगर्मी से हिस्सा लेती रहीं। राजस्थान की राज्यपाल के तौर पर भी उन्होंने खुद को इन सामाजिक दायित्वों से कभी विमुख नहीं किया।

आजादी के साठ वर्ष

12वां राष्ट्रपति चुनाव

आजादी का साठवां साल मनाने जा रहे भारतीय गणतंत्र में 12वें राष्ट्रपति के चुनाव के बाद प्रतिभा पाटील देश की पहली महिला प्रथम नागरिक होंगी। 15 अगस्त 1947 को आजादी हासिल करने के बाद 26 जनवरी 1950 को देश का संविधान लागू हुआ। तीस जनवरी 1950 को डाक्टर राजेंद्र प्रसाद ने देश के पहले राष्ट्रपति के रूप में अपना कार्यभार संभाला। नवनिर्वाचित राष्ट्रपति प्रतिभा पाटील की तरह डाक्टर प्रसाद भी पेशे से वकील थे। वे 13 मई 1962 तक इस पद पर रहे।

उनके बाद डाक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन देश के राष्ट्रपति बने और पांच साल तक इस पद पर रहे। 13 मई 1967 को डाक्टर जाकिर हुसैन के निधन के कारण 24 अगस्त 1969 को वीवी गिरी देश के चौथे राष्ट्रपति चुने गए। उन्होंने इससे पहले तीन मई 1969 से 20 जुलाई 1969 तक कार्यवाहक राष्ट्रपति के रूप में यह पद संभाला। उनके बाद 20 जुलाई से 24 अगस्त 1974 के बीच मोहम्मद हिदायतुल्लाह कार्यवाहक राष्ट्रपति रहे।

डाक्टर फखरुद्दीन अली अहमद 24 अगस्त 1974 को देश के पांचवें राष्ट्रपति बने लेकिन 11 फरवरी 1977 को उनके निधन के कारण बी डी जत्तीको 25 जुलाई तक कार्यवाहक राष्ट्रपति बनाया गया। उनके बाद 25 जुलाई 1977 को नीलम संजीव रेड्डी इस शीर्ष संवैधानिक पद पर आसीन हुए।

25 जुलाई 1982 को ज्ञानी जैल सिंह देश के सातवें राष्ट्रपति बने। उनके बाद 1987 में आर वेंकटरामन ने यह पद संभाला और 1992 तक इस पद पर रहे। डाक्टर शंकर दयाल शर्मा ने 25 जुलाई 1992 को नवें राष्ट्रपति के रूप में देश की बागडोर संभाली और अगले पांच वर्ष तक इस पद आसीन रहे। देश का दसवां राष्ट्रपति बनने का गौरव राजनयिक और राजनेता के आर नारायणन को मिला। वे 25 जुलाई 1997 से 2002 तक देश के प्रथम नागरिक रहे। मिसाइल मैन और 2020 तक देश को विकसित देशों की श्रेणी में लाने का सपना देखने वाले बच्चों के चहेते राष्ट्रपति डाक्टर एपीजे अब्दुल कलाम ने 25 जुलाई 2002 को यह प्रतिष्ठित पद संभाला। पांच साल का उनका कार्यकाल खत्म होने के बाद प्रतिभा पाटील देश की बारहवीं राष्ट्रपति चुनी गई हैं। देश के संवैधानिक इतिहास में पहला मौका है जब राजपथ से गुजरने वाली 26 जनवरी की परेड में देश की तीनों सेनाएं अपने सुप्रीम कमांडर के तौर पर एक महिला को सलामी पेश करेंगी।

यह लेख उस समय लिखा गया था जब राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव प्रक्रिया चल रही थी। उस समय क्या-क्या किया जा रहा था, इसे भी जान लेना जरूरी है। इससे यह पता चलता है कि हमारे देश की विपक्षी पार्टी क्या लोकतंत्र चाहती है और इस सम्माननीय संस्थान को क्या बना देना चाहती है। इस लेख को इसलिए भी प्रस्तुत किया जा रहा है ताकि सनद रहे। -संपादक

इतना उछालो कि कीचड़ कुछ लगा रह जाए

■ प्रभाष जोशी

चलिए, भाजपा प्रवक्ता जावडेकर की ही बात मान लें। उनका कहना है कि वकील मनोहर लाल शर्मा ने प्रतिभा पाटिल का राष्ट्रपति चुनाव के लिए किया गया नामांकन खारिज करने की जो याचिका सुप्रीम कोर्ट में दाखिल की थी वह कांग्रेस के समर्थन से की थी। उसने यह कारनामा इसलिए करवाया कि अपने उम्मीदवार के खिलाफ चल रहे भाजपा के अभियान को पूरा किया जा सके। इस याचिका को तो खारिज होना ही था।

भले ही भाजपा वाले ही कह रहे हों कि वकील शर्मा के पीछे चंडीगढ़ के एक भाजपाई नेता ही थे पूछना चाहिए कि जब भाजपा ने आरोपों का ऐसा पहाड़ लगा दिया हो और उनके प्रचार में मीडिया का इतना अच्छा इस्तेमाल किया हो तो कांग्रेस सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा क्यों न खटखटाए? इससे कम से कम ये सारे आरोप एक बार न्यायिक जांच में आ जाते हैं और जब देश की सबसे बड़ी अदालत उन पर टिप्पणी कर देती है तो उनकी असलियत में कोई शक नहीं रहता। कांग्रेस ने केवल चुनावी हथकंडे के नाते भी याचिका का इस्तेमाल किया हो तो इसमें गलत क्या है? आखिर ये सारे आरोप नीचे की अदालत से होते हुए जाते तो वहीं। इससे कम से कम साफ हो गया कि राष्ट्रपति पद की यूपीए उम्मीदवार प्रतिभा पाटिल के खिलाफ कोई मामला नहीं बनता। और भाजपा वाले जो कर रहे हैं वह सचमुच ही झूठा, बेबुनियाद और वाहियात राजनीतिक प्रचार है।

आप क्या समझते हैं कि भाजपा वालों ने सोचा नहीं होगा, न्यायालय में दस्तक क्यों न दे। बात-बात पर न्यायालय और राष्ट्रपति भवन दौड़ने वाले महारथियों ने जान-बूझ कर प्रचार से बदनाम करके मात देने का रास्ता अपनाया क्योंकि न तो उनका इरादा देश को एक दागी राष्ट्रपति से बचाने का है न वे कुछ भी करके प्रतिभा पाटिल को राष्ट्रपति भवन पहुंचने से रोक सकते हैं। उनका सारा प्रचार प्रतिभा पाटिल और उनके राष्ट्रपति बनने की प्रक्रिया को इतनी बदनाम और अविश्वसनीय बना देना है कि राष्ट्रपति के नाते वे जो भी करें उसका इस्तेमाल अपनी राजनीति में कर सकें। वे चाहते हैं कि देश यह माने कि सोनिया गांधी ने एक भ्रष्ट, और स्वतंत्र बुद्धि विवेक से विहीन महिला को इसलिए राष्ट्रपति बनवाया है कि उससे वे असंवैधानिक और अलोकतांत्रिक काम करवा सकें जैसे कि इंदिरा गांधी ने करवाए थे। जिन्हें भाजपा सबसे असंवैधानिक और अलोकतांत्रिक मानती है उनमें सबसे आगे का काम है- सोनिया गांधी का प्रधानमंत्री बनना। जैसे सोनिया गांधी बिना किसी जनादेश और पर्याप्त राजनीतिक समर्थन के सिर्फ राष्ट्रपति के बनाए प्रधानमंत्री बन सकती हों। अपनी संवैधानिक, लोकतांत्रिक और राजनीतिक व्यवस्था के बारे में ऐसे गहरे और उच्च विचार संघ परिवार की बेटी भाजपा के ही हो सकते हैं।

अपने जल्दी कराए लोकसभा चुनाव में सन 2004 में अचानक पराजित होकर सत्ता से बाहर हुई भाजपा पहले दिन से नकार में जी रही है। जो हमें हरा और हटा कर आया है उसके राज को हम नहीं मानेंगे। इसलिए उसे अनाधिकार और अवैध बताने की कोशिश में वह तीन साल से लगी हुई है। बजट तक का बहिष्कार उसने किया है। लोकतंत्र में एक जिम्मेदार विपक्ष को राज चलाने में जो करना चाहिए उसे करने की जिम्मेदारी से वह लगातार छिटकती आ रही है। जैसे ऐसा करना एक राज को स्वीकार करना हो जो उससे धोखे या गफलत से छीन लिया गया हो सोनिया गांधी और मनमोहन सिंह को नकारने और उनके होने तक को जैसे अवैध और झूठा बताने की कोशिश करते रहना इसी रवैये का नतीजा है। अब भाजपा को लग रहा है कि प्रतिभा पाटिल राष्ट्रपति होंगी तो 2009 के चुनाव के बाद सोनिया गांधी उनसे वह सब करवा सकती हैं जो संवैधानिक रूप से होने नहीं दिया जाना चाहिए। इसलिए उनके राष्ट्रपति होने को ही अवैध, अनैतिक और अलोकतांत्रिक बनाने की कोशिश की जा रही है। राजनेता और राजनीति विरोधी हमारा पूंजीपरस्त मीडिया इस अभियान में भाजपा के साथ हो गया है। प्रतिभा पाटील को ऐसा भ्रष्ट और निपट अयोग्य नेता बनाने की मुहिम चल रही है जो राष्ट्रपति तो क्या मेयर तक नहीं बनाया जा सकता।

तो फिर देश के सर्वोच्च न्यायालय ने क्यों कहा कि हम उनके नामांकन को खारिज नहीं कर सकते? क्या सिर्फ इसलिए कि एक बार चुनाव की प्रक्रिया शुरू हो जाए तो वह उसमें दखल नहीं दे सकता? नहीं। वकील शर्मा की अर्जी खारिज करते हुए सर्वोच्च न्यायालय ने कहा-क्या हम आपके इस आरोप को मान कर चलें कि प्रतिभा पाटील दिवालिया हैं? आपको हमें सामग्री के आधार पर संतुष्ट करना पड़ेगा। आपको हमें बताना होगा कि जो तमाम आरोप लगाए गए हैं उनके लिए यही व्यक्ति जिम्मेदार है। कोई सामग्री नहीं है, कोई दस्तावेज नहीं है। हम नहीं जानते कि जिस सामग्री पर आप भरोसा कर रहे हैं वह सही है या गलत। बताओ ऐसा क्या आधार है कि हम कार्रवाई करें? बिना किसी आधार और सामग्री के हम कार्रवाई कर सकते हैं? किसी अदालत ने उन्हें दिवालिया घोषित किया है? अगर किसी सक्षम अदालत ने उन्हें दिवालिया करार नहीं दिया तो हम उनके नामांकन को कैसे खारिज कर सकते हैं?

क्या वकील शर्मा के पास वह पुस्तिका नहीं थी जो खोजी पत्रकार अरुण शौरी ने बड़ी प्रमाणिकता से तैयार की है और जिसे भाजपा ने प्रकाशित किया है? क्या उनके पास वे सभी खबरें व लेख नहीं थे जो इतने दिनों से अखबारों में छप रहे हैं और टीवी चैनल दिखा रहे हैं? बिलकुल थे। बल्कि आप पाएंगे कि उनके आधार पर ही यह अर्जी बनाई गई थी। वही संत मुक्ता बाई शकर कारखाना और वही प्रतिभा महिला सरकारी बैंक जिनकी स्थापना

प्रतिभा पाटील ने की थी और समय-समय पर जिनके विभिन्न पदों पर वे बताई जाती हैं। इसी कारखाने ने 17.50 करोड़ का कर्ज वापस नहीं चुकाया इसलिए प्रतिभा पाटील दिवालिया हैं और इसी बैंक में उनने और उनके रिश्तेदारों ने घोटाले किए बताए जाते हैं इसलिए प्रतिभा पाटील भ्रष्टाचारी हैं लेकिन किसी अदालत ने कोई फैसला नहीं दिया है न किसी मामले में प्रतिभा पाटील के खिलाफ़ कोई टिप्पणी की है अब तक जो भी लगाए गए हैं सब आरोप हैं। और कौन लगा रहे हैं वे अरुण शौरी जिनने मुंबई की सरकारी होटल कौड़ी के दाम बेच दी। और जंग लगे लौहपुरुष लालकृष्ण आडवाणी जिनकी रथ यात्रा ने सैकड़ों लोगों को मरवा दिया और ऐतिहासिक बाबरी मस्जिद गिरवा दी।

और भी होंगे महाराष्ट्र के कांग्रेसी और भाजपाई। शकर कारखाने और बैंक के मुलाजिम और यूनियन वाले। उनके सारे आरोप भाजपा के लिए सही हैं। भाजपा के आरोपों के लिए किसी अदालत में साबित होने की जरूरत नहीं है। वे स्वयंसिद्ध होते हैं क्योंकि आरोप लगाने वाले अरुण शौरी और लालकृष्ण आडवाणी से तो राजा हरिश्चंद्र सर्टिफिकेट लेते हैं। लेकिन भाजपा प्रवक्ता वकील रवि शंकर प्रसाद हर बार पहले बताते हैं कि ये हमने नहीं मीडिया ने लगाए हैं। अब क्या तो बेचारे प्रसाद और क्या उनका खुलासा। एक रजनी पाटील के पति कांग्रेसी पदाधिकारी की हत्या हो गई। हत्या के आरोपियों में प्रतिभा पाटील के भाई का नाम लिखवाने के लिए रजनी नीचे से लेकर तो सुप्रीम कोर्ट तक गई लेकिन कोई तैयार नहीं हुआ। लेकिन भाजपा के सांसद चंदन मित्रा और भाजपा की मदद से सांसद हुए तरलोचन सिंह रजनी को लेकर ढींढसा के घर प्रेस कांफ्रेंस करवाने गए दिल्ली में। ढींढसा कौन? भाजपा की सहयोगी पार्टी अकाली दल के एनडीए में रहे भूतपूर्व मंत्री। यहां आकर प्रतिभा पाटील के भाई का नाम हत्यारों में लिखवाने में बेचारी रजनी सफल हुई।

अब क्या करें इन लोगों की प्रमाणिकता और विश्वसनीयता का। लेकिन यही सारे आरोप घूम-घूम कर भाजपाई प्रेरणा से लग रहे हैं। यही सुप्रीम कोर्ट के सामने वकील शर्मा की अर्जी में थे। यही बड़े खोजी और प्रमाणिक भूतपूर्व पत्रकार अरुण शौरी की रचित पुस्तिका में हैं। अपन ने तो यह पत्रिका नहीं पढ़ी। जैसे खूब कीचड़ उछालो तो कुछ तो लग ही जाता है वैसे कीचड़ पढ़ो तो दिमाग और याददाश्त में कहीं न कहीं तो रह ही जाता है। इसलिए अपन कीचड़ नहीं पढ़ते खासकर भाजपाई कीचड़। लेकिन अरुण शौरी की खोजी पत्रकारिता का बहुत नजदीकी अंदाज अपने को है।

कहते हैं उनने अब्दुल रहमान अंतुले के भ्रष्टाचार का बड़ा भंडाफोड़ किया था। उससे वे बड़े खोजी पत्रकार हो गए। कुछ समय बाद एक पत्रिका ने इंडियन एक्सप्रेस के चेयरमैन रामनाथ गोयनका से अंतुले कहानी के बारे में पूछा। उनने कहा, वह सौ प्रतिशत मेरी खबर थी। अरुण शौरी इससे बहुत नाराज हुए। लेकिन सच्चाई यह थी कि महाराष्ट्र के कांग्रेसी नेताओं ने ही रामनाथ जी को लाकर खबर दी और उन्हीं से उनने सामग्री और दस्तावेज इकट्ठे किए थे। लिखने के लिए यह सब सामग्री रामनाथ जी ने अरुण शौरी को दी। अरुण शौरी ने कातिब का काम किया। गणेश जी ने महाभारत लिखी थी। ऐसे लिखने को गणेश जी का काम तो नहीं कह सकते। हां गोबर गणेश कह सकते हैं। क्योंकि सालों मुकदमा चलने के बाद अंतुले को न्यायालय ने ससम्मान बरी कर दिया। तब पत्रकार सईद नकवी ने मुझसे पूछा, क्या अरुण शौरी अब मैगसेसे लौटा देंगे? तो ऐसी है अरुण शौरी की खोजी पत्रकारिता और उसी का नमूना शायद वह पुस्तिका होगी जो प्रतिभा पाटील के भ्रष्टाचार पर उनने लिखी है। गनीमत यही है कि रवि शंकर प्रसाद नहीं कहते कि यह पुस्तिका मशहूर खोजी पत्रकार अरुण शौरी ने लिखी है किसी भाजपाई ने नहीं। लेकिन सच है कि मीडिया ने प्रतिभा पाटील के भ्रष्टाचार की खबरें अपनी स्वतंत्र खोजबीन और जांच-पड़ताल के बिना उछाली। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि उसके उम्मीदवार तो एपीजे अब्दुल कलाम थे जो गंदी राजनीति में कभी पड़े नहीं थे। उनको तो यूपीए के कारण दूसरा कार्यकाल मिला नहीं। उनकी जगह प्रतिभा पाटील को खड़ा कर दिया जिनकी कोई हैसियत नहीं। ऐसा कहने और लिखने वाले यह भूल जाते हैं कि एनडीए के उम्मीदवार बनाए जाने के पहले अब्दुल कलाम की क्या हैसियत थी? प्रतिभा पाटील तो फिर भी इतनी बार विधायक और सांसद रहीं और मंत्री रहने के बाद अभी राज्यपाल थीं। अब्दुल कलाम का तो कोई सार्वजनिक जीवन था ही नहीं। लेकिन अपने बाजार और पूंजी प्रिय मीडिया के लिए अब यही तो राष्ट्रपति के लिए सबसे बड़ी योग्यता है। बहरहाल, प्रतिभा पाटील का राजनेता होना मीडिया और भाजपा की नजर में उनका सबसे बड़ा अपराध है और इसलिए उन पर कोई भी कैसा भी आरोप लगाए वह सही होना चाहिए।

दिक्कत यही है कि भाजपा भी आखिर एक राजनीतिक पार्टी है और कालिख की कोठरी में रहती है। किसी भी राजनीतिक पार्टी की तरह उसमें भी कोई कम भ्रष्टाचारी नहीं हैं और केंद्र और राज्यों में उसकी सरकारें भी उतनी ही भ्रष्टाचारी हैं और रही हैं जितनी दूसरी पार्टियों की। जिन आरोपों पर वह प्रतिभा पाटील को दागी घोषित कर रही है वैसे तो उसके किसी भी नेता के बारे में ढूढ़ कर निकाले जा सकते हैं। कांग्रेस वाले यह शुभ कार्य भैरोसिंह शेखावत पर कर ही रहे हैं। और ऐसे ही मामला चलता रहा तो अभी हम और कीचड़ चारों तरफ से उछलते और लगते देखेंगे। लोग कह रहे हैं यह क्या राष्ट्रपति चुनाव को भी नगर पालिका और पंचायत के स्तर पर उतार दिया है। लेकिन यही अब हमारा असली और सच्चा राजनीतिक स्तर है तो राष्ट्रपति चुनाव में भी यही प्रकट होगा। हम क्यों चाहते हैं कि नीचे चाहे जो भी हो पर राष्ट्रपति चुनाव में गरिमा और मर्यादा होनी चाहिए। नीचे जो होता है वो ऊपर तो जाता ही है।

और इसलिए पाखंड छोड़ कर हमें मान लेना चाहिए कि अभी हमारा स्तर और गिरेगा क्योंकि हम चुनाव में मिली राजनीतिक हार को बिना मलाल के स्वीकार नहीं करना चाहते। प्रतिभा पाटील को लेकर भाजपा जो कर रही है वह 2004 के नतीजे को नकारने का ही परिणाम है। चूंकि प्रतिभा पाटील को कोई चमत्कार ही राष्ट्रपति होने से रोक सकता है इसलिए भाजपा का यह नकार आगे भी चलेगा। हम उम्मीद कर सकते हैं कि राष्ट्रपति भवन का बहिष्कार होगा और जिन-जिन मामलों और मौकों पर राष्ट्रपति की भूमिका होगी वहां-वहां गड़बड़ होगी। हम अगर अपनी राजनीति और राजनेताओं को इतनी सम्मानहीन, मर्यादाविहीन और अविश्वसनीय बनाएंगे तो लोग किसी दिन चाहेंगे कि यह व्यवस्था खत्म हो। तब क्या हम लोकतंत्र की जगह तानाशाही लाएंगे? जिस लोकतंत्र में राजनीति को इतनी अवांछनीय और गर्हित बनाने की लगातार कोशिश होती हो वहां लोकतंत्र कैसे टिकेगा? प्रतिभा पाटील राष्ट्रपति की उम्मीदवार ही नहीं हैं वे तो राष्ट्रपति होने भी वाली हैं। और अपने देश की पहली महिला राष्ट्रपति भी होंगी। उन पर इतना कीचड़ उछलेगा तो क्या कुछ लगा नहीं रह जाएगा? क्या वह कीचड़ खुद हम पर नहीं होगा? थोड़ा सोचिए।

साभार जनसत्ता

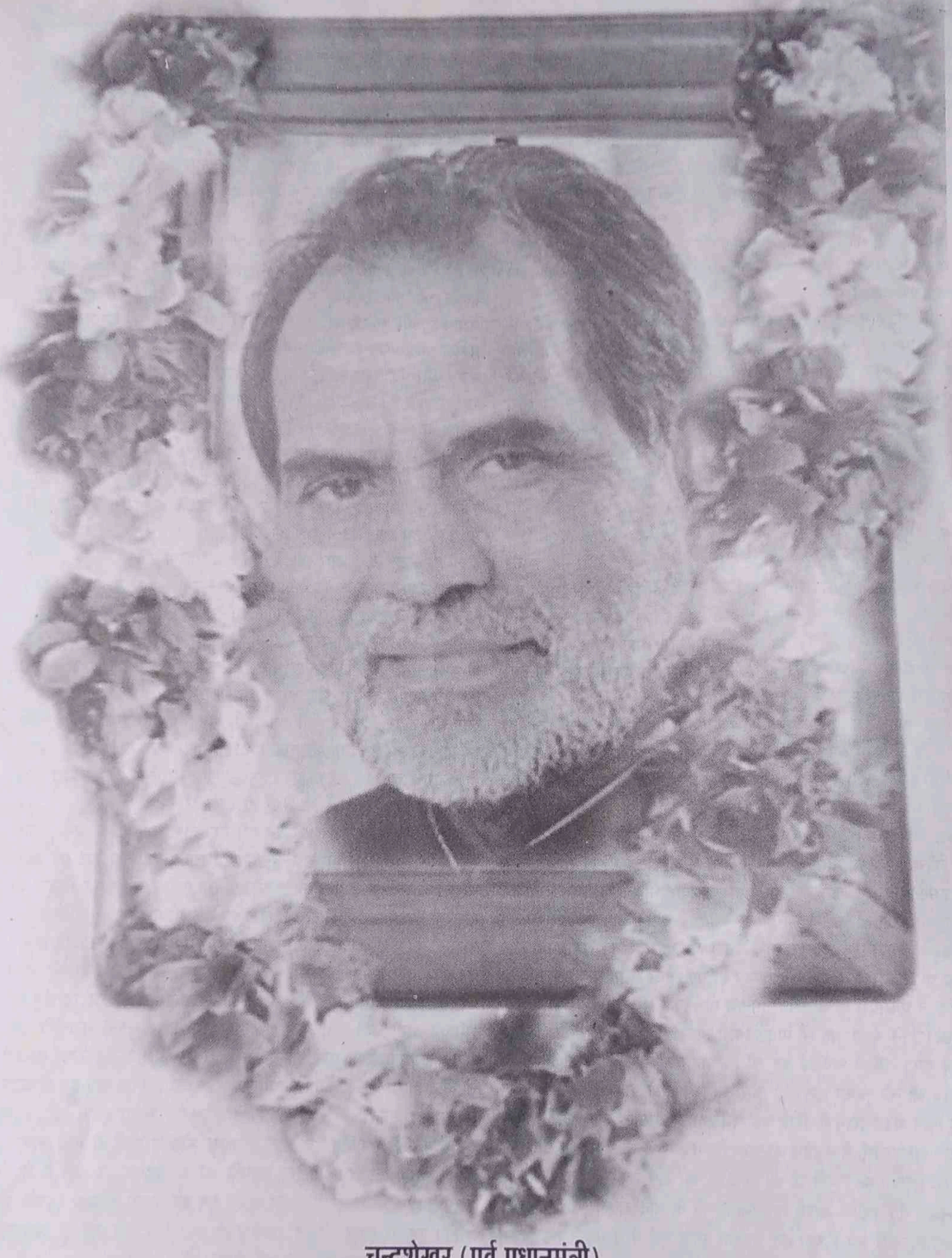

चन्द्रशेखर (पूर्व प्रधानमंत्री)

1927–2007

सिद्धांतों के साथ कभी नहीं किया समझौता

चन्द्रशेखर का निधन

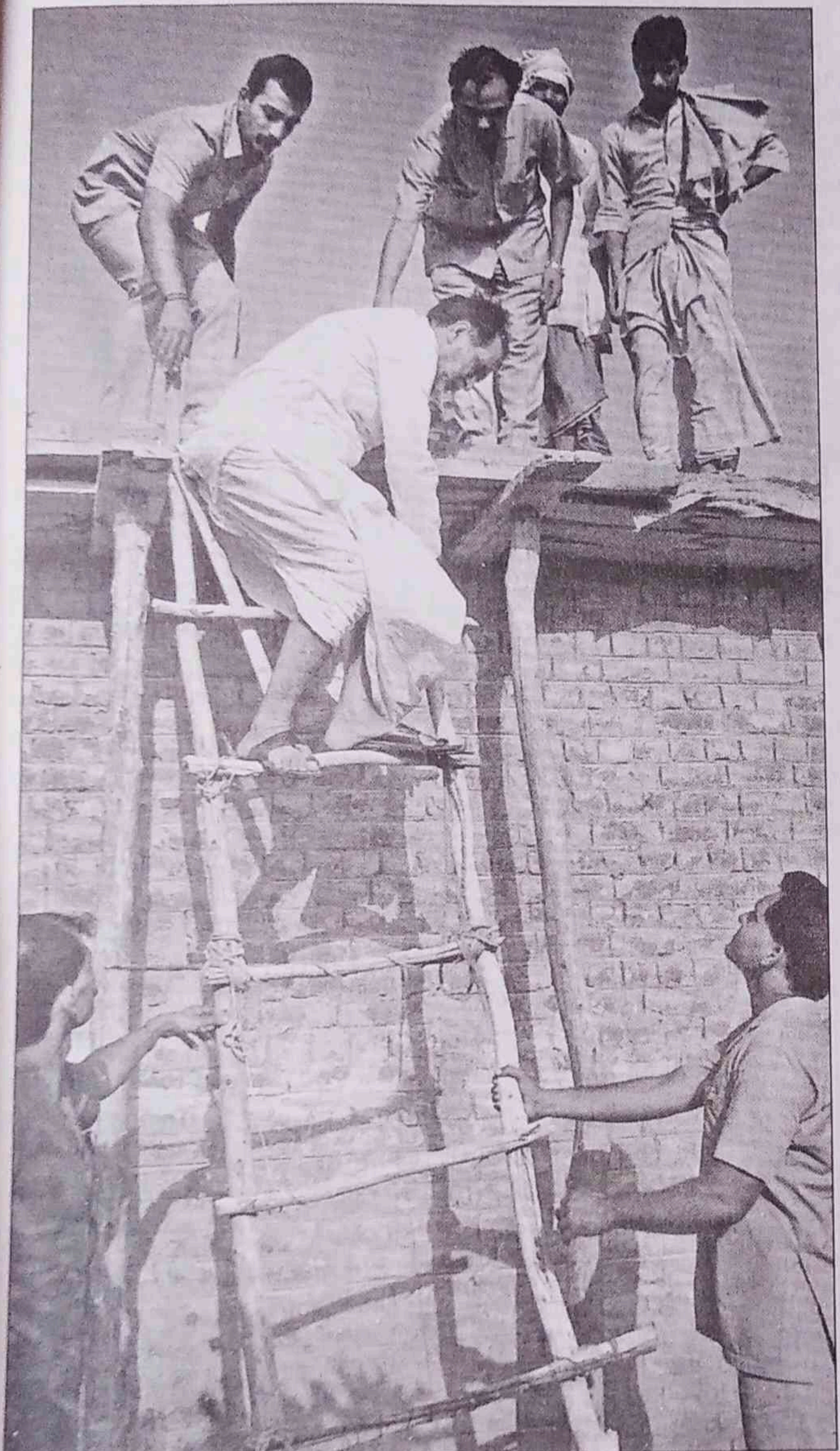

पूर्व प्रधानमंत्री और समाजवादी नेता चन्द्रशेखर का लम्बी बीमारी के बाद 8 जुलाई को दिल्ली के अपोलो अस्पताल में निधन हो गया। वे कैंसर से पीड़ित थे और लगभग पिछले तीन माह से अपोलो अस्पताल में इनका इलाज चल रहा था। पिछले एक सप्ताह से वे आईसीयू में थे। उन्हें वेंटिलेटर पर रखा गया था। जहां उन्होंने आखिरी सांस ली। चन्द्रशेखर 80 वर्ष के थे। इनका जन्म 1 जुलाई 1927 को उत्तर प्रदेश के बलिया जिले में इब्राहमपट्टी नामक गांव में एक किसान परिवार में हुआ था। वे बलिया से ही हमेशा चुनाव लड़ते थे। वर्ष 1951 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से राजनीति शास्त्र में एम ए किया। छात्र जीवन में ही वे राजनीति से जुड़ गए।

समाजवादी नेता आचार्य नरेंद्र देव के शिष्य माने जाने वाले चन्द्रशेखर राजनीति में कांग्रेस के काफी करीब रहे, हालांकि अपने समाजवादी सिद्धांतों के साथ कभी इन्होंने कभी समझौता नहीं किया। कांग्रेस में रहते हुए उन्होंने संजय गांधी की युवामण्डली में स्थान बनाया। उन्हें युवा तुर्क के नाम से भी जाना जाता था।

इमरजेंसी के दौरान कांग्रेस में रहते हुए उन्होंने इंदिरा गांधी के खिलाफ आवाज बुलन्द की और जेल भी गए। बाद में उन्होंने कांग्रेस छोड़ जयप्रकाश नारायण का दामन थाम लिया। वे कांग्रेस के उन पांच सांसदों में से थे जिन्हें इंदिरा गांधी का विरोध करने कारण इमरजेन्सी के दौरान जेल जाना पड़ा। यहीं से उनकी समाजवादी राजनीति की शुरूआत हुई। वे एक तेज तर्रार नेता थे और आखिरी समय तक वे अपनी समाजवादी राजनीति पर कायम रहे।

1962-1967 तक वे राज्यसभा के लिए चुने गए। लोकसभा में बलिया का प्रतिनिधित्व करते रहे। इमरजेंसी के दौरान इंदिरा गांधी से मुखालफत की और कांग्रेस छोड़ दी। बाद में वे जयप्रकाश नारायण के करीब आए और जनता पार्टी में शामिल हो गए। 1977 से 1988 के दौरान जनता पार्टी के अध्यक्ष रहे। 1990 में कांग्रेस के समर्थन में देश के 11वें प्रधानमंत्री बने। उनका कार्यकाल नवंबर 1990 से जून 1991 तक चला। 1995 में वे सर्वश्रेष्ठ सांसद चुने गए।

मेरी जेल डायरी से

18 अक्टूबर 1975

हर समय अभिनेता बनने की अभिलाषा मनुष्य से सब कुछ कराती है। उसे क्या से क्या बना देती है। यदि आज नायक है ते कल विदूषक बनने पर भी तैयार हो जाता है। क्योंकि उसमें एक अतृप्त पिपासा होती है जो उसे दर्शक नहीं बनने देती। विदूषक ही सही पर उसे कुछ आडम्बर चाहिए ताकि लोगों की दृष्टि में वह केवल पर्यवेक्षक नहीं पांच सवारों में शामिल दिखाई दे। इनकी मनः स्थिति अत्यंत दयनीय होती है। कदाचित यह एक मानसिक विकार है जो उन्हें वास्तविकता से दूर रखता है। उनका अपना निराला संसार है। एक दूसरे के गुणों का बखान कर अपनी इस वासना का वे इस प्रकार शिकार हो जाते हैं कि मान अपमान की बात भूल वे किसी प्रकार उस परिधि में बने रहना चाहते हैं जिसमें इस प्रकार के दिखावे का अवसर मिलता रहे। परमुखापेक्षी होने में भी उन्हें अपनी सामर्थ्य का आभास होता है, क्योंकि उनका अपना तो कोई व्यक्तित्व होता नहीं। अपनी इस निर्बलता को ही वे जीवन की सार्थकता समझते हैं। ऐसे बेचारों की हर सांस किसी और के संकेत पर चलती है। कठपुतली जैसे वे हावभाव बदलते हैं यदि संचालिका शक्ति के हाथ उनके जीवन तन्तु को हल्का सा भी झटका लगे। बन्दरों के नाच में तो मदारी के इशारे के बाद भी कभी कभी बन्दर बन्दरिया मनमानी कर जाते हैं, या तो समझते नहीं या समझकर आदेश को अनसुना कर देते हैं। ऐसा इसलिए कि वे सजीव हैं, दूसरे के संकेत पर पूरी तरह नाचना उनके लिए संभव नहीं। पर कठपुतली तो निर्जीव होती है। जब तक तार खींचे जाते हैं वे उसी ताल पर नाचती रहती हैं।

आज की जो हालत है वह तो कठपुतली के नाच की ही याद दिलाती है। सब कुछ पहले से ही निश्चित केवल तार खींचने की ही देर है। इसमें दर्शक बनने में कितनी सांत्वना है पर यह दृश्य कितना मार्मिक है कितना दुःखांत। क्या इसे मनोरंजन का साधन समझकर दिल बहलाया जा सकता है? चेतन मानव को जड़वत व्यवहार करते देख करुणा के भाव का उद्रेक होता है अथवा वितृष्णा का? कभी कभी तो ऐसा लगता है जैसे इससे एक ऊब हो, घृणा हो। इतना बेबस कैसे हो सकता है मनुष्य?

आज की जो हालत है वह तो कठपुतली के नाच की ही याद दिलाती है। सब कुछ पहले से ही निश्चित केवल तार खींचने की ही देर है। इसमें दर्शक बनने में कितनी सांत्वना है पर यह दृश्य कितना मार्मिक है कितना दुःखांत। क्या इसे मनोरंजन का साधन समझकर दिल बहलाया जा सकता है? चेतन मानव को जड़वत व्यवहार करते देख करुणा के भाव का उद्रेक होता है अथवा वितृष्णा का? कभी कभी तो ऐसा लगता है जैसे इससे एक ऊब हो, घृणा हो। इतना बेबस कैसे हो सकता है मनुष्य? केवल इसीलिए कि वह थोड़े समय अपने को दूसरों के समक्ष समर्थ, क्रियाशील और अधिकार के अधिष्ठाता के रूप में प्रदर्शित करना चाहता है? केवल दूसरों पर, और वह भी अनजान, उपेक्षित, पीड़ित और शोषित लोगों के सामने इस अर्थहीन अभिनय के द्वारा प्रभाव जगाने के लिए? कितनी बड़ी विकृति है, जो आज हमारे राजनीतिक जीवन में कैंसर के समान फैलती जा रही है। हर दूसरे तीसरे दिन आकाशवाणी पर किसी न किसी राजनेता का ऐसा वक्तव्य आता है जिसे सुनकर यही भाव मन में पैदा होता है। प्रारंभिक प्रतिक्रिया तो उपेक्षा की होती है, किन्तु पुराने संबंधों के तंतु इतने शिथिल नहीं हुए हैं कि उनके बारे में सोचा ही न जाए। फिर मन की यह कमजोरी ऐसा सब सोचने को विवश करती है। इन मित्रों से किसी सहयोग या सहायता की अपेक्षा तो नहीं ही है पर क्या इनसे यह भी आशा न की जाए कि इतना भी कोई स्वत्व शेष है? पर सब एक जैसे नहीं कुछ तो संयम भी बरतते हैं। अनर्गल प्रलाप से अपने को बचाए रखें, यह भी कोई कम सफलता नहीं है। अपना पद बचाए रखने के लिए एक दो बार कुछ कह दें तो वह भी क्षम्य है किंतु नित्य प्रति एक ही रट लगाए रहते हैं कुछ लोग, आजकल इनकी चांदी है, रेडियो तो सुनाता ही है, अखबार भी छापने को विवश है। कुछ ऐसे भी हैं जो चुप हैं। उनके लिए मन में एक श्रद्धा जगती है। किसी के बारे में व्यक्तिगत रूप से कुछ कहना तो उचित नहीं पर यहां एकांत में बैठे सबको परखने का अच्छा अवसर है। कुछ अपनी भी परीक्षा होती है। सहनशक्ति कितनी है और साथियों के बारे में समझ कैसी? एक दो लोगों के अतिरिक्त औरों के बारे में मुझे अपनी पूर्व धारणा बदलने की कोई आवश्यकता नहीं जान पड़ी।

नित्य इस जेल के हाते में कोई नया काम करता हूं। आज मछली पालने के लिए जो तालाब बनवाया है उसके किनारे लगे बोगनवेलिया, पाम और सरों के पौधों के लिए, गमले बनवाए। इस तालाब में नीचे चिकने पत्थर स्वच्छ पानी में चमकते रहते हैं। चारों ओर फैली चांदनी और उस पानी में पड़ती पेड़ों और नीले आकाश की छाया कितनी मनोहारी लगती है और उस पानी में तैरती हुई कसाय रंग की मछलियां। आज रात गए इसे देखता रहा। फिर अचानक ऐसा लगा जैसे इस स्थान से कुछ लगाव सा हो गया है। यह भाव आते ही एक उचाट होता है और मन कहां कहां के चक्कर लगाकर फिर लौट आता है उसी उधेड़बुन में, जिससे छुटकारा होता नहीं दिखाई देता। पर आज मैं सोच रहा था कि यहां राजनीति के बारे में व्यर्थ की माथापच्ची बाहर की अपेक्षा कम करता हूं। जीवन के दूसरे पहलुओं पर भी सोचने में बहुत समय बीत जात ा है। चांद और चांदनी को इस तरह मैंने कब देखा था, गिलहरियों की किटकारी और कोयल की कूक, टिटहरी की टेर और तोतों की बोली इस प्रकार ध्यान से शायद मैंने पहले कभी नहीं सुना होगा। इस हाते में टिटहरी के एक जोड़े ने अपना डेरा जमा लिया है। पास आने तक भी निडर घूमते रहते हैं, संध्या की गोधूली में सैकड़ों तोतों की पांत एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष तक उड़ान भरती रहती है, दूर कहीं दुःखनहार गुरुद्वारा से गुरुग्रंथ साहब का पाठ और पास के किसी मंदिर से सस्वर भजन-हरि-किर्तन, साथ में लगी हुई फांसी की कोठरियों से

(सत्त श्री अकाल) की गूंज और रह रह कर अकाली, जनसंघी या नक्सलवादी कैदियों के गगनभेदी नारे, ये सब रात को आठ बजे तक चलते रहते हैं। अकेले रहते हुए भी ऐसा लगता है जैसे प्रकृति और समाज की हर चहल-पहल का प्रत्येक स्पंदन कारा की दिवारों को चीर कर यहां पहुंच जाता है। रात दस बजे के बाद सब कुछ शांत, केवल रह रह कर संत्रियों की ऊंची आवाज और कभी-कभी थोड़ी दूर किसी हाते एक कोठरी में बन्द एक पागल की चिल्लाहट। जब वह चिल्लाता है तो लगता है जैसे मनुष्य नहीं कोई घायल पशु वेदना से चित्कार कर रहा हो। संत्रीयों की आवाज में एक लय है। रात के सन्नाटे में उसे सुनकर मुझे ऐसा लगता है जैसे कोई ऐसा संगीत हो जिसमें मानव की बेबसी की स्वर-लहरी तरंगित होती रहती है, अबाध गति से, और कदाचित अनंतकाल तक यह यों ही गूंजती रहेगी।

9 अगस्त, 1976

रक्षाबंधन और 9 अगस्त। ममत्व, स्नेह, मर्यादा, उत्तरदायित्व, बलिदान, उत्सर्ग और क्रांति का संदेश। बहन ने भाई की कलाई राखी बांधी और सम्मान की रक्षा हेतु सब कुछ न्यौछावर कर देने की प्रेरणा मिली। बापू ने देश को (करो या मरो) का नारा दिया और लाखों नर-नारी आजादी के संघर्ष में मर मिटने को निकल पड़े। बलिदान और उत्सर्ग की यह परंपरा हमारी संस्कृति की एक ऐसी अविच्छिन्न श्रृंखला है। जो सदियों से हमारे जन-जीवन को अनुप्राणित करती रही है। काल के प्रवाह में कभी यह निर्बल होती जान पड़ी किन्तु फिर नई चुनौतियों में अधिक चमक के साथ सामने आई। 1942 का 9 अगस्त, जब क्रांति का बिगुल बजा था और उस क्रांति में अगुआ बनकर सामने आए जयप्रकाश जी। बत्तीस वर्षों बाद 1974 में उनमें फिर वही ज्योति उमड़ी। उन्होंने भारतीय जनमानस को उद्वेलित किया। पहली बार आजादी के दिनों में चेतना का उभार इस पैमाने पर देखने को मिला। भ्रष्टाचार के विरुद्ध एक आंधी आई जिसने सत्ताधारी लोगों को हिला दिया, किंतु एक ओर जहां जे पी द्वारा संचालित आंदोलन में विकृतियां आईं। वहां दूसरी ओर हताश, निष्प्रभ सत्ता से चिपके रहने वाले लोगों के मन की कटुता बढ़ती गई और दमनकारी शक्तियों के सहारे उन्होंने अंतिम प्रहार करने की ठानी और इसमें सफल रहे। देश को बड़ी कीमत चुकानी पड़ी और अभी न जाने किस सीमा तक देश को अधिनायकवादी तरीकों के द्वारा घुटनकारी वातावरण में घसीटा जाएगा।

1942 का 9 अगस्त, जब क्रांति का बिगुल बजा था और उस क्रांति में अगुआ बनकर सामने आए जयप्रकाश जी। बत्तीस वर्षों बाद 1974 में उनमें फिर वही ज्योति उमड़ी। उन्होंने भारतीय जनमानस को उद्वेलित किया। पहली बार आजादी के दिनों में चेतना का उभार इस पैमाने पर देखने को मिला। भ्रष्टाचार के विरुद्ध एक आंधी आई जिसने सत्ताधारी लोगों को हिला दिया, किंतु एक ओर जहां जे पी द्वारा संचालित आंदोलन में विकृतियां आईं।

1942 में जे पी एक क्रांतिकारी के रूप में भारतीय क्षितिज पर उमड़े थे, बाद में जीवनदान, भूदान के प्रयोगों से ऐसा लगा, उनकी जिंदगी इन्हीं आयामों तक सीमित रह जाएगी। किंतु जीवन की अंतिम बेला में उनका आंतरिक संवेग, उनकी क्रांति में आस्था फिर जगी, सामने आई, हिंसा का रास्ता उन्होंने छोड़ दिया किंतु प्रबल प्रतिरोध की शक्ति और जनमानस को झकझोर की उनकी क्षमता फिर जागृत हुई। 1942 के आंदोलन में अरुणा जी, अच्युत जी, लोहिया और जयप्रकाश जी का नाम साथ साथ लिया जाता था। अच्युत जी तो पूरी तरह सन्यासी हो गए, अरुणा जी में अब भी सामाजिक परिवर्तन के लिए कुछ कर गुजरने की लालसा बनी हुई है पर जिस संगति में है उसमें आज की परिस्थिति में राजशक्ति के सहारे ही वे कुछ कर पाने की आशा रखती हैं, भले ही उन्हें इसके पीछे छिपी कमजोरी का ज्ञान है पर इस सीमा-रेखा को पार कर पाना उनके लिए कठिन जान पड़ता है।

लोहिया जी अपने अंतिम दिनों तक संघर्ष करते रहे। कभी-कभी उनकी बातें और व्यवहार से मेरे जैसे लोगों को बड़ी उलझन और झुंझलाहट होती थी किंतु आज यह स्वीकार करना ही पड़ेगा कि इस महान व्यक्ति का समर्पित जीवन सामाजिक कुत्सा के विरुद्ध एक अनवरत संघर्ष से अभिन्न रहा। जीवन का प्रत्येक क्षण इस व्यक्ति ने इसी चिंतन और प्रयास में बिताया। अपने जीवन के अंतिम दिनों में उनकी उत्कट इच्छा थी कि जे पी सभी विरोधी पक्ष के लोगों को मिलाकर उनका नेतृत्व करें। वे बराबर कहा करते थे कि जे पी में जनता को आंदोलित करने की जो शक्ति है वह उनमें नहीं और न किसी अन्य नेता में। उन्होंने इस दिशा में प्रयास भी किया किंतु यह लालसा मन में लिए वे इस दुनिया से चल बसे। आज जब उन बातों की याद आती है तो हम यह मानने को विवश हो जाते हैं कि मूल रूप से लोहिया जी की व्याख्या में बहुत कुछ सार था, कदाचित वे अन्य लोगों से अधिक सूक्ष्म भविष्यद्रष्टा थे। आज बम्बई के क्रांति मैदान में शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करने का समाचार आकाशवाणी पर आया। जो लोग यह आयोजन कर रहे हैं उनके बारे में कुछ कहना व्यर्थ है, यह तो केवल इस पवित्र पर्व का परिहास है, शहीदों की स्मृति को श्रृद्धांजलि देने वाले लोग उनकी परंपरा का उपहास करने वाले लोग हैं पर इतिहास में ऐसा भी होता आया है।

सारे संसार में युवक विद्रोह कर रहा है सामाजिक कुत्सा के विरुद्ध। सत्ता के दमनकारी हौसलों को परास्त करने के लिए कटिबद्ध है, क्रियारत है, संघर्षशील है। किंतु आज के दिन भारत के युवकों को उद्बोधित किया जा रहा है राजभक्ति के लिए, व्यक्ति पूजा के लिए। उनकी आत्मानुभूति को कुंठित करने के लिए क्या क्या प्रयास नहीं हो रहें हैं।

प्रगति के नाम पर, रचना की दुहाई देकर उन्हें लकीर का फकीर बनाया जा रहा है। उन्हें नए युग के संदेशवाहक के महान ऐतिहासिक कर्त्तव्य से अलग करके चारणबन्दी की भूमिका निभाने के लिए लुभाया जा रहा है, धमकाया जा रहा है और उनके स्वत्व को समाप्त कर स्वामिभक्ति का पाठ पढ़ाया जा रहा है। अब युवकों का नेतृत्व सामाजिक विषमताजनित संघर्ष से न उभरने पाये इसके लिए आकाशवाणी के प्रचार और सरकारी साधनों के बेहिचक प्रयोगों द्वारा युवक नेता पैदा करने की जी तोड़ प्रयास हो रहा है। कहां तक सफलता मिलती है यह तो भविष्य ही बताएगा।

30 अगस्त 1976

आज बंगला के प्रसिद्ध क्रांतिकारी कवि काजी नजरुल इस्लाम की मृत्यु का समाचार मिला। पिछले चौंतीस वर्ष के पक्षाघात के कारण उनकी वाणी अवरुद्ध हो गई थी किन्तु उन्होंने अपने जीवन के प्रारम्भिक दिनों में जो रचनाएं की उनको राष्ट्र भुला न सका और उनकी प्रतिष्ठा भारतवर्ष के विभाजन के बाद दोनों खण्डों में ज्यों की त्यों बनी रही। आज उनके बारे में थोड़ा विवरण देखने को मिला। वे अकेले व्यक्ति ऐसे थे जिसे पश्चिम बंगाल और पर्व पाकिस्तान दोनों सरकारों ने पेंशन स्वीकृत की। धर्म के नाम पर देश का विभाजन होने के बावजूद इस अमर साहित्यकार की वाणी एकता के ही गीत गाती रही जो आज भी ज्यों की त्यों अमिट है। बंगला देश के स्वातंत्र्य आंदोलन में इसी कवि के गीतों ने बलिदानियों को अनुप्राणित किया। आज नजरूल इस्लाम की उस बात से मैं अत्यधिक प्रभावित हुआ जो 1930 में उन पर अंग्रेजी सरकार द्वारा मुकदमा चलाए जाने के समय उन्होंने कही थी, मैं एक कवि हूं ऐसी तंत्री जिसके माध्यम से सत्य बोलता है। कोई बर्बर शक्ति इस बांसुरी को बंदी बना सकती है, इसे विनष्ट कर सकती है, किंतु जो इन सुरों से झंकृत होता है, उसे कौन बंदी बना सकता है। सत्य की अजेय शक्ति में यह अटल विश्वास। यही है इस क्रांतिकारी कवि का सम्बल, आस्था का आधार और यही युग-युग तक अनेक प्राणियों को अनुप्राणित करता रहेगा।

आज फिराक गोरखपुरी के बारे में एक लेख पढ़ रहा था। 28 अगस्त को उनकी 80वीं वर्षगांठ के अवसर पर हरीन्द्र श्रीवास्तव ने लिखा है। फिराक साहब के कुछ अशआर की मदद से लेखक ने उनके व्यक्ति को बहुत कुछ उजागर किया है। याद आए इलाहाबाद विश्वविद्यालय के वो दिन। बम्बई के सूती मिल-मजदूरों की ऐतिहासिक हड़ताल के समर्थन में हम लोगों ने विश्वविद्यालय छात्र संघ के भवन में एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया था। मैं उस सभा का अध्यक्ष था, फिराक साहब एक वक्ता। अपने संक्षिप्त भाषण में बुद्धिजीवियों और श्रमिक वर्ग का संघर्ष के क्षणों में सहयोग कितना महत्वपूर्ण क्रांतिकारी कदम है इसकी व्याख्या फिराक साहब ने की थी, बड़ा प्रभावकारी भाषण, प्रांजल भाषा, गंभीर विचार और उन्मुक्त व्यवहार। ये हैं फिराक साहब, अपने में कराहती मानवता की सारी व्यथा समेटे हुए। उनके दो एक शेर लेखक महोदय ने अंग्रेजी लेख में उद्धृत किए, कितने भाव भरे कितने प्रभावकारी

इस खंडहर में कहीं कुछ दिए हैं टूटे हुए
इन्हीं से काम चलाओ बहुत अंधेरा है

ऐसा लगता है जैसे हमें ही सम्बोधित करके अपना पैगाम सुना रहे हैं फिराक साहब। फिर एक दूसरा शेर

मेरे अल्लाह तेरी दुनिया में
आह हम लोग कितने तनहा हैं

जेल की तनहाई में शायर की आह कितनी आसानी से दिल को छू सकती है, इसका अहसास ही किया जा सकता है बयान नहीं। पर साथ ही जिंदगी के हर लमहे में अपने को तश्कीन देने के लिए भी इंसान के पास बेशुमार जरिए हैं, तनहाई भी कट ही जाती है और अच्छी तरह। फिराक साहब के शब्दों में

लोग हमराह लिए फिरते हैं यादों के हुजूम
ढूंढ़ने पर भी कोई शख़्स न तनहा निकला

मुसल्सल जिंदगी हूं

मुझे पहेली न बनाओ
न मुझे किन्हीं गूढ़ अर्थों से पूछो,
न छद्म पदों से ढको
मैं अविराम परिवर्तन हूं, क्रांति हूं।
प्रकृति का नियम हूं,
अतिसाधारण सरल हूं॥
मैं स्पंदित विश्राम हूं, घर्षित तन हूं,
स्वेद-स्नात देह पर ठंडी बयार हूं॥
प्यार की अंगुलियों की छुवन हूं, सिहरन हूं।
गहरी नींद के बिछावन पर,
सोया हुआ श्रम हूं।
बूटियों की सुगन्ध से जगाया गया जागरण हूं॥
लघु हूं, लघुतर हूं,
वृहत हूं, वृहत्तर हूं।
प्रकृति के रहस्यों का पारदर्शी उत्तर हूं॥
साहस का करतब हूं
रचना-रत हाथों की
कला का कमाल हूं।
मैने आंसुओं को भी गाया है,
व्यथा को भी कथा दी है,
हर्ष के पदों में घुंघरू बांधा है।
मैं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता हूं,
कहने का जोखिम हूं,
मैं भुगता हुआ खामियाजा हूं, सही बात कहने का
जुल्म के खिलाफ बगावत का इल्जाम हूं॥
मैं संसद से सड़क तक हक की आवाज हूं,
और जीने का एक जाना पहचाना अंदाज हूं॥
मैं मुकदमा हूं, जंग हूं, सुलह हूं,
इंसाफ की गुहार हूं।
मैं हार कर भी हारा नहीं,
मर कर भी मरा नहीं
संघर्ष ही पाथेय मेरा।
संघर्ष में ही जन्मा हूं, सधा हूं,
हंस-हंस के जीने की सकल विधा हूं।
न्याय के संग्राम का अपराजित योद्धा हूं॥
मैं सूरज की रोशनी हूं,
इसी जमीं का जलवा हूं,
रात की स्याही हूं,सितारों की महफिल हूं,
आग हूँ, धुआँ हूँ। बिजली हूँ॥ तड़प हूं॥॥
बरसना ही नियति जिसकी
वह बादल हूं, वह पानी हूं॥
मुझको जोड़-तोड़,
सांस-सांस, धड़कन-धड़कन कुछ कह लो।
लेकिन मैं मुसल्सल जिंदगी हूं,
जिंदगी, बस जिंदगी हूं।
न बुढ़ापा हूं, न बचपन हूं, न जवानी हूं॥

-हरिहर ओझा 'तरुण'

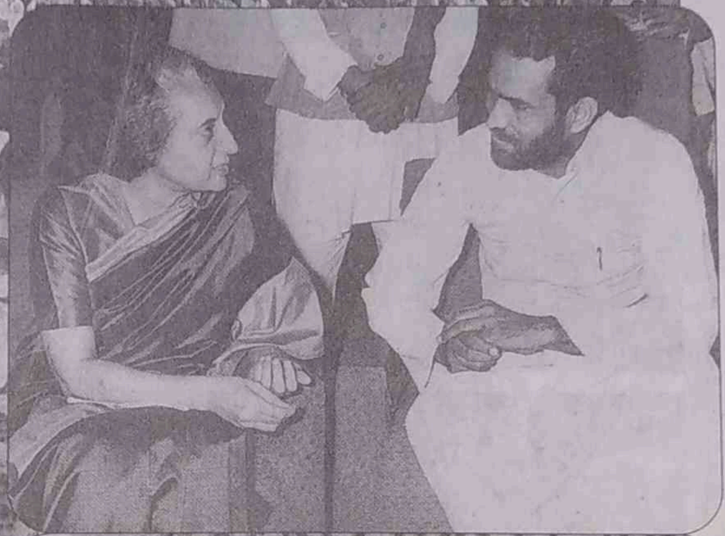

एक प्रयास. जन जन में जागे विश्वास
जनता उत्तर प्रदेश
संघर्ष करो • हम तुम्हारे साथ हैं

GAON CHALO
31 OCT-1 NOV 1998. YATRALAYAM, BHUVNESWARI.

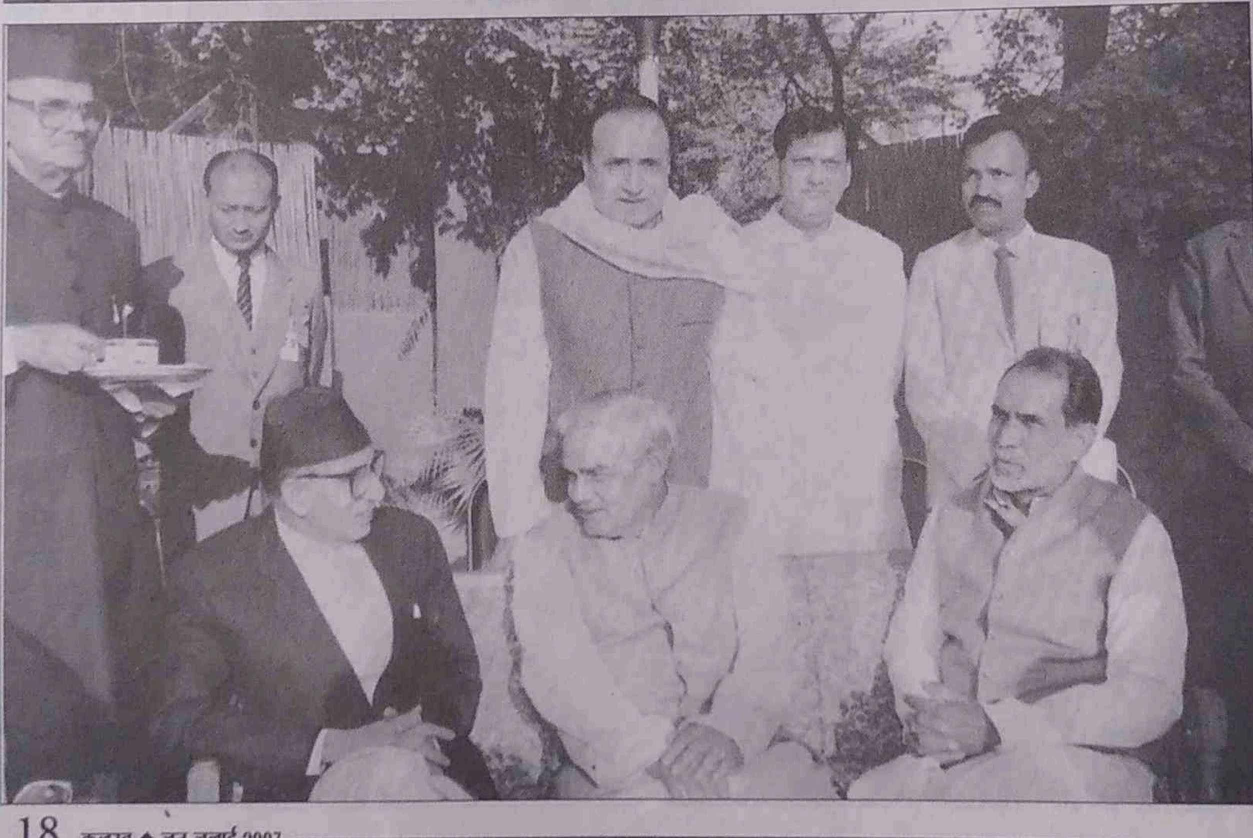

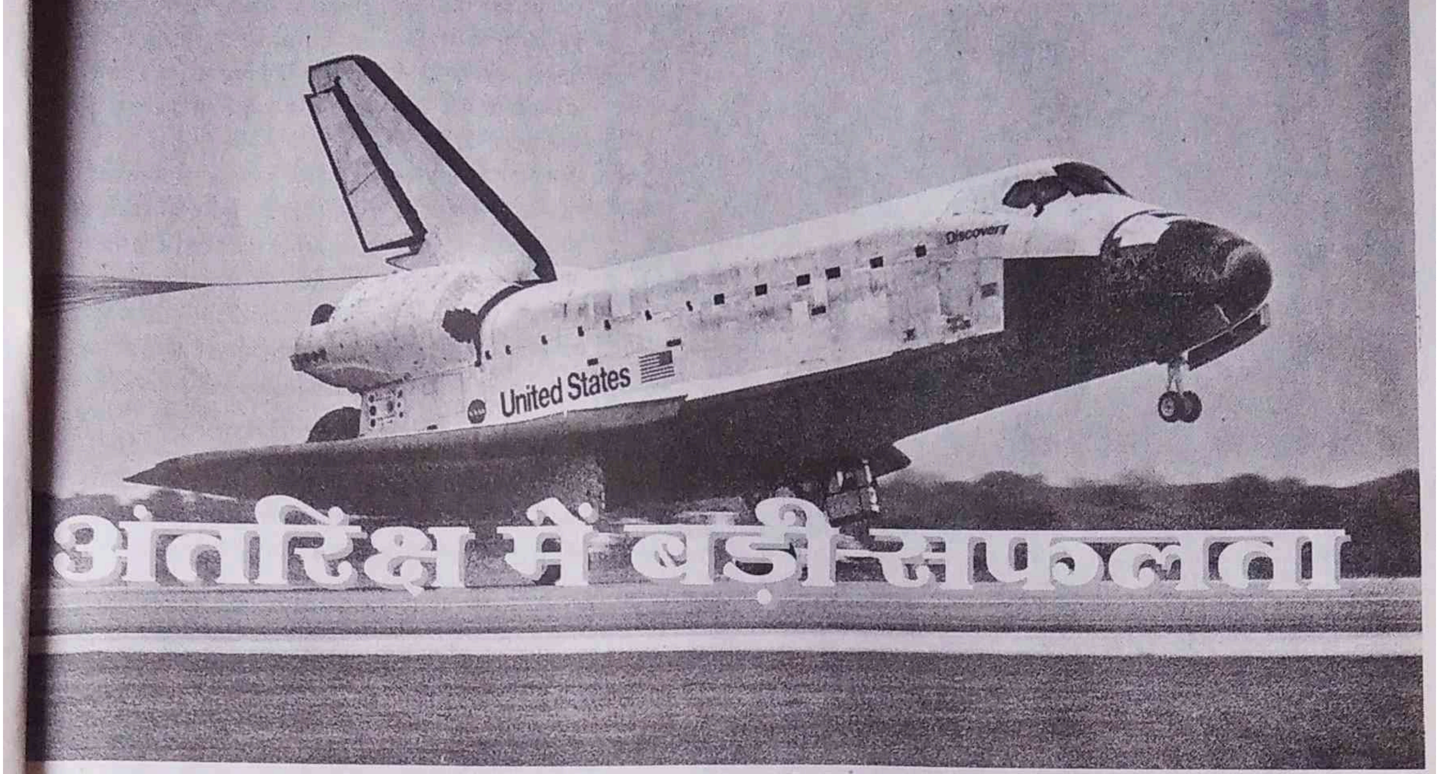

अंतरिक्ष में बड़ी सफलता

■ रुचिर कुमार

सुनीता विलियम्स, एक ऐसा नाम, जिसकी चर्चा आज पूरे विश्व में हो रही है। सुनीता विलियम्स भारतीय मूल की अमेरिकी अन्तरिक्ष यात्री हैं। जिन्होंने हाल ही में अपनी साढ़े छह महीने पुरानी अन्तरिक्ष यात्रा पूरी कर के लौटी हैं। उनकी यह अन्तरिक्ष यात्रा 10 दिसम्बर, 2006 को शुरू हुई थी। उनकी यह यात्रा कई मायनों में अलग है। उनकी इस यात्रा से हमें कई अन्य बातों का पता चलेगा, साथ ही अन्तरिक्ष के संबंध में भी हमें कुछ नई जानकारी प्राप्त होगी। सुनीता ने जब अन्तरिक्ष की यात्रा शुरू की थी तो उन्हें शायद ही इस बात का विश्वास रहा होगा कि वे अन्तरिक्ष में साढ़े छह महीने तक का समय गुजारेंगी। जिस समय अटलांटिस यान के जाने की तैयारी चल रही थी, उस समय हर व्यक्ति के मन में 1 फरवरी, 2003 की घटना चल रही थी। यह वही मनहूस दिन था जब कोलंबिया यान अपनी अन्तरिक्ष यात्रा करके लौट रहा था और पृथ्वी की कक्षा में प्रवेश के समय दुर्घटनाग्रस्त हो गया। साथ ही इस घटना में यान में मौजूद सात अन्तरिक्ष यात्रियों की मौत हो गई। यह वही यान था, जिसमें भारतीय मूल की एक महिला कल्पना चावला भी थी। जिनकी मृत्यु भी हो गई थी। कल्पना चावला ने लगभग 16 दिन अन्तरिक्ष में बिताया। जिस समय कोलंबिया यान दुर्घटनाग्रस्त हुआ वह पृथ्वी से 62 किमी ऊपर था। कल्पना चावला की मौत का पूरे देश में विरोध जताया गया। हर किसी को उनकी मौत का अफसोस था। किसी व्यक्ति को उनकी मौत पर विश्वास नहीं हो रहा था। लेकिन सच तो सच ही था। कल्पना चावला का नाम अभी लोग भूल भी नहीं पाए थे कि फिर से एक नाम सामने आया जो भारतीयों के गौरव को प्रदर्शित करने में सक्षम

सुनीता विलियम्स का परिचय

सुनीता विलियम्स जन्म 19 सितम्बर, 1965 में ओहियो के यूक्लिड शहर में हुआ। यूक्लिड शहर यूएसए में है। यह नासा में कार्यरत, एक अन्तरिक्ष यात्री हैं। सुनीता कल्पना चावला के बाद दूसरी भारतीय महिला हैं, जिन्हें नासा की ओर से अंतरिक्ष यात्रा के लिए चुना गया है। सुनीता नीधम , मैसाचुसेट्स की रहने वाली हैं। उनकी शादी माइकल जे विलियम्स के साथ हुई। उसके पिता का नाम दीपक पांड्या और माता का नाम बोनी पांड्या था। वैसे उसके पिता का पुस्तैनी मकान भारत में गुजरात में है। अंतरराष्ट्रीय स्पेस स्टेशन में जाते समय सुनीता अपनी निजी वस्तुओं में भगवद्गीता की एक प्रति, एक छोटी गणेश की मूर्ति और कुछ समोसे ले गई थी। वे जून 1998 में नासा के लिए चुनी गई। उनकी ट्रेनिंग अगस्त 1998 में शुरू हुई।

अटलांटिस यान

यह यान, लगभग 22 साल पुराना है। साथ ही यह यान अपनी उम्र से दो साल ज्यादा काम कर चुका है। इस बार जब वह सुनीता विलियम्स को लेने के लिए रवाना हुआ तो उसमें ऊष्मारोधी परत के टुकड़े लटक रहे थे। नासा के इंजीनियरों ने इस घटना के लिए परेशान होने से मना किया है। साथ ही कोलंबिया हादसे के बाद हर यान मिशन में एक यान मरम्मत किट ले जाने की सुविधा प्रदान की गई। साथ ही नासा ने कहा कि यह कोई बड़ी बात नहीं थी।

था। वह नाम कोई और नहीं भारतीय मूल की महिला सुनीता विलियम्स का था। जिन्हें 10 दिसम्बर को अटलांटिस शटल यान से अन्तरिक्ष की यात्रा के लिए चुना गया था। साथ ही वे इस यात्रा के लिए तैयार भी थी। उनके साथ भी इस यात्रा में सात सदस्य थे। आज जब वह अन्तरिक्ष यान धरती पर वापस लौट आया है तो प्रत्येक पृथ्वीवासी, सबसे ज्यादा भारतवासी खुद को गौरवान्वित महसूस कर रहा है। सुनीता के सकुशल वापसी की खबर पाते ही पूरे विश्व में खुशी की लहर दौड़ गयी। भारत में तो इस खबर के बाद सबसे ज्यादा खुशी मनाई गई। इस खबर के बाद चारों ओर मिठाई बांटी गई और पटाखे बजाए गए। लेकिन जब तक अटलांटिस पृथ्वी पर नहीं पहुंचा था तब

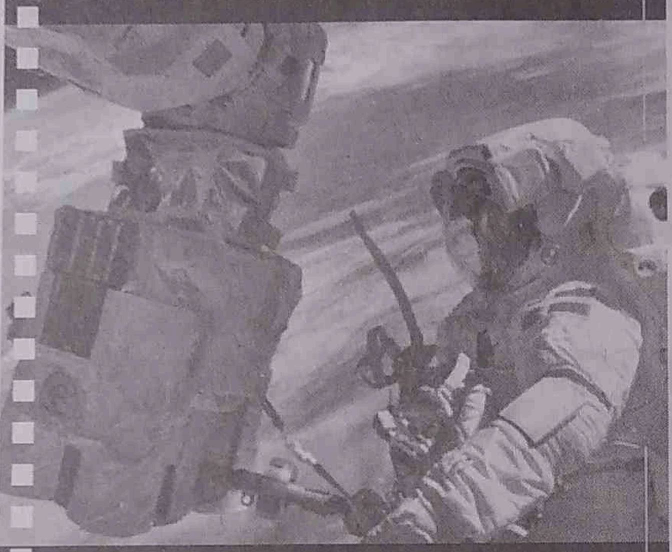

सुनीता विलियम्स के रिकार्ड

41 वर्षीय सुनीता विलियम्स दुनिया की एक मात्र ऐसी महिला बन गई हैं जिन्होंने अंतरिक्ष में सर्वाधिक अवधि तक समय गुजारा। उन्होंने अंतरिक्ष में रहने के 188 दिन और चार घंटे के पिछले रिकार्ड को तोड़ा। यह रिकार्ड 1996 में शैनन लुसिड के द्वारा बनाया गया था। सुनीता विलियम्स एसटीएस 116 में सवार होकर दिसंबर में अंतरिक्ष स्टेशन पहुंची थी। उन्होंने 29 घंटे 17 मिनट की चार स्पेसवाक कीं। उन्होंने महिला अंतरिक्ष यात्री कैथरीन थार्नटन के रिकार्ड को तोड़ा। इस प्रकार सुनीता के अंतरिक्ष प्रवास के दौरान कई सारे रिकार्ड बनाए।

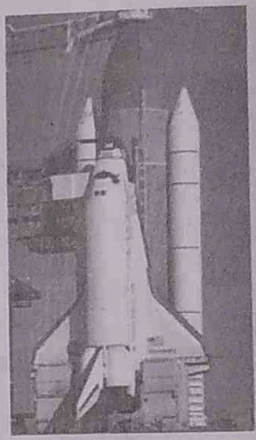

पिछले अप्रैल में सुनीता कक्षा में मैराथन करने वाली दुनिया की पहली अंतरिक्ष यात्री बन गई। इस मैराथन में उन्होंने चार घंटे 24 मिनट का समय लिया। साथ ही सुनीता ने सबसे ज्यादा दिनों तक अंतरिक्ष में रहने का रिकार्ड भी बनाया। वे यहां 195 दिन तक रहीं।

तक पूरे भारत में कहीं प्रार्थना सभाएं, कहीं यज्ञ, कहीं दुआएं तो कहीं हवन आदि सब कुछ किया जा रहा था। जिससे कि पुनः 1 फरवरी की घटना न हो जाए। हर कोई सुनीता की सकुशल वापसी की बात सोच रहा था। साथ ही उनसे नई जानकारी भी पाना चाहता था।

भारतीय अमेरिकी सुनीता विलियम्स सहित सात अंतरिक्ष यान अटलांटिस कैलीफोर्निया के एडवर्डस एयरफोर्स बेस पर जब उतारा गया तब लोगों ने राहत की सांस ली। भारतीय समय के मुताबिक अटलांटिस एक बज कर उन्नीस मिनट पर धरती पर उतरा। खराब मौसम की वजह से नासा ने इसे फ्लोरिडा के केनेडी स्पेस सेंटर में उतारने की योजना रद्द कर दी थी।

अटलांटिस कमांडर रिक स्टरको और पायलट ली आरचमबाउल्ट ने यान को भारतीय समय के मुताबिक रात एक बजकर बीस मिनट पर धरती पर उतारा गया। सुनीता ने अंतरिक्ष में 195 दिन बिताकर 22 जून दिन शुक्रवार को सुरक्षित धरती पर लौटी हैं। वे पिछले नौ दिसंबर को अंतरिक्ष में गई थी। उन्होंने लंबे समय तक अंतरिक्ष में रहने का रिकार्ड बनाया। इस प्रकार यान के विषय में चली आ रही उत्सुकता एक लम्बे इंतजार के बाद अंततः समाप्त हो गया। इस के बाद जैसे भारत और अमेरिका सहित दुनिया भर में खुशी की लहर दौड़ गयी। कोलंबिया यान के साथ हुए हादसे को लेकर लोगों के मन में कई तरह की आशंकाएं थीं लेकिन अंततः नासा अटलांटिस को सुरक्षित उतारने में कामयाब रहा। जबकि यान को 21 जून, गुरुवार को फ्लोरिडा के केनेडी स्पेस सेंटर में उतारा जाना था लेकिन मौसम के चलते ऐसा नहीं हो सका।

इससे पहले मिशन कंट्रोल ने 22 जून रात करीब 12 बजे अंतरिक्ष यान अटलांटिस को वातावरण में प्रवेश की हरी झंडी दी थी। यान ने 12 बजकर 13 मिनट पर कक्षा से अलग होने (डी आर्बिट) की प्रक्रिया शुरू कर दी और भारतीय समयानुसार रात एक बजकर 19 मिनट कैलिफोर्निया के एडवर्डस एयरफोर्स बेस पर उतारा। यान के उतरने तक उड़ान नियंत्रक और भविष्यवाणी करने वाले केनेडी और एडवर्डस दोनों ही जगहों पर मौसम पर लगातार नजर रखे हुए थे। अंततः यान कैलिफोर्निया में ही उतारा गया। एडवर्डस बेस पर अब तक 50 अंतरिक्ष यान उतर चुके हैं। 2005 में डिस्कवरी यान उतरा था।

कल्पना चावला

इनका जन्म 7 मार्च, 1962 को हुआ। ये भारतीय मूल की अंतरिक्ष यात्री थी। कोलंबिया अंतरिक्ष यान के सात सदस्यों में एक थी। एसटीएस 107 मिशन के तहत जब वे धरती पर लौट रही थी तो वह यान धरती के वायुमण्डल में प्रवेश के साथ ही ध्वस्त हो गया। इस तरह 1 फरवरी, 2003 को उनकी मृत्यु हो गई। कल्पना चावला भारत के हरियाणा राज्य के करनाल में जन्मी थी। वह एक हिन्दु परिवार से थी। कल्पना एक संस्कृत नाम है। वे जे आर डी टाटा से प्रभावित थी, जो भारतीय पायलट और उद्योगपति थे। उन्होंने शुरूआती पढ़ाई पंजाब में की। बाद में 1982 में वे अमेरिका गई और वहां मास्टर्स की डिग्री ली। 1990 में उन्होंने अमेरिकी नागरिकता प्राप्त की। वे 1995 में नासा के लिए चुनी गई और 1996 में पहली बार वे उड़ान पर गई। 19 नवंबर 1997 को कोलंबिया यान में जाने के लिए चुनी गई।

अटलांटिस के धरती पर उतरने के साथ ही अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष केंद्र (आईएसएस) निर्माण मिशन सफलतापूर्वक संपन्न हो जाएगा। अटलांटिस ने आठ जून को उड़ान भरी थी और यह 10 जून को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) पहुंच गया। इसके सदस्यों ने यान के फटे हुए थर्मल ब्लैंकट को दुरुस्त किया और इसे धरती पर उतरने के योग्य बनाया।

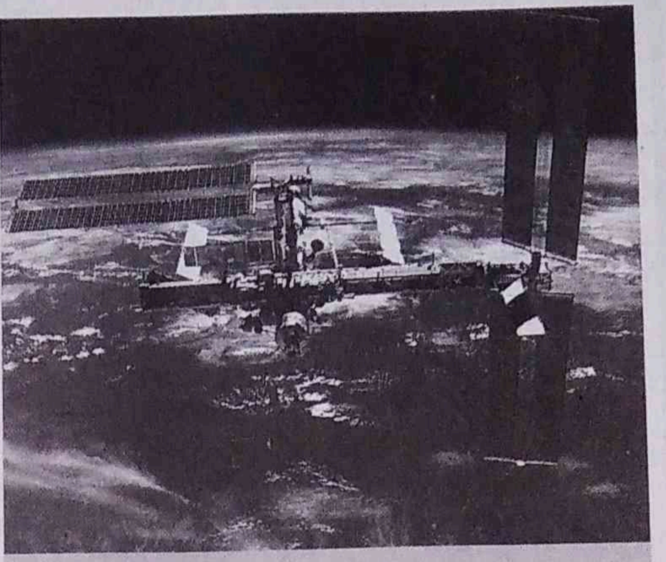

इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन (आईएसएस) के कार्य

अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष केन्द्र में दो प्रमुख कार्य होते हैं। पहला स्टेशन के सभी सिस्टम ठीक तरह से कार्य करते रहें और दूसरा मानवता के हित में अंतरिक्ष विज्ञान के उन रहस्यों से पर्दा उठाया जाए। जो पृथ्वी पर इंसान के जीवन को प्रभावित करते हैं। इसके लिए लगातार चलने वाले अनुसंधान की मदद से विज्ञानी यह जानने की कोशिश करते हैं कि किस तरह बिना गुरुत्वाकर्षण के भी बेहतर जीवन जिया जा सकता है। इसके अलावा वे चिकित्सा संबंधी ऐसे प्रयोग करते हैं जिससे ऐसी स्थिति आने पर लम्बे समय जीवित रहा जा सके। अंतरिक्ष यात्री के सभी कार्य लैपटाप पर दर्ज करते हैं। अंतरिक्ष यात्री सोमवार से शुक्रवार तक काम करते हैं। शनिवार को अंतरिक्ष स्टेशन की सफाई और रविवार को छुट्टी मनाते हैं।

सुनीता विलियम्स ने अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष केन्द्र में छह माह रहने के बाद पृथ्वी पर वापसी कर रही हैं। उन्होंने ह्यूमन लाइफ साइंस, फिजिकल साइंस, अर्थ आब्जरवेशन, शिक्षा और टेक्नालाजी, डेमोन्ट्रेशंस जैसे विषयों पर काम किया। उनके शोधों का परिणाम था कि विज्ञानियों को शरीर पर लंबे समय तक भारहीनता के प्रभाव के बारे में पता चला सके। साथ ही उन्होंने ब्लड सैम्पल्स भी एकत्र किए हैं जिसे वे न्युट्रिशन से संबंधित अनुसंधान कर रहे विज्ञानी तक पहुंचाएंगी। इसके अध्ययन से यह पता चलेगा कि लंबे समय तक अंतरिक्ष में रहने पर शरीर पर क्या प्रभाव होता है।

उन्होंने बताया कि अंतरिक्ष में भारहीनता के कारण बहुत मुश्किलें आती हैं। खाना खाने से लेकर नहाने तक सभी कार्यों में दिक्कत का सामना करना पड़ता है। इसका प्रमुख कारण भारहीनता है। इसलिए आपका वजन वहां पर कुछ भी नहीं होता। अतः आप वहां कोई कार्य ठीक से नहीं कर सकते। अंतरिक्ष में सबसे ज्यादा समस्या सोने की होती है क्योंकि आप वहां ठीक से लेट नहीं सकते हैं।

ग्लोबल वार्मिंग के प्रति हों सचेत

देश और दुनिया एक के बाद बड़ी समस्याओं से गुजर रहा है। इसे दुखद ही कहा जाएगा कि इनमें से कई के पीछे हम सब लोग भी काफी जिम्मेदार हैं। ग्लोबल वार्मिंग का खतरा भी इनमें से एक है। विकास बहुत जरूरी है लेकिन यह मानवता की कीमत नहीं किया जाना चाहिए। अगर इस तरह की भविष्यवाणियां की जा रही हैं कि अगला विश्व युद्ध पानी के लिए होगा, तो क्या यह नहीं बताता कि पानी की समस्या क्यों इतनी जटिल होती जा रही है। भूकंप आदि का खतरा बढ़ता जा रहा है। पानी, भूकंप और इस तरह की तरह की अनेकानेक समस्याओं के लिए आखिर कौन जिम्मेदार है। इस पर सोचना होगा। हम सभी को इस बारे में जागरूक होना पड़ेगा ताकि आसन्न खतरों से निपटा जा सके। आइये ग्लोबल वार्मिंग के खतरों से निपटने के लिए एकजुट होया जाए ताकि मानवता की रक्षा की जा सके। हम और आप सब का थोड़ा-थोड़ा सहयोग इस दिशा में काफी महत्वपूर्ण साबित हो सकता है। आइये संकल्प लें कि हम जो कुछ भी कर सकते हैं उसमें कोई कोताही नहीं बरतेंगे।

कलरव की ओर से जनहित में प्रकाशित

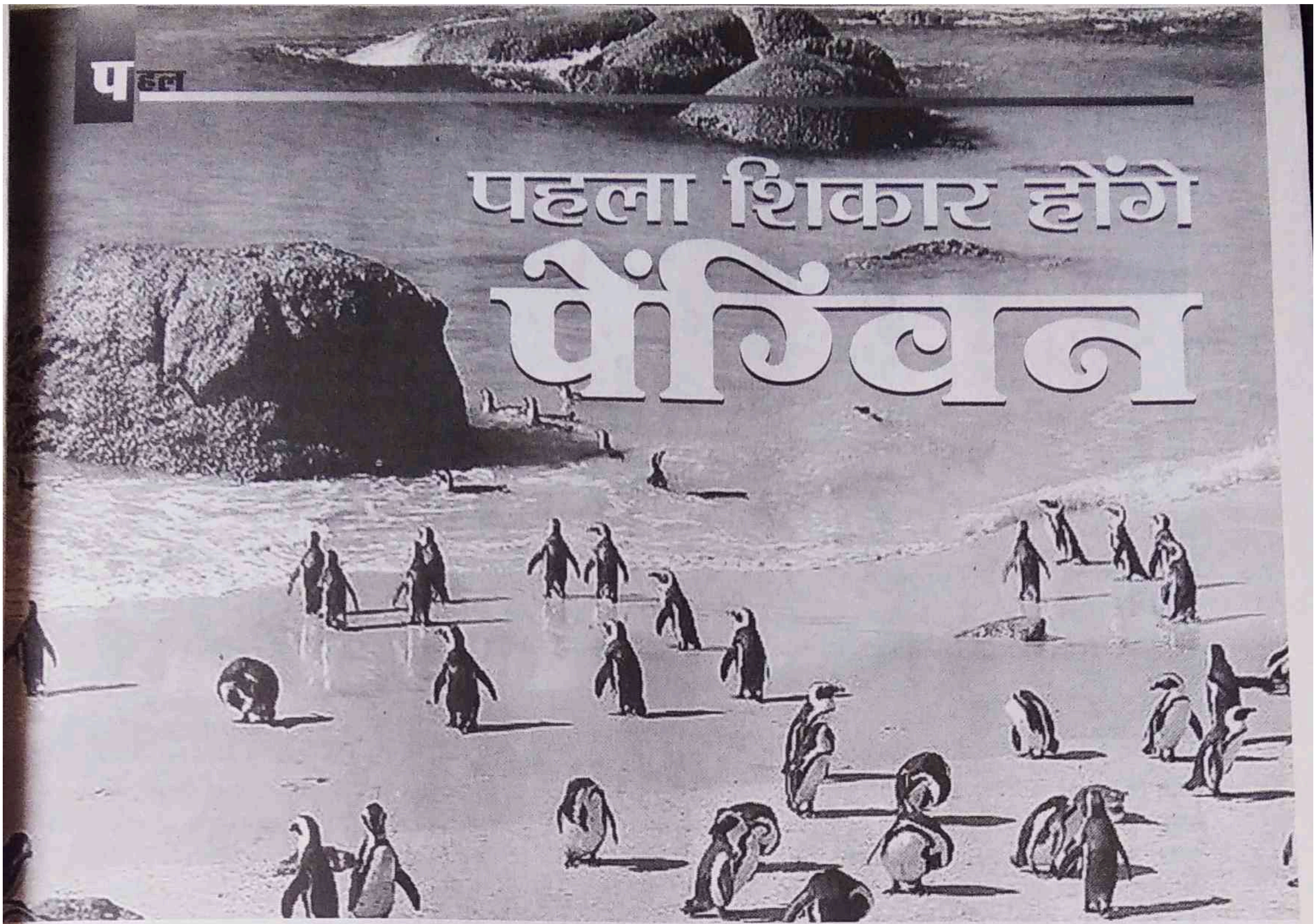

पहला शिकार होंगे पेंग्विन

ग्लोबल वार्मिंग से बढ़ रहे खतरों को जो लोग कम करके आंक रहे हैं वे बड़ी गलती कर रहे हैं। उन्हें पता नहीं कि आने वाले समय में प्रकृति उनके साथ क्या-क्या कर सकती है। यद्यपि दुनिया भर में बहुत सारे लोग ऐसे भी हैं जो इस खतरे को बहुत ही समझ गए हैं और इसके खिलाफ लामबंद हो रहे हैं लेकिन अभी भी यह संख्या आवश्यकता के अनुरूप बहुत ही कम है। जिस तरह की जागरूकता और जैसी पहल की आवश्यकता है वह कम ही दिख रही है। इस बारे में ग्रीनपीस द्वारा चलाया जा रहा अभियान निश्चित रूप में उल्लेखनीय है लेकिन वह भी अभी तक अपने को सिर्फ बड़े शहरों और कुछ बुद्धिजीवी तबके तक ही सीमित है। ग्लोबल वार्मिंग के खिलाफ व्यापक अभियान की जरूरत है। इसे जन-जन तक पहुंचाया जाना चाहिए।

जिस तरह के शोध और जानकारियां मीडिया के माध्यम से आ रही हैं उन्हें काफी डरावनी कहा जा सकता है। ग्लोबल वार्मिंग का शिकार सबसे ज्यादा प्रकृति को होना पड़ रहा है। यह साफ तौर पर मनुष्यों के लिए बेहद हानिकारक साबित हो सकता है क्योंकि मनुष्य की सबसे ज्यादा रक्षक प्रकृति ही है। जितना कुछ प्रकृति के माध्यम से जीवन को मिलता है उतना अन्य भौतिक वस्तुओं से नहीं। ऐसे में यह समझना बेहद आसान होगा कि जब प्रकृति के समक्ष ही संकट खड़ा हो जाएगा तो जीवन का क्या होगा। मानवेतर जीवों के बारे में अध्ययन बताते हैं कि अगर इसी तरह ग्लोबल वार्मिंग का खतरा बढ़ता रहा और इस पर रोक लगाने के पर्याप्त व आवश्यक उपाय समय रहते नहीं किए गए तो आने वाले दिन बेहद खतरनाक साबित हो सकते हैं। इसके प्रति लोगों को जागरूक करने की जरूरत है। इस काम को फिलहाल ग्रीनपीस के कार्यकर्ता कर रहे हैं। इसे और आगे बढ़ाया जाना चाहिए।

पर्यावरण संरक्षण के लिए काम करने वाली संस्था ग्रीनपीस के कार्यकर्ताओं ने कुछ समय पहले पेंग्विन की तरह दिखने वाले कपड़े पहनकर मिड्नाइट मैराथन में हिस्सा लिया और संदेश दिया कि जलवायु परिवर्तन के कारण ध्रुवीय क्षेत्रों में बर्फ पिघलने का सबसे ज्यादा खामियाजा पेंग्विन को ही भुगतना पड़ेगा। मैराथन में हिस्सा ले रहे लोगों का कहना था कि यह सबसे बड़ी पर्यावरण समस्या के विरुद्ध प्रदर्शन है जिसका मकसद पर्यावरण के खतरों से भारतीय जनमानस को सचेत करना है। ग्रीनपीस के कार्यकर्ता हाथ पर जलवायु परिवर्तन रोको तथा वल्ब पर प्रतिबंध लगाओ जैसे नारे लगा रहे थे।

ग्रीनपीस के कार्यकारी निदेशक जी अनंतपद्मनाभम ने कहा कि पेंग्विन की दुर्दशा की स्थिति से निपटने के लिए जल्दी उपाय करने की चुनौती है। एक शोध रिपोर्ट में कहा गया है कि इस दिशा में कार्यवाही करने के लिए सिर्फ आठ साल हैं। इस दौरान ग्रीनहाउस गैसों को कम करने के लिए हमें सभी प्रयास करने हैं। इसके लिए सबसे पहले और सबसे तरल उपाय वल्ब को प्रतिबंधित करना होगा। इसी तरह का एक कार्यक्रम पिछले पखवाड़े नई दिल्ली के इंडिया गेट में आयोजित किया गया था।

ग्लोबल का असर अन्य रूपों में भी हमारे सामने आएंगे। ऐसा माना जा

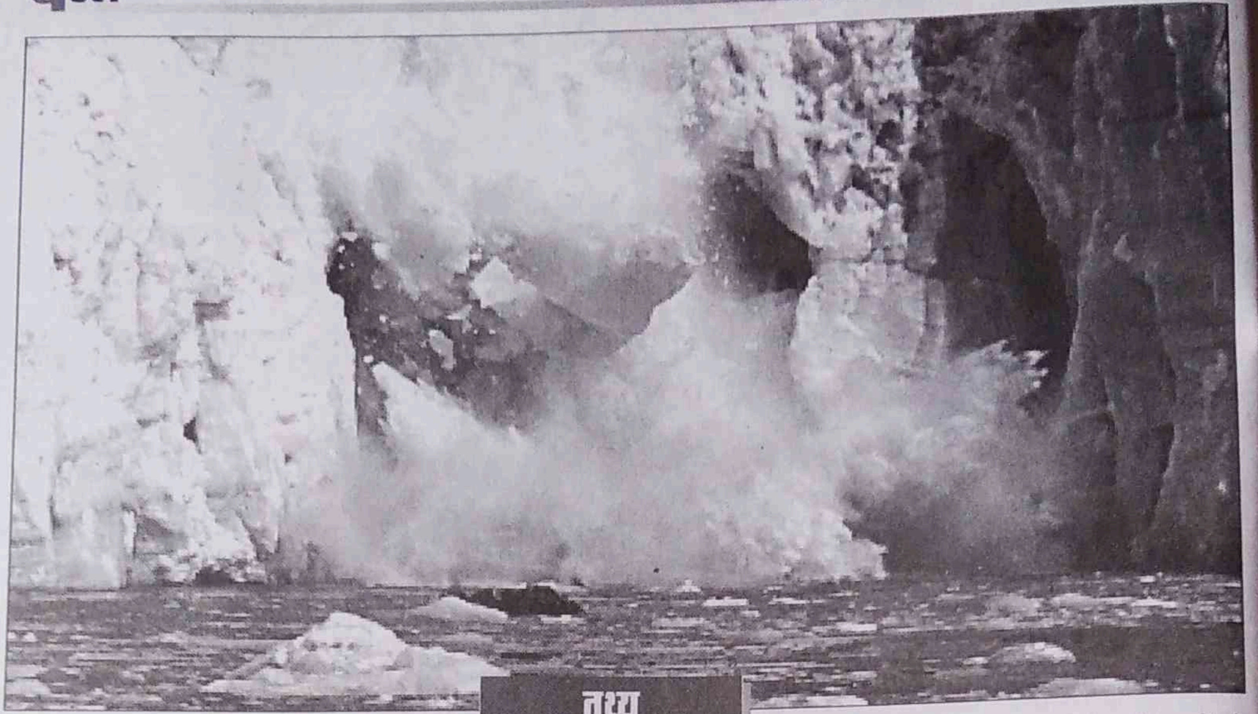

रहा है कि ग्लोबल वार्मिंग वजह से देश में मानसून तो अच्छा आएगा पर इससे बादल फटने जैसी कई आपदाएं भी आने का खतरा बना रहेगा। विश्व बैंक की हाल में जारी एक शोध रिपोर्ट के अनुसार मानसून की बारिश के दौरान पूरे देश के जलवायु परिवर्तन में इजाफा होगा लेकिन सभी क्षेत्रों में यह एक समान नहीं रहेगा। कई जगह मानसून की बारिश जबरदस्त तूफान की तरह होगी।

भारतीय जलसंसाधन के भविष्य के बारे में कहा गया है कि जो संकेत मिल रहे हैं उनके अनुसार वैश्विक तापमान बढ़ने का असर आखिर हिमखंडों के कारण प्रवाहित होने वाली नदियों के जल प्रवाह पर भी पड़ेगा। हालांकि जो क्रम चल रहा है और देश का पर्यावरण मंत्रालय राष्ट्रीय जल संरक्षण योजना के तहत जो कदम उठा रहा है उसे देखते हुए प्रमुख नदियों के जल प्रवाह प्रभावित होने की संभावना नहीं है। भारतीय सरकार जो भी उपाय करे लेकिन यह तय नजर आ रहा है कि देश में बढ़ती जनसंख्या का दबाव, जल संसाधन के मौजूद स्रोतों का दोहन तथा जलवायु में आ रहे बदलाव आदि के कारण भविष्य में प्रति व्यक्ति पानी का उपलब्धता घटेगी। देश भर में जल उपलब्धता को लेकर विविध कारणों से जो असमानता आ रही है वह चिंताजनक है। इसका प्रमुख कारण भूजल का बेतहाशा दोहन है। इसके कारण कई क्षेत्रों में भूजल के स्तर में भारी गिरावट आई है। जल आपूर्ति बढ़ाने तथा जल संसाधनों के संरक्षण के बारे में रिपोर्ट में कहा गया है कि विभिन्न राज्य सरकारें जल संरक्षण इकाइयों का पुनर्गठन, वर्षा जल संचयन, कृत्रिम तरीके से भूजल स्तर बढ़ाने तथा जल संरक्षण के लिए और भी बेहतर उपाय करने में जुटी हैं। केंद्र सरकार सिंचाई लाभ परियोजनाओं के तहत राज्य सरकारों को सिंचाई योजनाओं को पूरा करने में मदद कर रही हैं। इसके साथ ही सीधे कृषि से जुड़ी विभिन्न योजनाओं को पूरा करने में सहयोग के लिए बनी पायलट योजनाओं को केंद्र सरकार मंजूरी प्रदान कर चुकी है।

केंद्र सरकार ने कृत्रिम रूप से भूजल का स्तर बढ़ाने की अवधारणा को लोकप्रिय बनाने के लिए केंद्रीय जल संसाधन मंत्री की अध्यक्षता में एक सलाहकार समिति का गठन किया है। इसके साथ ही जल संसाधन के संरक्षण और प्रबंधन के लिए केंद्र तथा राज्य स्तर पर कई योजनाओं को तैयार किया गया है। इस तरह के प्रयास किए जाते रहने चाहिए लेकिन साथ ही यह भी देखना चाहिए कि जो व्यवस्था बनाई जा रही है वह लागू कितनी हो पा रही है। कई बार यह पाया गया है कि सरकार की तरफ से योजनाएं तो बड़ी-बड़ी बना दी जाती हैं पर उन्हें देखने की व्यवस्था नहीं बनाई जाती। इसका परिणाम यह होता है कि या तो पूरी नहीं हो पातीं या तो उनमें इतनी अव्यवस्था आ जाती है कि उनका मकसद अधूरा रह जाता है। ग्लाबोल वार्मिंग के खतरों से निपटने के लिए भी सरकार की ओर से जो भी प्रयास किए जा रहे हैं उन्हें ही मजबूती से अगर लागू किया जाए तो भी परिणाम कुछ सार्थक आएंगे। यह जरूर है कि सरकार की ओर से और भी बड़े कदम उठाए जाने की आवश्यकता है। एड्स और पोलियो के खिलाफ जिस तरह के अभियान सरकार की ओर से चलाए जा रहे हैं उससे भी मजबूत अभियान ग्लोबल वार्मिंग के खिलाफ चलाए जाने की जरूरत है तभी इस खतरे से निपटा जा सकता है। सबसे बड़ी बात यह है कि इससे सिर्फ सरकारी स्तर पर काबू नहीं पाया जा सकता। इसमें जन भागीदारी भी बहुत आवश्यक है। इसके लिए स्वयंसेवी संगठनों को तो आने आना ही होगा सरकार को भी उनकी सहायता के लिए खड़ा होना होगा।

तथ्य

● विश्व बैंक की हाल में जारी एक शोध रिपोर्ट के अनुसार मानसून की बारिश के दौरान पूरे देश के जलवायु परिवर्तन में इजाफा होगा लेकिन सभी क्षेत्रों में यह एक समान नहीं रहेगा। कई जगह मानसून की बारिश जबरदस्त तूफान की तरह होगी। भारतीय जलसंसाधन के भविष्य के बारे में कहा गया है कि जो संकेत मिल रहे हैं उनके अनुसार वैश्विक तापमान बढ़ने का असर आखिर हिमखंडों के कारण प्रवाहित होने वाली नदियों के जल प्रवाह पर भी पड़ेगा।

एड्स
बचाव में ही
समझदारी
सहयोग की ओर से जनहित में जारी

भारतीय राजनीति को दिशा देता

दलित चेतना का नया स्वर

■ डा. जय प्रकाश मिश्र

सब हैरत में हैं। इसे पहले क्यों नहीं सुन पाए। सुन लेते तो क्या तस्वीर होती, न सुन पाने से क्या किरकिरी हुई। क्या पत्रकार, क्या राजनैतिक दल, क्या चुनावी पंडित, सबको अपने नकली होने का एहसास जितनी शिद्दत से अब हुआ है, शायद ही पहले कभी हुआ हो।

दलित चेतना का यह नया स्वर था ही ऐसा जिसकी आहट किसी को न हुई मगर असर सब पर हुआ। 'जन' को यह स्वर कहीं भीतर तक छू गया और उसने 'तंत्र' को सही दिशा देने का मन बना लिया। खादी में लकदक नेता, अच्छे-बुरे जुमलों में बातें करते अभिनेता, पोलिंग बूथ के बाहर कैमरा लिए मतदाताओं के मन में झांकने की कोशिश करते पत्रकार, वातानुकूलित स्टूडियों में बैठकर उल जुलूल कयास आराइयां करते चुनावी पंडित और चटखारे लेकर आज इसकी तो कल उसकी तारीफ के बारी-बारी से कशीदे पढ़ते अखबार-फेहरिस्त लंबी हो सकती है-सब के सब बगलें झांकते नजर आए। आम आदमी के इस खास करनामे ने इन्हें कहीं का न छोड़ा।

चुनाव परिणामों ने मुस्कुराहट दी तो सिर्फ मायावती के चेहरे को जो इस चुनाव में एक अलग अंदाज में पेश किया गया था। इस चेहरे में जनतंत्र के वास्तविक संप्रभु अर्थात जन ने एक स्वस्थ विकल्प देखा और इसे ही चुना। एक ऐसे माहौल में जहाँ हर राजनीतिक दल शिकार था, बहुजन समाज पार्टी के नेतृत्व की साफगोई ने अवाम पर जादुई असर छोड़ा। राम को सियासी मोहरा बनाकर सत्ता पर काबिज होते ही 'भगवान' को ठण्डे बस्ते में डालने वाली भाजपा को जनता ने जहाँ अपनी बेरुखी से ठंडा कर दिया, वही आरक्षण के बाल की खाल में भविष्य तलाशने वाली कांग्रेस को भी बहुत तवज्जो न दी। साथ ही, समाजवाद को व्यक्तिवाद का पर्याय बनाने में जुटी सत्ताधारी पार्टी को भी अवाम ने बाहर का रास्ता दिखाया।

आम आदमी ने मायावती के बयानों में गंभीर अर्थ ढूढ़ने की कोशिश की। मसलन, जहाँ मुलायम आदि को जेल भेजने के बयान ने गुण्डाराज से मुक्ति का संकेत दिया वहीं सर्वजन समाज के नारे ने सामाजिक समरसता

की नयी संभावनाओं भरा संदेश भी दिया और आम आदमी को यही चाहिए था -एक ऐसा नेता जो भयमुक्त समाज दे सके और सबको साथ लेकर चल सके। क्योंकि सच यही है कि आम आदमी मंदिर-मस्जिद, अगड़ों-पिछड़ों आदि की राजनीति से इतना त्रस्त हो चुका है कि वह राजनेताओं एवं राजनीतिक पार्टियों से एक स्वस्थ चिन्तन एवं दृष्टि की अपेक्षा रखता है और हर बार उसे निराशा ही हाथ लगती है। ऐसे में बसपा और उसकी नेत्री मायावती की नयी पहल ने आम आदमी को नई उम्मीदें दीं। बदले में बसपा को पांच साल तक सता की कमान संभालने का तोहफा मिला और बाकी दलों को अपने ढुलमुल रवैये का दण्ड।

इंजीनियरिंग नहीं, केमिस्ट्री

चुनावी पंण्डित भी गजब की चीज हैं। अगर अटकलबाजी चल गयी तो क्या कहने, लेकिन अगर परिणाम बिल्कुल उलटे आये तब भी उनका विश्लेषण करने में पाण्डित्य प्रदर्शन का पूरा अवसर तलाश लेते हैं ये लोग। ऐसे में यदि दो-एक नये शब्द या शब्दावली का प्रयोग न करें तो इन्हें विशेषज्ञ कौन मानेगा। लिहाजा, अपने विश्लेषणों को नये-नये शब्दों की धार देते रहते हैं चुनावी पंण्डित ताकि मार्केट बना रहे।

ऐसे पण्डितों ने कहना शुरू किया कि मायावती दरअसल सोशल

इन्जीनियरिंग के बल पर जीती हैं। गोया, यह कोई बाजार में बिकने वाली शैली थी जो इत्तिफाक से मायावती ने पहले खरीद ली, वरना ये चीज और इसके बूते पायी गयी जीत किसी और की भी हो सकती थी। कहना न होगा कि ऐसे पण्डित एक साथ दो गलतियां करते हैं। एक तो यह कि वे बसपा के बढ़ते जनाधार से आंखे मूँदने की चतुराई दिखा रहे हैं और इसकी जीत को कम आंककर बाकी मृत-प्राय हो चुके या हो रहे दलों को संजीवनी देने की कोशिश कर रहे हैं; और दूसरी यह कि जो कुछ बसपा या, प्रकारान्तर से, मायावती कर रही हैं वह सोशल केमिस्ट्री यानी समाजी कीमियागरी है, सोशल इंजीनियरिंग नही।

पहली गलती के मूल में इन विशलेष्कों की अपनी थोथी भविष्यवाणी से उपजी खिसियाहट है और दूसरी की जड़ इनकी उस पुरानी आदत में है जो कहीं के जुमले कहीं चस्पा करके घिसे-पिटे विचारों में नव्यता का भ्रम पैदा कर अपनी पीट आप ठोकना चाहती है।

जहाँ तक पहली बात का सवाल है, बाकी दलों को इस चुनाव से सबक लेने की जरूरत है। जनादेश साफ है- कांग्रेस के लिए यह कि राजनीति बच्चों का खेल नहीं है सपा के लिए यह कि समाजवाद सिर्फ धोती कुर्ते का नाम नहीं है, और भाजपा के लिए यह कि यदि मंतव्य स्पष्ट न हो तो सिर्फ आलंकारिक भाषा और वाकपटुता के बल पर मतदाता को बहुत रिझाया नहीं जा सकता। बाकी दलों के खिसकते जनाधार का 'बसपा-गमन' इस पार्टी की निरन्तर बढ़ती ताकत का कारण है। यह एक ऐसा सच है जिसे झुठलाना किसी भी पार्टी के लिए हितकर नहीं होगा। क्योंकि इससे जहाँ दूसरी पार्टियों को आत्म मंथन की आवश्यकता महसूस होगी वहीं बसपा को भी इस जनाधार को बनाये रखने और, संभव हो तो, अधिक मजबूत करने की जरूरत दिखेगी।

अब बातें केमिस्ट्री की। बसपा के जनक कांसीराम ने एक प्रयोग किया- दलितो को आकृष्ट करने के लिए सवर्णों को गालियां दीं। यह प्रयोग सफल होते देख उनके तेवर और उग्र हुए। मायावती उन्हीं के नक्शे कदम पर चलीं और उनके साथ ''तिलक तराजू और तलवार, इनको मारो जूते चार'' जैसे 'मंत्रों' का जाप किया। मनुवादियों, जिनका उनकी निगाह में अर्थ बहुत हद तक ब्राह्मण और कुछ हद तक क्षत्रिय और वैश्य भी था, को पानी पी-पीकर कोसने पर इन्होंने देखा कि बहुजन मतदाता उनकी तरफ आकृष्ट होता जा रहा है। गोया, यह प्रयोग भी कारगर रहा।

कई बार सरकार में आने जाने के घटनाक्रमों ने मायावती को एक और प्रयोग करने पर विवश किया। उन्होने 'कुछ' सवर्णों को भी साथ लेने की सोची, लेकिन जाहिर है कि ऐसा करते हुए उन्हें अपने और अपने नेता कांसीराम के गढ़े हुए जुमलों को निगलना पड़ा जिसने उन्हें असहज बनाये रखा । पिछले चुनावों में बसपा की स्थिति उस व्यक्ति की थी जो अपनी

हाशिये का हस्तक्षेप

मायावती की जीत को हाशिये का हस्तक्षेप भी कहा जा रहा है जो कुछ हद तक ही सही है क्योंकि सबसे बड़ी बात हे कि दलित और ब्राह्मणों की जो दशा है उसमें दोनों को मुख्यधारा या हाशिये पर एक ही साथ मान लेना भयंकर भूल है। साफ शब्दों में, यदि माना जाए कि दलित हाशिये पर है तो इसका अर्थ यह हुआ कि अद्यतन सामाजिक ढॉचे पर सवर्णों का वर्चस्व है जिसमें ब्राह्मण भी शामिल हैं। दूसरी तरफ यदि सवर्णों को हाशिये पर माने तो यह अर्थ हुआ कि बाकी सभी यानी दलित एवं पिछड़ा वर्ग मुख्यधारा में हैं। इसलिए, दलित-ब्राह्मण गठजोड़ की जीत को हाशिये का हस्तक्षेप कहना अर्ध सत्य है, पूरा नहीं।

इसके आलोक में देखें तो सामाजिक कीमियागरी हाशिये के कुछ तत्वों की मुख्यधारा के कुछ तत्वों और मुख्य धारा के कुछ तत्वों को विभिन्न अनुपात में जोड़कर प्रयोग करने और उनके सर्वाधिक फलदायी संबंध को अंगीकार किए जाने का नाम है। इसका खतरा यह है कि यह चुनाव जैसे तात्कालिक महत्व की चीज पर केन्द्रित है और परिणामों के अनुकूल या प्रतिकूल होने के साथ तत्क्षण बदल सकता है। इसके बरअक्स, सामाजिक अभियांत्रिकी एक सतत् प्रक्रिया है जो मुख्यधारा को विस्तृत और हाशिये को सुनिश्चित करने की तरफ अग्रसर रहती है जिसकी आदर्श स्थिति में कोई व्यक्ति हाशिये पर नहीं रहेगा, सभी मुख्यधारा में रहेंगे।

27/36

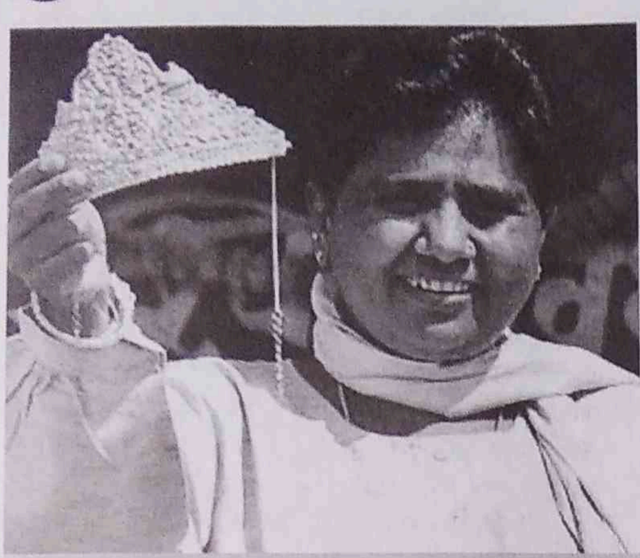

मायावती की जीत के अन्य अर्थ

इसका एक अर्थ तो यह है कि अवाम न तो त्रिशंकु विधान सभा चाहता है, न बार-बार के चुनाव चाहता है और न ही "कहीं का सूत कहीं का रोड़ा" जैसे भानुमती का कुनबा अर्थात् बेमेल गठबन्धन की सरकार चाहता है। यह जनतंत्र के लिए शुभ संकेत है।

दूसरा यह कि आम आदमी सत्ताधारी दल से सीधे मुखातिब होना चाहता है ताकि अगले चुनाव तक इसे अपनी कार्य प्रणाली के मुताबिक काम करने का अवसर देकर इसे अधिक जबाबदेह बनाये। यह मतदाता की परिप1वता का प्रतीक है। आम आदमी लटके-झटके नहीं, ईमानदार कोशिश चाहता है। तीसरा अर्थ यह भी है कि मुलायम ने पानी की तरह पैसा बहाया, दरवेश की तरह सब को मुक्त हस्त सुविधाएं, सेवाएं आदि लुटाकर संतुष्ट करने और, इस प्रकार, वोट बैंक मजबूत करने की कोशिश की, मगर हारे। अतः मायावती भी यदि अपने इरादों में ईमानदार न रहे तो उनकी अगली गति मुलायम से भिन्न न होगी। कुल मिलाकर समस्त राजनैतिक दलों को यह एक चेतावनी है।

जमीन खोने की आशंका और नयी जमीन अख्तियार करने की उत्कंठा के बीच झूल रहा हो। बहरहाल, यह प्रयोग भी सफल होते देख इस बार बसपा नेत्री ने एक और प्रयोग किया-खुलकर ब्राह्मणों को साथ लेकर चलने की बात की, और अपना विश्वास जमाने के लिए उन्होंने न सिर्फ मनुवाद की अपनी अवधारणा बदली बल्कि आरक्षण को विपन्न ब्राह्मणों का तिलक, निर्धन बनियों का तराजू और कमजोर ठाकुरों की तलवार बनाने का जवाब भी दिखाया। नतीजे गवाह हैं कि यह कीमियागरी भी काम आई।

मायावती ने अब तक जो किया है वह कीमियागरी है, इसको दो बातों से समझ सकते हैं। एक तो यह कि यदि 'मनुवाद' की नयी अवधारणा राजनीतिक रूप से फलदायिनी न होती तो इस चुनाव के कुछ ही दिनों बाद मायावती को फिर से ब्राह्मणों आदि को गाली देते सुने जाने की पूरी संभावना थी-यानी प्रयोग था सफल हुआ तो वाह-वाह नहीं तो फिर कोई और प्रयोग, और कुछ नहीं तो पुराना आजमाया गया प्रयोग ही सही। यह कीमियागरी है जो सिर्फ ऐसा प्रयोग चाहती है जो एक खास उद्देश्य हेतु एक खास उत्पाद दे सके और, विपरीत परिणामों वाले प्रयोगों को बार-बार करना नहीं चाहती। दूसरी बात यह कि इस प्रयोग के पीछे जनसंख्या का प्रतिशत मुख्य प्रेरक बल है यानी उतने लोगों को रिझाने वाली बातें करो जो सत्ता प्राप्त करा सकें। यही कारण है कि बसपा द्वारा प्रचारित सर्वजन समाज की अवधारण में पिछड़े वर्ग का प्रतिनिधित्व अपेक्षाकृत कम ही है। बसपा की यह कल्पना सर्वजन समाज कम दलित-ब्राह्मण गठजोड़ अधिक दिखती है जिसे आधुनिक भाषा में मैरिज ऑफ कन्वीनिएन्ससुविधा से प्रेरित शादी कहा जाता है। समाजी कीमियागरी के सर्वथा विपरीत, सामाजिक अभियांत्रिकी सामाजिक समता एवं समरसता को समर्पित एक लोक कल्याणकारी विधिशास्त्री संकल्पना है।

सामाजिक अभियांत्रिकी क्या है?

सामाजिक अभियांत्रिकी एक विधि शास्त्रीय संकल्पना है जिसके जनक महान विधि-शास्त्री और हार्वर्ड विश्वविद्यालय अमेरिका में विधि संकाय के तात्कालीन अध्यक्ष डीन रास्को पाउण्ड माने जाते हैं। पिछली सदी की तीसरी दहाई के प्रारंभ में ही डीन पाउंड ने येल विश्वविद्यालय में अपनी एक व्याख्यान-माला के दौरान यह खूबसूरत परन्तु क्रान्तिकारी सिद्धान्त प्रस्तुत किया। उन्हीं के शब्दों में:-

"आज के कानून को समझने के उद्देश्य से, मैं कानून की ऐसी तस्वीर से संतुष्ट हो जाऊँगा जिसमें मानवीय आवश्यकताओं के संपूर्ण निकाय के अधिकाधिक भाग की पूर्ति न्यूनतम भाग की बलि देकर प्राप्त की जाती है- - - वर्तमान उद्देश्य से मैं विधिक सिद्धान्त में मानवीय आवश्यकताओं की अधिक व्यापक मान्यता एवं पोषण के रिकार्ड से संतुष्ट हूँ। सामाजिक हित की एक अधिक प्रभावी प्राप्ति, कचरे का एक सतत रूप से अधिक पूर्ण एवं प्रभावकारी ढंग से निस्तारण और जीने के सामानों के मानवीय उपयोग में घर्षण को निवारण - - - - संक्षेप में, सतत रूप से एक अधिक प्रभावकारी सामाजिक अभियांत्रिकी।"

यहाँ घर्षण से अभिप्राय विभिन्न हितों के परस्पर संघर्ष से हैं, और कचरे का अर्थ ऐसे हितों से है जो संरक्षित न हो सके और बेकार या अनुपयोगी या निरर्थक हो गये। उन्नीसवीं सदी के महान जर्मन विधि-शास्त्री रूडोल्फ वान झेरिंग, जिन्हें आधनिक समाज शास्त्रीय विधि-शास्त्र का जनक माना जाता है, ने यह सिद्धान्त दिया कि समस्त मानवीय क्रियाओं के पीछे कोई न कोई उद्देश्य होता है और विधि एक मानवीय क्रिया है इसलिए इसका भी एक उद्देश्य होना चाहिए। झेरिंग ने यह भी कहा कि हितों को मुख्यतः व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रीय हितों के रूप में विभाजित किया जा सकता है; और ये क्रमशः अधिक वरीयता प्राप्त माने जाएंगे। अर्थात्, व्यक्तिगत हितों की बलि देकर भी सामाजिक हित, और सामाजिक हितों की बलि देकर भी राष्ट्रीय हित पोषित होने चाहिए। इस सिद्धान्त में आलोचकों को फासीवाद की बू आई 1योंकि उनके मुताबिक कोई तानाशाह राष्ट्रीय हितों की दुहाई देकर व्यक्तिगत या सामाजिक हितों की कुर्बानी ले सकता है।

अमेरिकी विधि शास्त्र की सामाजिक विचारधारा के प्रणेता माने जाने वाले पाउण्ड ने उक्त सिद्धान्त को परिमार्जित करके सामाजिक अभियांत्रिकी का सिद्धान्त दिया जिसमें यह कहा गया कि किसी भी दूसरे हित के नाम पर किसी हित की संपूर्ण बलि नहीं दी जानी चाहिए अर्थात् कचरा कम से कम

होना चाहिए, विभिन्न हितों में टकराव कम से कम होना चाहिए, और सभी हितों के पारस्परिक समन्वय या उन्नयन का उद्देश्य समाज का एक सार्थक ढाँचा खड़ा करना होना चाहिए। जिस तरह कुशल अभियंता वह होता है जो सर्वाधिक कच्चे माल का उपयोग इमारतें/पुल आदि बनाने में करता है और कम से कम समान बेकार जाने देता है उसी तरह सफल विधि निर्माता वह है जो विभिन्न हितों में महत्तम समन्वय लाकर राष्ट्र निर्माण करें और कम से कम हितों की बलि दे। समाज के निर्माण में अभियांत्रिकी से तादात्म्य स्थापित करने के कारण यह सिद्धान्त सामाजिक अभियांत्रिकी या सोशल इंजीनियरिंग के नाम से विख्यात हुआ।

यहाँ यह कहना आवश्यक है कि भारत का संविधान पाउण्ड के दर्शन के सर्वथा अनुरूप है क्योंकि यह एक तरफ मौलिक अधिकारों पर प्रतिबंध की अनुमति देता और दूसरी तरफ अनुच्छेदों १४, १५ और १६ के माध्यम से संरक्षणात्मक भेद-भाव प्रोटेक्टिव डिस्क्रिमिनेशन का भी प्रावधान करता है। इस तरह उक्त अनुच्छेद सामाजिक आभियांत्रिकी के विभिन्न औजारों की तरह है जिनका उद्देश्य भारतीय समाज के विभिन्न विरोधी एवं प्रतिस्पर्द्धी हितो का ताल-मेल करना है। हालांकि पिछले सत्तावन वर्षों में अधिकतर अवसरों पर हमारी सरकारों ने इन औजारों का प्रयोग समाज को स्वस्थ बनाने के लिए किया है या जख्मी करने के लिए, यह ठीक-ठीक कहना मुश्किल है। बहरहाल, इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता पाउण्ड के सिद्धान्त ने अमेरिका जहाँ गोरे काले मे भेद-भाव होता था और भारत जहाँ सामाजिक विसमताएं जड़ जमा चुकी थीं सहित कई विकसित एवं विकासशील देशों के नीति-निर्माताओं को प्रेरित करके इन देशों मे क्रांतिकारी सामाजिक परिवर्तनों की आधारशिला रखी है।

भारतीय राजनीति की नयी दिशा

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, भारतीय राजनीति का आधार वाक्य भारत का संविधान है जिसमें सामाजिक अभियांत्रिकी का स्पष्ट प्रभाव दिखता है। परन्तु दुर्भागयपूर्ण यह है कि हमारे राजनेताओं ने कभी भी इसके वास्तविक पहलू पर जोर नहीं दिया और इसे कुछ सीमित राजनीतिक हितों को साधने का यंत्र बनाये रखा। यही कारण है कि हमने एक-एक करके अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछड़ों, और अल्पसंख्यकों को तरह-तरह आरक्षण-संरक्षण से लैस किया और अब विपन्न सवर्णों के साथ भी वही करना चाहते हैं; मगर इस सबके पीछे कोरी राजनीतिक चालबाजी है वरन् कोई कारण नहीं कि इतने सारे हितों के पोषण के बाद भी सामाजिकविद्वेष, कटुता और बिखराव दिन-दिन बढ़ते जाएं। उनके शब्दों में, मानवीय आवश्यक्ताओं की पूर्ति की जो शैली हमारे राजनेता अख्तियार करते हैं- नेहरूसे मनमोहन तक वह हितों के घर्षण एवं बलि की आशंकाओं को और भी बढ़ाती है।

देश लगातार प्रगति कर रहा है, इसे सभी मानते हैं फिर यह कैसे संभव है कि दलितों की, पिछड़ों की, अल्पसंख्यकों की संख्या लगातार बढ़ती जाए, या यह कि उनकी हालत बद से बदतर होती जाय। यदि ऐसा है तो कहीं कानूनों के क्रियान्वयन में खोट है जिसे दूर करने के बजाय हम नित नये-नये बहाने तलाश कर एक या दूसरे वर्ग को आरक्षण या संरक्षण का झुनझुना थमाकर अपने कर्तव्यों की इतिश्री मान लेते हैं। हम अब अगड़ों में पिछड़ों को आरक्षण देने की बात करते हैं, पिछड़ों में अगड़ों क्रीमीलेयर को न देने की बात करते है, मगर एक स्वर से यह नहीं कहना चाहते कि दलित, शोषित, और विपन्न व्यक्ति को हर आरक्षण और संरक्षण दिया जाये चाहे वह जिस जाति या धर्म का हो।

संदेश यह है कि तुच्छ राजनीतिक हितों से उपर उठकर सोचने वाला ही भारतीय राजनीति का पुरोधा बनेगा। इस तरह दलित चेतना का यह नया सुर राजनीतिक दलों को चैतन्य करने, अपने गिरेबान में झॉंकने और देश एवं समाज के विकास हेतु सबको साथ लेकर चलने की ईमानदार कोशिश करने का संदेश देता है। इस स्वर को साधने वाला ही भारतीय राजनीति का नायक बनेगा। दूसरे शब्दों में, उत्तर प्रदेश के चुनाव परिणाम स्पष्ट संकेत दे रहे हैं कि भारतीय राजनीति की नयी दिशा सोशल इन्जीनियरिंग की दिशा है जिसके लिए सोशल कीमियागरी एक सीमित हद तक तो साधन बन सकती है मगर आखिर तक नहीं। कहा जा रहा है कि मायावती की निगाहें दिल्ली पर हैं। यदि ऐसा है तो मायावती को भी सोशल कीमियागरी से ऊपर उठना पड़ेगा और सोशल इंजीनियरिंग के सिद्धांत को आत्मसात करना पड़ेगा, ताकि आज जो मुख्यधारा में है वह कल हाशिये पर न चला जाए क्योंकि देश सबका है तो मुख्यधारा में रहने का हक भी सबको है। हमें यह याद रखने की जरूरत है कि सामाजिक समता-जो सोशल इन्जीनियरिंग का अभीष्ट है- सबको साथ लिए बगैर नामुमकिन है।

प्रवक्ता, विधि संकाय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय।

केन्द्र में सत्ता मिली तो नई अर्थ नीति लाएगी बसपा

संप्रग सरकार से मधुर रिश्तों के बाद भी उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री मायावती को उसकी विदेश नीतियां पसंद नहीं। उन्होंने कहा कि सता मिलने पर बसपा पूरे देश में नई आर्थिक नीतियां लाकर समाज के कमजोर वर्गों के उत्थान के लिए काम करेगी। उन्होंने अपने सोशल इंजीनियरिंग फार्मूले से हिमाचल में भी सरकार बनाने का दावा किया। यूपी सरकार के कैबिनेट मंत्री सतीश चंद्र मिश्रा का उदाहरण देते हुए मायावती ने कहा कि बसपा जातिवाद नहीं बल्कि सभी जातियों के लागों को साथ लेकर चलने वाली पार्टी है। अलबत्ता यूपी में बसपा की सरकार पिछड़े रह गए लोगों के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए वरीयता जरूर दे रही है। उन्होंने भाजपा और कांग्रेस से लोगों को सावधान किया और कहा कि हिमाचल की जनता को उत्तर प्रदेश की जनता से सबक लेना चाहिए। मायावती ने कहा कि केंद्र और उद्योगपतियों के हिसाब से आर्थिक नीतियां तैयार की जा रही है। चुनाव के दौरान उन सरकारों को चलाने वाली पार्टीयां पूंजीपतियों के पैसों को पानी की तरह बहाती हैं। लेकिन, बसपा के कार्यकर्ता अपने खून पसीने से चुनाव लड़ते हैं। सत्ता मिलने पर बसपा पूरे देश में नई आर्थिक नीतियां लाकर समाज के कमजोर वर्गों के उत्थान के लिए काम करेगी। उन्होंने कांग्रेस और विधायकी छोड़कर बसपा में आए मेजर विजय सिंह मनकोटिया को पार्टी का प्रदेश संयोजक बनाने की घोषणा की। मायावती ने कहा कि हिमाचल में बसपा की सरकार बनने पर मनकोटिया ही मुख्यमंत्री होंगे। मायावती ने कहा कि भाजपा और कांग्रेस के शासनकाल में अमीर और अमीर तथा गरीब और गरीब होता चला गया। इसलिए बसपा इनमें से किसी पार्टी से समझौता नहीं करेगी।

बागी सिपाही या महान स्वतंत्रता सेनानी

■ अरविंद कुमार सिंह

गतांक से आगे......

शुरुआती दिनों में सिपाहियों की भर्ती की कोई ठोस व्यवस्था नहीं बनी थी ऐसे में बहुत से सिफारिशी लोगों को भी सिपाहियों के कहने पर रख लिया जाता था और ठेकेदार भी सक्रिय थे। फौज में कैंप फालोअर के नाम पर नौकर, व्यापारी, कारीगर, वैश्या, भिश्ती, मेहतर, रसोईया, दर्जी, मोची तथा साईस आदि पदों की भर्ती बाद में शुरू हुई।

अगर पुरानी बगावतों तथा उनको दबाने तरीकों को देखें तो यह साफ हो जाता है कि अंग्रेज आत्मविश्वास से भरे थे और उनको 1857 में किसी सैनिक बगावत की आशंका नहीं थी जो अंग्रेजी राज को करीब करीब उखाड़ फेंकने वाली थी। पहले की तमाम बगावतों को दबाते रहने से अफसरों की यह धारणा बन गयी थी कि वे जैसा चाहेंगे वैसा ही होता रहेगा। सिपाहियों की धार्मिक भावनाओं से खिलवाड़ करने और उनको बात बात पर गाली देने और अपमानित करने में अंग्रेज अफसरों को आनंद मिलता था। उन दिनों वेषभूषा आदि के लिए नए नियम बने तथा ईसाई मिशनरियों की बढ़ती गतिविधियां भी सैन्य क्षेत्रों में कुछ ज्यादा ही बढ़ने लगी थी। जो सिपाही ईसाई बन जाता था उसको तमाम नए लाभ तथा मनमानी पदोन्नति तक दी जा रही थी, लेकिन देशी सैनिकों को घोषित लाभ देने में आनाकानी होती थी। सैनिकों के साथ संवाद रखना भी अफसर करीब बंद कर चुके थे। संवाद सेतु के नाम पर निहित स्वार्थी बिचौलिया ही रह गए थे।

हालांकि अंग्रेज सैन्य अधिकारी यह जानते थे कि भारतीय सिपाही गोरों से अधिक वीर हैं, पर गोरे और काले सिपाहियों की सुख सुविधा में राजप्रासाद और भिखमंगों की झोपड़ी जितना फर्क आ चुका था। कूच करते देशी सिपाहियों को गोरों की तुलना में दोगुना सामान लादने का आदेश दे दिया। गोरे सिपाही शिकार खेलने जा सकते हैं, पर भारतीय नहीं। और तो और सिपाहियों की लाइन में दस बजे के बाद लाइट नहीं जल सकती थी लेकिन गोरे रात भर रोशनी जला सकते थे। देशी सिपाहियों से कई बार फोकट में कुली मजदूरों का काम भी कराया जाता था। हालत यह थी कि भारतीय सेना के पास स्थायी परिवहन इकाईयां 1884 तक नहीं रही। किराए पर तरह तरह के जानवरों से काम लिया जाता था। सैनिकों को राशन में निर्धारित मात्रा में आटा, दाल, चावल तथा घी दिया जाता था। जबकि ब्रिटिश सैनिकों को मांस मछली की पर्याप्त खुराक और कई अन्य सुविधाएं प्रदान की जाती थी। इसके अलावा भारतीय सैनिकों को दंड देते समय अंग्रेज अफसर इस बात की भी पड़ताल नहीं करते थे कि गलती किसकी है? इकहत्तर रेजीमेन्ट के जवान जालिम सिंह के बारे में यह आरोप लगाया गया कि उसने जाति के प्रति अपमानजनक संबोधन पर सरकार की आलोचना की थी इसी पर उसका कोर्ट मार्शल कर सेवा से बर्खास्त कर दिया गया।

क्यों हुई थी हार

अंग्रेज आत्मविश्वास से भरे थे और उनको 1857 में किसी सैनिक बगावत की आशंका नहीं थी जो अंग्रेजी राज को करीब करीब उखाड़ फेंकने वाली थी। पहले की तमाम बगावतों को दबाते रहने से अफसरों की यह धारणा बन गयी थी कि वे जैसा चाहेंगे वैसा ही होता रहेगा। सिपाहियों की धार्मिक भावनाओं से खिलवाड़ करने और उनको बात बात पर गाली देने और अपमानित करने में अंग्रेज अफसरों को आनंद मिलता था।

लेकिन इतनी सारी अन्याय पूर्ण और भेदभाव परक व्यवस्था के बावजूद गोरे सैनिकों की तुलना में भारतीय सैनिकों का चरित्र ऊंचे दर्जे का बना रहा और उन्होंने अपनी वीरता के तमाम अध्याय लिखे। कई कठिन मौकों पर भारतीय सैनिकों ने अपना राशन पानी तक अंग्रेजों को देकर उनको जिंदा रखा जबकि खुद चावल का माड़ पीकर काम चलाया। इन सारी बातों से असंतोष होना स्वाभाविक था। पर सारे अंग्रेज इससे अनजान थे, ऐसा भी नहीं था। अनहोनी की आशंका हो रही थी। एक अंग्रेज अफसर की यह टिप्पणी उसी पूर्वाभास का संकेत थी–

हमें यह बात एकदम मान लेनी चाहिए कि हर संघर्ष के फलस्वरूप,

हम जिन भारतीय प्रदेशों पर अपनी पताका फहराते जा रहे हैं, उसका कारण हमारी शानदार उपलब्धि नहीं बल्कि एशियाई चरित्र की कमजोरी है। जब हम सिर्फ अपने व्यापार की रक्षा करने या अपमान का जवाब देने मात्र की सोच रहे थे तब हमारी गोद में साम्राज्य के बाद साम्राज्य गिरते गए..... पर यदि भारत की आबादी का बीसवां भाग भी कभी हमारे जैसा योजनाप्रिय या दूरदर्शी हो गया तो हमें उतने ही वेग से वापस लौटना पड़ेगा, जिस वेग से हम बढ़े हैं।

यह एक उल्लेखनीय तथ्य है कि 1857 की बगावत तक अंग्रेज सैनिकों की संख्या में लगातार बढ़ोत्तरी करते जा रहे थे और इसी से अंग्रेज राज का विस्तार हो रहा था। तमाम भारतीय रियासतें छल कपट से भी हड़पी

गयीं। तमाम जगहों पर सैन्य छावनियां बनी और बड़ी सैनिक टुकड़ियां खड़ी की गयीं। जनवरी 1856 में भारत में 48500 यूरोपीय, 265300 देशी सेना तथा 516 तोपें थी। 1857 में बगावत के समय सेना की संख्या कुल 350538 थी। इसमें से बंगाल सेना में 137571 देशी तथा 21432 यूरोपीय सैनिक थे। नियमित तथा अनियमित बंगाल से ना हर तरफ विद्रोह का झंडा बुलंद किया था। तब केवल पंजाब फ्रंटियर फोर्स ही अंग्रेजों के साथ थी।

1857 के विद्रोह की पृष्ठभूमि में जो बातें सामने आ रही थी वे सैनिकों को आर-पार की लड़ाई के लिए प्रेरित कर रही थी। इसी दौरान उनके बीच पल रहे गुस्से को नई राईफलों और कारतूसों ने बढ़ा दिया। नई इनफील्ड राईफलें दे कर पश्चिमी मिलिट्री तकनीक से भारतीय सैनिकों को लैस करने की जब एक तरफा योजना बनी तो कारतूसों में गाय और सुअर की चर्बी होने की बातें भी छिपी नहीं रहीं। अंग्रेज चाहते तो समझदारी दिखा कर आदेश वापस ले सकते थे, पर अतिशय आत्मविश्वास के चलते ऐसा करना जरूरी नहीं समझा। कारतूसों को लेकर अंग्रेज लगातार झूठ बोलते रहे जबकि चर्बी होने की बात सही थी। नए कारतूस को चिकनायी देने के लिए इन पर चर्बी लगायी जा रही थी। सैनिकों को आदेश दिया गया कि वे इन कारतूसों को दांतों से काटकर उपयोग करें। बात लोगों के बीच खूब फैली और जब कोलकाता में एक भंगी ने एक ब्राह्मण सिपाही के हाथ पानी पीने का दुस्साहस दिखा दिया तो आग में घी का काम कर दिया। भंगी ने सैनिक से कहा कि अपनी जाति के घमंड को अपनी जगह रहने दो जल्दी ही तुम्हें गाय और सुअर की चर्बी को अपने दांतों से काटना पड़ेगा। यह बात अफसरों तक पहुंची तो उन्होंने इसे गलत बताया। जबकि यही सच था। फिर क्या था, हिन्दू और मुसलमान सैनिकों ने इस मुद्दे को अपने धर्म की रक्षा से जोड़कर नई तैयारी शुरू कर दी। तत्कालीन विवरणों से पता चलता है कि चिकना तत्व गाय और सुअर की चर्बी से ही बना था और सिपाहियों की आस्था और धार्मिक को पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया गया था। इसी दौरान सिपाहियों में देहात में फैली उस भविष्यवाणी की चर्चा ने रंग जमा रखा था कि पलासी की लड़ाई के 100 साल होने जा रहे हैं और 1857 में भारत में अंग्रेजी राज्य समाप्त हो जाएगा। हालांकि अंग्रेजों द्वारा की गई तमाम खोजबीन और पड़ताल से इस बात की पुष्टी नहीं हो सकी कि 1857 का विद्रोह पूर्व नियोजित था। थोड़े बहुत सूत्र ऐसे मिले हैं जो सैनिकों के बीच में असंतोष फैलाने में लगे थे, पर इससे यह तथ्य स्थापित नहीं हो सका। फिर भी यह कहा जाता है कि देश भर में 31 मई को विद्रोह शुरू करने की योजना बनी थी। पर 29 मार्च 1857 को परेड के समय बैरकपुर छावनी में 34वीं इंफैंट्री के क्रांतिवीर सैनिक मंगल पांडे ने चर्बी मिले कारतूसों को चलाने से इंकार कर अपनी बंदूक से बगावत का बिगुल बजा दिया तो फिर नई हलचल शुरू हो गई। तब

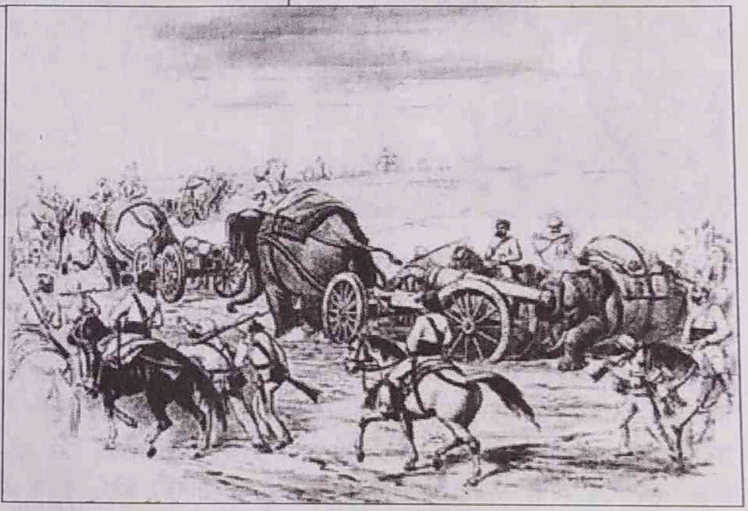

बरहामपुर तथा बैरकपुर में 19 और 34वीं नैटिव इंफैंट्री ने बगावत की। मगर मंगल पांडे को 8 अप्रैल 1857 को फांसी दे दी गई और बाकी सैनिक के हथियार जमा कराने के बाद दोनों पलटनें आनन-फानन में ही भंग कर दी गई। अप्रैल में ही कई अन्य सिपाहियों को मृत्युदंड दिया गया, जबकि मई में बंगाल घुड़सवार सेना के 85 सैनिकों का कोर्ट मार्शल कर दस वर्ष की सख्त सजा दी गई।

ऐसी मान्यता है कि अजीमुल्लाह खां 31 मई के विद्रोह का मुख्य रचनाकार था। पर मंगल पांडे की बगावत के बाद सारे भारत में 31 मई

को विद्रोह करने की उसकी योजना पर पानी फिर गया। इसके बाद 10 मई 1857 को मेरठ के सभी दस्तों ने विद्रोह का बिगुल फूंक दिया और आजादी पहली जंग मेरठ की सरजमीं से उठी तो उसे दबाना अंग्रेजों को भारी पड़ा। मेरठ उस दौरान उत्तर भारत का सबसे बड़ा सैनिक स्टेशन था और वहां बड़ी संख्या में यूरोपीय ही नहीं घोड़े, सवार, पैदल तथा तोपें सभी बड़ी संख्या में थी। उन दिनों मेरठ छावनी का बाबा औघड़ नाथ मंदिर (मौजूदा काली पलटन मंदिर) क्रांति वीरों का प्रमुख केन्द्र बना हुआ था। 10 मई को आजादी का बिगुल बजते ही मारों फिरंगी नारे के साथ बंदूकें गरज उठी। कैप्टन फिरनेस क्रांति वीरों का पहला शिकार बना। इसके बाद तमाम अफसरों को चीर डाला गया और तमाम फिरंगी अफसर नौकरों तक से दया की भीख मांगते दिखे। यहां विद्रोह तीन रेजीमेंटों ने किया और उन्होंने कैदी सैनिकों को छुड़ाने के बाद दिल्ली कूच का फैसला किया। सैनिकों के पक्ष में जब बड़ी संख्या में ग्रामीण भी आ खड़े हुए तो फिर क्रांति की इस आग को फैलना ही था।

में मुरादाबाद, बदायूं, आजमगढ़, सीतापुर, नीमच, झांसी, बनारस, कानपुर, फतेहपुर, नौगांव, ग्वालियर तथा फतेहगढ़ विद्रोह का केन्द्र बन गए। 26-27 जून को कानपुर को जीत कर इन सैनिकों ने नाना साहब को बागडोर सौंप दी। जुलाई में कुंवर सिंह ने सैनिकों की मदद से आरा जीत लिया और बहुत से फैसले हुए।

17 अगस्त 1857 को सर कोलिन कैंपवेल के सेना अध्यक्ष बनने के बाद अंग्रेज नई रणनीति बनाकर पूरी तैयारी से जब मैदान में जुटे और साम दाम दंड भेद सारी रणनीति अपनायी तभी उनको थोड़ी सफलता मिलने लगी। 20 सितंबर 1857 को बहादुर शाह जफर को भी धोखे से पकड़ा गया और दिल्ली पर कब्जे के बाद लखनऊ 21 मार्च को अंग्रेजों के कब्जे में आ सका। यह बगावत जो 1857 से 18 अप्रैल 1859 को तात्या टोपे के फांसी दिन तक मानी जाती है, वास्तव में सैनिकों की आहुति पर ही खड़ी हुई थी।

पंजाब में मियांपुर में उस समय सबसे बड़ी सैनिक छावनी थी और

1843 में सिंध जीत के बाद बंगाल के फिरोजपुर दस्तों को उस इलाके रक्षा का दायित्व मिला था पर उनका भता एकाएक बंद हो गया तो नाराज सैनिकों ने विद्रोह कर दिया। इसकी जगह वहां मद्रासी सैनिक पहुंचे तो यह जानने के बाद की उनको भी भत्ता नहीं मिलेगा, उन्होंने भी विद्रोह का रास्ता चुना।

मेरठ के दो हजार सैनिक दिल्ली चलो का नारा लगाते हुए जब दिल्ली पहुंचे तो उन्होंने बहादुर शाह जफर को अपना नेता चुनकर क्रांति की बागडोर उनको सौंप दी। मेरठ के सैनिकों की यह गाथा सैन्य इतिहास में भले नजरअंदाज कर दी जाए पर प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में यह स्वर्णाक्षरों में अंकित है। 11 मई को इन सैनिकों ने दिल्ली में स्वतंत्रता का झंडा फहरा दिया और अंग्रेजों के तमाम प्रयासों के बावजूद 21 सितंबर 1857 तक दिल्ली अगर आजाद रही, तो इसके पीछे इन सैनिकों और स्थानीय ग्रामीणों की जांबाजी ही प्रमुख कारक थी।

मेरठ का सैनिक विद्रोह देखते-देखते कब जन विद्रोह बन गया यह लोग समझ नहीं सके पर इस विद्रोह की रीढ़ सैनिक ही बने थे। तथ्य बताते हैं कि केवल बंगाल सेना के एक लाख से ज्यादा सिपाही बगावत में शामिल हो गए थे। विद्रोह की लपटें मेरठ से तमाम दुर्गम इलाकों तक पहुंच गई थी। 13 से 31 मई के बीच में फिरोजपुर, मुजफ्फरनगर, अलीगढ़, नौशेरा, इटावा, मैनपुरी, रुड़की, एटा, नशीराबाद, मथुरा, लखनऊ, बरेली और शाहजहांपुर में यह चिंगारी फैल गई। जून के महीने

सैनिकों ने तय किया था कि मियांपुर की बागी सेनाएं लाहौर किले को अपने कब्जे में सबसे पहले लेंगी और इसके बाद पेशावर, अमृतसर,फिल्लोर,और जालंधर की पलटने बगावत करेंगी पर मियांपुर की पलटन का कमांडर राबर्ट माउंट गुमरी को टेलीग्राम से मेरठ की खबर पहले ही मिल चुकी थी और वह काफी सतर्क हो गया था। इसी नाते उसने 23 मई को परेड में गोरे सवारों सहित तोपों को लगा सबके हथियार रखवा लिए और इसके बाद लाहौर किले में भी ऐसी ही पुनरावृत्ति हुई। पंजाब तो बच गया पर फिरोजपुर में सैनिक बगावत है गई। पेशावर में तो भारी तोपें लगाकर 150 सैनिकों को मारा गया। तमाम सैनिकों को सिंधु नदी में जल समाधि लेनी पड़ी और खाली हाथ अपने घर जा रहे सैनिकों की भी हत्या की गई। अजनाला में तो 26 नंबर की देशी पलटन के 500 सैनिकों को मार डाला गया। 9 जून को जालंधर छावनी की देशी पलटन ने विद्रोह के बाद दिल्ली कूच किया और फिल्लौर होते वहां पलटन के साथ लुधियाना की ओर बढ़े तो महाराजा नाभा ने इनका मुकाबला किया। अंग्रेजी सेना कमांडर विलियम्स यहीं मारा गया।

क्रमशः

अतीत-बाधा

■ एंटन चेखव

चलो प्यारे बच्चों, कामतीस बोली अब तुम्हारे सोने का वक्त हो गया। तीनों बच्चे यानी वह लड़का और दोनों लड़कियां उठे और उन्होंने अपनी दादी को बारी-बारी से चूमा। इसके बाद वे फादर क्यूर के पास गए। उन्हें शुभरात्रि कहा। फादर क्यूर हर गुरुवार की तरह आज भी हवेली में खाना खा रहे थे।

एब्बे माउद्युत ने दोनों बच्चियों को प्यार से अपनी गोद में बिठाया और काले चोगे में ढकी अपनी लंबी बांह में दोनों को छिपा लिया। दोनों बच्चियों के सिर को दुलार से अपनी ओर खींचते हुए उनके माथों पर प्यार भरा लंबा चुंबन अंकित किया।

इसके बाद उन्होंने बच्चों को अपनी गोद से उतारा और तीनों बच्चे कमरे से बाहर चले गए। तुम्हें बच्चे बहुत प्यारे लगते हैं न फादर क्यूर? कामतीस बोलीं। बहुत, मैडम।

बूढ़ी स्त्री ने अपनी आंखें उठाकर फादर के चेहरे को देखा, और क्या इस तरह अकेला रहना तुम्हें बहुत कठिन नहीं लगता? लगता है, पर कभी-कभी।

फादर चुप हो गए और थोड़ी देर खामोश रहने के बाद बोले, लेकिन रोजमर्रा के जीवन के लिए मैं नहीं बना था। पर तुम इस बारे में जानते ही क्या हो फादर? ओह, मैं बहुत अच्छी तरह जानता हूं। मुझे तो पादरी ही होना था। मैंने अपना पेशा मुनासिब तरीके से चुना है।

कामतीस अभी भी उनकी ओर देख रही थी। पर फादर क्यूर आप कुछ तो बताएं। आप थोड़ा सा तो बताइए कि आखिर आप उस सब को कैसे त्याग सके जो हम संसारियों को अपने जीवन में इतना प्यारा लगता है। यह ऐशो आराम, ये दिलासा देने वाली चीजें, यह सबकुछ। आखिर क्यों आप विवाह करने और घर बसाने के सामान्य रास्ते से दूर हो गए? आप न तो रहस्यवादी लगते हैं, न आप सनकी लगते हैं। ऐसा भी नहीं है कि आपको खुशी और आनंद से परहेज हो। आप निराशावादी भी नहीं हैं। फिर क्या हो गया था आपको? क्या घटा था आपके साथ? क्या कोई गहरा दुख था आपको कि ऐसी शपथ लेनी पड़ी?

एब्बे माउद्यूत उठे और अंगीठी की तरफ चले गए। गांव के उस पादरी के भारी जूते आग की लपटों में चमकते रहे। वे अभी भी जैसे कुछ संकोच में थे और यह सवाल टालना चाहते थे। फादर लंबे कद के सफेद दाढ़ी वाले बूढ़े आदमी थे। पिछले बीस साल से वे संत अंतोनी डु रोसर और आस पास के जनपद के पादरी थे। किसान उनके बारे में अक्सर कहते, वे वास्तव में महान आत्मा हैं।

वे भले इंसान थे, दयालु, नरम दिल, मिलनसार और उदार। अपने समय को विभाजित किए रहते थे। वे हमेशा हंसने को तैयार रहते और एक स्त्री की तरह रोने को भी।

बूढ़ी कामतीस डि सेविल्ले ने अपने बेटे और बहू को एक के बाद एक खो दिया था और अब वह अपने पोते-पोतियों की देखभाल करने रोसर की अपनी हवेली में चली आयी थी। फादर क्यूर उसे बहुत अच्छे लगते और वह उनके बारे में कहा करती कि उनका हृदय बहुत विशाल है।

फादर हर गुरुवार को आते और अपनी शाम इस हवेली में गुजारते। वह और कामतीस आपस में बहुत अंतरंग हो गए थे। दोनों में वह सच्ची और खुले दिल की मैत्री थी, जो केवल बूढ़े लोगों में ही संभव होती है। उन दिनों के सोचने का तरीका इतना समान था कि अपने विचारों को शब्दों में ढालने की शायद ही उन्हें जरूरत पड़ती थी। दोनों बहुत भले थे और अनपढ़ और दयालु लोगों जैसी सादगी से भरे हुए थे। वह फिर आग्रह करते हुए बोली फादर क्यूर अब समय आ गया है कि आप अपना कन्फेशन मुझसे करो। पादरी ने अपनी बात को दोहराया, मैं सामान्य ढंग के जीवन के लिए नहीं बना था। भाग्य से मुझे जल्दी ही इस बात का पता चल गया और अकसर मुझे इसके प्रमाण भी मिलते रहे कि मेरा ऐसा सोचना ठीक था। मेरे माता-पिता वर्डियर्स में बिसाती के सामान के थोक विक्रेता थे और काफी सम्पन्न थे। वे मुझे लेकर महत्वाकांक्षी थे। उन्होंने बचपन से ही मुझे बोर्डिंग स्कूल में भेज दिया था। लोग यह समझते नहीं कि घर से दूर भेज दिए जाने पर स्कूल में एक बच्चा कितने भीषण रूप से अकेला रह जाता है। हो सकता है कि कुछ के लिए ऐसी प्रेमविहीन जिंदगी लाभप्रद साबित होती हो पर कुछ बच्चों के लिए तो वह विनाशकारी होती है। लोग जितना सोचते हैं बच्चे उससे कहीं अधिक संवेदनशील होते हैं। जिन्हें वे प्यार करते हैं उनसे दूर ले जाकर उन्हें बहुत छोटी उम्र में इस तरह से बंद कर दिया जाता है तो वे अतिरिक्त संवेदनशील हो जाते हैं और यह बात उनकी आंतरिक दुनिया में उथल-पुथल मचा देती है। वे मानसिक रूप से असामान्य और खतरनाक हो जाते हैं। मैं खेलता कूदता नहीं था। मेरा कोई दोस्त नहीं था। सारे समय मुझे भयावह रूप से घर की याद आती थी। रात को बिस्तर पर मैं रोता था। और हर वक्त घर की बातों को याद करने की कोशिश करती रहता था। बहुत छोटी-छोटी मामूली सी चीजों और घटनाओं को याद करता रहता था। जो कुछ भी पीछे छूट गया था मैं उसे अपने दिमाग से निकाल ही नहीं पाता था। मैं धीरे-धीरे अधीर और कातर होता चला गया। बहुत मामूली-मामूली सी मुश्किलें भी मुझे असहनीय त्रासदी की तरह लगती। परिणाम यह हुआ कि मैं हर वक्त उदास, आत्मकेंद्रित, अकेला और मित्रविहीन रहने लगा। यह बढ़ता हुआ मानसिक दबाव मेरे अचेतन पर एक खास ढंग से असर करने लगा। आप जानती ही हैं कि, बच्चों के स्नायु बड़ी जल्दी प्रभावित हो जाती हैं। बच्चे बड़े होकर जब तक इस व्यवहारिक दुनिया के लिए पुख्ता नहीं हो जाते तब तक उनके जीवन को बचाने के लिए बहुत ज्यादा सतर्क रहना पड़ता है। पर कौन इस बात की परवाह करता है कि स्कूल में कुछ बच्चों के लिए यह अनचाहा दबाव उन्हें इतनी बड़ी मानसिक यातना दे सकता है जितना कि बाद में किसी दोस्त की मृत्यु का आधार। कौन सचमुच समझता है कि कुछ बच्चों के मस्तिष्क पर बहुत मामूली बातों का भी इतना गहरा असर पड़ सकता है कि वह उसकी भावनाओं को पूरी तरह से अस्त-व्यस्त कर दे और इतना बड़ा नुकसान हो जाए कि उसकी भरपाई करना भी संभव न हो। यही मेरे मामले में हुआ। घर की याद मुझमें इतनी ज्यादा समा गई की मेरा पूरा

जीवन एक लम्बी यातना में बदल गया। मैंने किसी से कुछ नहीं कहा। कभी कोई जिक्र नहीं किया। मेरी स्वाभाविक संवेदना धीरे-धीरे इतनी तीव्र हो गई की वह लगभग एक रोग बन गई। मेरा दिमाग एक खुले घाव की तरह था। छोटी सी भी कोई बात होती थी तो वेदना की चुभन उभर आती थी और मैं बहुत अधिक व्याकुल हो जाता था। इसका मुझ पर स्थायी प्रभाव पड़ा। सचमुच वे खुशनसीब हैं जिन्हें कुदरत ने मोटी चमड़ी दी है। और कोई चीज उन्हें छूती नहीं है। मैं सोलह वर्ष का हो गया था। हर चीज मुझे तकलीफ देती थी और इस एक बात ने मुझे असामान्य रूप से संकोची बना दिया। मैं जानता था कि किसी आकस्मिकता या भाग्य के झटके के खिलाफ खुद को बचाने के लिए कुछ नहीं है मेरे पास और मैं तमाम संपर्कों संबंधों से बचता रहा। स्कूली जीवन की तमाम गतिविधियों से कटा रहा। मैं लगातार आत्मरक्षा में लगा रहा, जैसे सचमुच कोई अज्ञात पर हमेशा प्रत्याशित दुर्भाग्य मेरा लगातार पीछा कर रहा था। सार्वजनिक रूप से मुझसे कुछ बोला नहीं जाता था। न मैं कुछ कर पाता था। लगातार यह बात दिमाग पर हावी रहती थी। जीवन एक संग्राम है, एक घनघोर संग्राम और इसमें मुझे भीषण आघात और घाव सहने हैं और यह आघात और घाव केवल पीड़ादायक ही नहीं घातक भी हैं। सामान्य लोगों में कल की खुशहाली की कोई उम्मीद होती है। मैं केवल एक अनजान किस्म के आतंक के बारे में सोचता रहता था। और मैं छिप जाना चाहता था। मैं संघर्ष से बचना चाहता था। जिसमें मुझे केवल हारना था और खत्म होना था। जब पढ़ाई खत्म हुई तो मुझे छह महीने की छुट्टी मिली। जिसमें मुझे अपनी भविष्य की राह चुननी थी। इसी बीच एक बहुत साधारण सी घटना घटी। जिससे मैं स्वयं को समझ सका और इसने मेरे सामने मेरी अस्वस्थ मानसिक स्थिति भी स्पष्ट हो गई। मैंने अपने खतरे को पहचाना और इससे बचने का अपना मन बना लिया। वर्डियस पठार में एक छोटा सा शहर है और इसके चारों तरफ जंगल है। मेरे माता-पिता का घर मुख्य सड़क पर था। जिस घर की मुझे इतनी याद आती थी और जिसके लिए मैं इतना ज्यादा तड़पा करता था, अब मैं अधिकतर समय उसी घर से बाहर बिताता। मैं खेत खलिहानों की तरफ निकल जाता, भटकता रहता, दिवास्वप्न देखता रहता। मेरे सपनों में व्यवधान पहुंचाने वाला कोई नहीं था। मां-बाप को अपने काम धंधे से ही फुर्सत नहीं थी। वे मेरे भविष्य की चिन्ता करते थे पर अपने कामकाज की बातों और मेरे लिए भविष्य में उपलब्ध पेशों के अलावा उनके पास करने को कोई बात नहीं थी। वे मुझे प्यार करते थे पर उन व्यवहारिक लोगों की तरह जिन पर दिल की जगह दिमाग हावी रहता है। मैं अपने ही विचारों की कोठरी में कैद रहता जहां आतंक और व्याकुलता से कोई मुक्ति नहीं थी।

बहरहाल एक दिन दिन भर भटकते रहने के बाद मैं जल्दी-जल्दी घर जा रहा था कि देर ना हो जाए। तभी मैने देखा एक कुत्ता तेजी से मेरी तरफ दौड़ा चला आ रहा है। वह छोटा सा, दुबला सा लाल रंग का स्पेनियल कुत्ता था। जिसके लम्बे घुमावदार कान थे। वह दस गज की दूरी पर रुक गया। मैं भी रुक गया। कुत्ता अपनी पूंछ हिलाने लगा और धीरे-धीरे भयभीत सा मेरी तरफ बढ़ने लगा। लगा मानो वह कोई याचना कर रहा है और अपना सिर एक तरफ से दूसरी तरफ घुमा रहा था। मैंने उससे कुछ कहा वह धीरे-धीरे पेट के बल मेरी तरफ रेंगने लगा। वह इतना असहाय इतना दयनीय, इतना मर्मस्पर्शी लग रहा था कि उसे देखकर मेरी आंखों में आंसू आ गए। मैं उसकी तरफ बढ़ा। और वह भाग खड़ा हुआ। पर जल्दी वह दुबारा लौट आया। मैं घुटने के बल बैठ गया और कोमल स्वर में उससे बोलने लगा। जिससे मेरे नजदीक चला आया। जब वह और करीब आया तो मैंने धीरे से उसे सहलाया और उसके डर को दूर किया। कुत्ते में साहस लौटा और धीरे-धीरे वह सीधा खड़ा हो गया। उसने एक पंजा मेरे कन्धे पर रखा और मेरा चेहरा चाटने लगा। वह मेरे पीछे-पीछे घर चला आया। यह पहला जीवित प्राणी था, जिससे मैंने भावना के साथ प्यार किया था क्योंकि उसने भी बदले में प्रेम लौटाया था। इसमें संदेह नहीं कि जानवर से मेरा प्रेम अतिशयोक्ति से भरा हुआ और हास्यास्पद था। मेरे मन में एक अस्पष्ट सा विचार था कि एक तरीके से हम दोनों भाई हैं, दोनों ही अपने जीवन में खो चुके हैं, दोनों के पास खुद को बचाने का कोई तरीका नहीं है। फिर वह कुत्ता मुझे कभी छोड़कर नहीं गया। बिस्तर पर मेरे ही पांव के पास सोता। माता-पिता के विरोध के बावजूद मैं उसे भोजन कक्ष में ही खाने को कुछ देता था और मेरी एकान्त यात्राओं में वह हमेशा मेरे साथ रहा। मैं हमेशा किसी खाई के किनारे रुक जाता और घास पर बैठ जाता। सैम तुरंत दौड़ता हुआ आता और मेरे बगल में या मेरे गोद में आ बैठता। वह मेरे हाथ को सूंघता कि मैं उसे सहलाऊं।

जून के आखिर में एक दिन हम लोग सेंट-पियर-डि-चेवराल की तरफ जाने वाली सड़क पर जा रहे थे। तभी मैंने रेवेरियो की तरफ से एक बस को आते देखा। बस बहुत तेजी से आ रही थी और चार घोड़े तेजी से चौकड़ी भरते हुए उसे खिंच रहे थे। उसका रंग पीला था और चालक घोड़ों पर कोड़े बरसा रहा था। इस सबके कारण बस के पहियों से धूल का एक बगूला उठ रहा था और लगातार पीछे की ओर जा रहा था। अचानक जैसे ही वह बस मुझ तक पहुंची। सैम शायद उसी शोर से भयभीत हो गया और दौड़कर मेरे पास आना चाहता था। बीच सड़क पर वह बस की चपेट में आ गया। घोड़ों में से एक घोड़े के खुर ने उसे रौंद दिया। मैं टांगों के जंगल में कुत्ते को लुढ़कते, लोटते, उठते और फिर गिरते हुए देख रहा था, पूरी बस दो बार बड़े जोर से उछली और अपने पीछे धूल में कुछ तड़पता हुआ छोड़ गयी। वह लगभग दो हिस्सों में कट चुका था, उसका पेट फट चुका था और खून का फौव्वारा छोड़ती हुई अंतड़ियां बाहर लटक गयी थी। उसने फिर उठने और चलने की कोशिश की पर वह सिर्फ अपने आगे के पैर हिला सका। जो जमीन पर रेंग रहे थे। उसका पिछला हिस्सा पूरी तरह मर चुका था। और कुत्ता बेतरह क्रंदन कर रहा था। दर्द से जैसे पागल हो गया था। एक या दो मिनट में वह मर गया। मैं अपनी हालत का बयां नहीं कर सकता कि उसका मुझ पर क्या असर हुआ। एक महीने तक मैं अपने कमरे से बाहर नहीं निकला। पिता बेहद क्रोधित थे कि मैं इतनी छोटी सी बात का इतना ज्यादा तमाशा कर रहा हूं। एक शाम उन्होंने चिल्लाकर कहा, जब तुम्हें वास्तविक दुःख झेलना पड़ेगा, जब तुम्हारे पत्नी या बच्चों की मृत्यु होगी तब क्या करोगे तुम? बिजली की एक कौंध में मुझे सब कुछ समझ में आ गया। मैं जाना कि रोजमर्रा की साधारण तकलीफें मेरी निगाहों में विनाशकारी ले लेती हैं। मैंने देखा कि मेरा गठन ही इस तरह से हुआ था कि मैं हर चीज को जरूरत से ज्यादा महसूस करता था। मैं दुखद प्रसंगों के प्रति जरूरत से ज्यादा नाजुक था, क्योंकि यह मेरी असामान्य संवेदनशीलता की वजह से तीव्र हो जाते थे और जीवन को संज्ञा शून्य कर देने वाला भय मुझे जकड़ लेता था। मेरी शारीरिक इच्छाएं या महत्वाकांक्षाएं नहीं थी इसलिए मैंने

निश्चय किया कि खुशी की संभावनाओं को यातनाओं की निश्चिंतता के लिए त्याग दिया जाए। जीवन बहुत छोटा है, मैं अपना समय लोगों की सेवा में बिताऊंगा, मैं उनके दुखों में उन्हें दिलासा दूंगा और उनकी खुशियों में आनंदित होऊंगा। मैने खुद से कहा कि इस तरह मैं स्वयं को प्रत्यक्ष रूप से महसूस नहीं कर पाऊंगा और मैं इन भावनाओं को उनकी तीव्रता घट जाने पर ही महसूस कर पाऊंगा।

और तुम जानती ही हो कि वेदना अभी भी मुझे कितना अधिक कष्ट देती है और हृदय में कैसी ऐंठन सी उठने लगती है पर मेरे अपने मामले असहनीय यंत्रणा होती वह दूसरों के मामलों में अब सहानुभूति और करुणा की उदात्तता में बदल गयी है। मैं प्रति दिन जिस तरह की तकलीफों को देखता हूं, यदि वे मेरी होती तो मैं कभी उन्हें सह नहीं पाता। यदि मेरे बच्चे की मृत्यु हुई होती तो निश्चय ही मैं भी अपने जीवन का अंत कर लेता और हर चीज के बावजूद अभी भी मेरे भीतर किसी चीज के घटने का इतना अस्पष्ट सा एक डर छिपा हुआ है कि घर की तरफ आते डाकिये को देखकर मेरी हड्डियों में सिहरन दौड़ जाती है, हालांकि अब डरने के लिए कुछ नहीं है मेरे पास।

एब्बे माउद्यूत खामोश हो गए। वे अंगीठी में जलती हुई आग को देखते रहे जैसे वे वहां जीवन कुछ रहस्यों और भेदों को पढ़ रहे हों, उस जीवन के जो वे जी सकते थे, यदि उन्होंने तकलीफों को ज्यादा बहादुरी से झेला होता। वे धीमे स्वर में बोले –मैं सही था, मैं इस दुनिया में रहने के लिए नहीं बना था। कामतीस ने कुछ नहीं कहा, बहुत देर तक वह चुप रही फिर सहसा बोली– जहां तक मेरा सवाल है यदि मेरे पोते-पोती न होते तो मुझमें तो जीने की ताकत ही न होती। फादर क्यूर बिना कुछ बोले उठ खड़े हुए चूंकि रसोई घर में नौकर सो चुके थे वह खुद उन्हें दरवाजे तक छोड़ने आयी और उसने देखा कि लालटेन के प्रकाश में उनकी धीरे-धीरे चलती लम्बी छाया अंधकार में डूबती जा रही है। वह वापस लौटी और उसने अंगीठी बुझा दी फिर उन बहुत सारी बातों के बारे में सोचने लगी जो जवान लोगों को कभी नहीं सूझती।

–गाइ द. मोपासां।

सहयोग

(पंजीकृत स्वयं सेवी संगठन)

पंजीयन क्रमांक– *1800/90-91*

पंजीकृत कार्यालय : 109, सेक्टर-6, वैशाली,

जनपद : गाजियाबाद

पिछले एक दशक से अधिक समय से स्वास्थ्य, शिक्षा, खेल, ग्रामीण विकास, सांस्कृतिक व पर्यावरण जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में सतत् कार्यरत।

प्रभात से पहले घनी अंधेरी रात होती है। हम अंधेरे से निकल रहें हैं। विश्वास रखो कि प्रभात बहुत दूर नहीं है

JHF

जय हिन्द फाउण्डेशन

मुख्यालय, इलाहाबाद

35/36

आज का आनंद
संध्यानंद
Pune's
Two
Leading
Newspapers...
समाचार
और विचार का
एक बेजोड़
अखबार
Aaj Ka Ananad Papers Ltd.
'Aaj Ka Anand' Building, 365/6 Shivajinagar,
Pune-411005, Maharashtra (India)
Phones : 020-5534888, 5533224, Telefax : 91-20-5533224,
E-mail : akanand@giaspn01.vsnl.net.in
Website : www.aajkaananad.com &
www.sandhyanand.com